धरा पर लाए भगवद्भाषा



मूल लेखक (संस्कृत)
- डॉ० एच०आर० विश्वास
अनुवादिका
- डॉ० पूजा मनमोहन उपाध्याय

धरा पर लाए भगवद्भाषा

मूल लेखक (संस्कृत)
डॉ. एच.आर.विश्वास
अखिल भारतीय प्रकाशन प्रमुख, संस्कृत भारती

अनुवादिका
डॉ. पूजा मनमोहन उपाध्याय
सहायक प्राध्यापिका
महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय
उज्जैन (म.प्र.)

प्रकाशक
विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान
संस्कृति भवन, कुरुक्षेत्र – 136118 (हरियाणा)
दूरभाष/फैक्स : 01744-291903, 290515
Website : www.samskritisansthan.org
E-mail : sgp@samskritisansthan.org

प्रकाशक: **विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान**
संस्कृति भवन, कुरुक्षेत्र 136118 (हरियाणा)
दूरभाष/फैक्स : 01744-291903, 290515
Website : www.samskritisansthan.org
E-mail : sgp@samskritisansthan.org

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण : **युगाब्द 5116 (सन् 2014 ई०)**

मूल्य : **70.00 रुपये**

ISBN — ISBN 978-81-929823-9-7

मुद्रक : **क्रेजी ऑफसेट प्रिंटर्स, कुरुक्षेत्र**

प्रकाशकीय

निन्दन्ति नीतिनिपुणाः यदि वा स्तुवन्ति..... ऐसा श्रेष्ठजनों का गुण कहा गया है। अविचलित भाव से, लोक प्रशंसा, लोकापवाद तथा लोक-विरोध को भी सहकर, धैर्य और बहादुरी के साथ उसका सामना करते हुए, अपने लक्ष्य को दृष्टि से ओझल न होने देना, यह किसी उद्देश्य विशेष के निमित्त अपना जीवन समर्पित करने वाले सत्पुरुषों का लक्षण है। विषम परिस्थितियों में भी जो अपनी उस ज़िद, जोश और जुनून को कमज़ोर नहीं पड़ने देते, वे ही जीवन में कुछ 'अलग' कर दिखाते हैं। लक्ष्य प्राप्ति के प्रति उनके इस जुनून के कारण तत्कालीन समाज शायद उन्हें सनकी, ज़िद्दी, अव्यावहारिक या पागल भी कहता हो, तो भी 'ठान लिया तो करके रहेंगे' के भाव से अपने काम में लगे रहते हैं। लीक छोड़ कर चलने वाले, धारा के विपरीत तैरने वाले ऐसे ही न जाने कितने 'पागलों' से इतिहास भरा पड़ा है। सत्य तो यह है कि ऐसे 'पागल' ही इतिहास 'गढ़ते' हैं; समझदार लोग तो केवल इतिहास 'पढ़ते' हैं।

बार-बार राज्य परिवर्तनों के कारण दुनियाँ के अनेक राष्ट्र, बिखर गये; अपनी अस्मिता-संस्कृति-भाषा को भुला बैठे। किन्तु जिनकी आत्मा में जेरुसलेम और हीब्रू भाषा बसी रही, ऐसा यहूदी समाज, अपनी मातृभूमि से दो हजार वर्षों तक दूर रहकर भी अपनी संस्कृति की जड़ों से कटा नहीं। हीब्रू भाषा को पुनर्प्रतिष्ठित करने के इस अभियान को प्रारम्भ करने और गति देने वाले उस ज़िद्दी बेनयहूद की संघर्ष गाथा है **भुवमानीता भगवद्भाषा।** मूलतः संस्कृत में डॉ॰एच॰आर॰विश्वास जी द्वारा लिखित तथा संस्कृत भारती द्वारा प्रकाशित इस कृति का हिन्दी अनुवाद अपने सुधी पाठकों के करकमलों में प्रस्तुत करते हुए मैं स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूँ। जिस प्रेरणादायी कथा को केवल पढ़ा सुना था, किसी दिन उसे पुस्तकाकार-प्रकाशित करने का सौभाग्य मिलेगा, यह कल्पना से परे था; अतः यह सौभाग्य प्रदान करने के लिए मैं आदरणीय डॉ॰ विश्वास जी तथा संस्कृत भारती के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। आदरणीय श्री चमूकृष्ण शास्त्री जी तथा आदरणीय डॉ॰ चाँद किरण जी सलूजा की स्नेहयुक्त प्रेरणा और प्रोत्साहन इस उपक्रम में सहयोगी बने हैं। इन सुहृदजन के प्रति आत्मीयकृतज्ञता।

सामान्यतः अनुवाद किया गया साहित्य कुछ सीमा तक नीरस हो जाता है। शायद शब्दशः अनुवाद करना उसका कारण रहता हो। बहन डॉ॰ पूजा उपाध्याय के अनुवाद में प्रवाहमयता के कारण कथावस्तु की सरसता बनी हुई है। भाषा की प्राञ्जलता बनाए रख कर भी अनुवाद को बोझिल नहीं होने दिया है। मन:पूर्वक किए गए उनके इस परिश्रम के प्रति साधुवाद। बन्धुवर श्रीयुत् श्रीराम आरावकर के प्रोत्साहन से यह कार्य गति ले सका, अतएव उनके प्रति भी आभार।

बहन पूजा जी ने अपने मनोगत में उल्लेख किया है कि अनुवाद कार्य के दौरान बेनयहूद, डेबोरा और बेन्झियोन आदि उन्हें अपने परिवार के सदस्य जैसे प्रतीत होने लगे थे। कथा की प्रभावोत्पादकता का यह चरम है कि पाठक उससे जुड़ जायें। संस्कृत पढ़ने-समझने का अभ्यास जिनको नहीं है, उन्हें भी यह अनूदित पुस्तक **धरा पर लाये भगवद्भाषा** ऐसी ही प्रतीति दे सकी तो लेखक-अनुवादक-प्रकाशक के श्रम का साफल्य होगा। और, बेनयहूद की जिजीविषा और विजिगीषा के विषय में क्या कहूँ? यदि उसका शतांश भी हम अपने जीवन में विकसित कर पायें, समस्त चुनौतियों का सामना करते हुए भी लक्ष्य को दृष्टि से ओझल न होने दें तो वह जीवन की सफलता का मार्ग प्रशस्त करेगा।

आपका प्रतिभाव प्राप्त होगा, इस अपेक्षा के साथ;

– अवनीश भटनागर

सचिव

विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान, कुरुक्षेत्र

मनोगत

चौदह वर्ष पूर्व अखिल भारतीय संस्कृत सम्भाषण प्रशिक्षण वर्ग, नई दिल्ली में प्रथम बार माननीय चमूकृष्णजी शास्त्री के मुख से मैंने हीब्रू भाषा के पुनरुत्थान की कथा सुनी थी। शास्त्रीजी की अभिनय-युक्त, भाव-पूर्ण तथा सम्मोहक भाषण शैली और इस कथा की रोचकता और भावुकता से प्राय: सभी प्रशिक्षणार्थी न केवल प्रभावित थे, अपितु कथा के नायक बेन्हयूद का आदर्श मन-मस्तिष्क में स्थायी रूप से अंकित हो गया था।

माननीय विश्वास जी ने इस कथानक को जब पुस्तक के रूप में लिखा तब पूर्वश्रुत होने के कारण अत्यधिक उत्सुकता से मैंने 2005 में इस पुस्तक को पढ़ा। विवाह के पश्चात् संस्कृत-भारती कार्यालय, भोपाल में ही उस समय मेरा निवास था। आदरणीय विश्वास जी ने इस कथानक को इतनी सहज और रोचक शैली में प्रस्तुत किया है कि मैंने लगभग पाँच-छह दिन में ही इस पुस्तक को पूरा पढ़ लिया।

'भुवमानीता भगवद्भाषा' इस पुस्तक को पढ़ने में जिस आनंद की प्राप्ति नौ वर्ष पहले हुई थी, उसी आनंद को पुन: दोगुने रूप में अनुभूत करने का अवसर दिया माननीय श्रीराम जी आरावकर ने। कुछ माह पूर्व उन्होंने आग्रह किया कि इस पुस्तक का हिंदी भाषा में अनुवाद कर दिया जाए तो यह बहुत लोगों के लिए लाभदायक होगी तथा संस्कृत भाषा के प्रति उन्हें अपने कर्त्तव्य का बोध कराने में समर्थ होगी। संस्कृत भाषा को व्यवहार की भाषा मानना जिन लोगों को असंभव लगता है उन्हें यह पुस्तक असीम संभावनाएँ दिखायेगी।

मेरा सौभाग्य है कि माननीय श्रीराम जी ने इस कार्य के लिए मुझे समर्थ समझा। यह कार्य मेरे लिए बहुत ही आत्मीय रहा, क्योंकि इस कथानक के पात्र बेन्यहूद, डेबोरा और बेन्झियोन जैसे घर के सदस्य के रूप में उन दिनों मेरे साथ यात्रा करते रहे। इस कथा से इतना भावात्मक लगाव हो गया कि डेबोरा की मृत्यु के घटनाक्रम को पढ़ कर मेरी आँखें भी भर आईं। बेन्यहूद के बच्चों की मृत्यु होने पर मन में विचार आते रहे कि यदि सभी बच्चे जीवित होते तो अधिक तीव्र गति से हीब्रू भाषा का प्रसार होता। वे बच्चे अमूल्य सम्पत्ति की तरह लगते हैं।

माननीय विश्वास जी ने इस कथानक को इतना भाव-पूर्ण लिखा है कि उसका अनुवाद करते-करते मैं उन पात्रों से बँध-सी गई थी।

जब से संस्कृत-भारती से मेरा परिचय हुआ और संस्कृत के गौरव को अनुभूत किया तभी से यह निश्चय कर लिया था कि मैं अपने परिवार को संस्कृत-परिवार बनाऊँगी। हमारे घर में आज सभी लोग संस्कृत में वार्तालाप करते हैं। जब मैं इस अनुवाद कार्य का सम्पादन कर रही थी, तब इस कथा के पात्र बेन्यहूद के द्वारा उसके घर में हीब्रू भाषा का वातावरण दूषित न हो पाए, इसके लिए अपने बच्चों, माता और पत्नी के प्रति लिए गए दृढ़ निर्णयों और आदेशों से निश्चित रूप से अपने परिवार में संस्कृत सम्भाषण के प्रति लिया गया मेरा यह संकल्प और अधिक दृढ़ हुआ है।

अनुवाद करते समय मैंने पुस्तक के मूल भावों को उसी प्रकार रखने का प्रयास किया है तथा शब्दों के चयन में भी सावधानी रखी है तथापि यदि कहीं दोष हों तो मैं क्षमा-याचना करती हूँ।

इस आदर्श कथानक का अनुवाद करने का कार्य माननीय श्रीराम जी ने मुझे सौंपा इसके लिए मैं उनके प्रति हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

– डॉ॰ पूजा मनमोहन उपाध्याय

पूर्वाभाष्य

संस्कृत-सम्भाषण आंदोलन के वे आरंभिक दिन थे। ''प्रबल इच्छा शक्ति होने के कारण लगभग दो हजार वर्षों से व्यवहार से दूर जा चुकी हीब्रू भाषा को इज़राइल देश के यहूदियों ने फिर से व्यवहार की भाषा बना दिया।'' ऐसा कभी किसी वरिष्ठ व्यक्ति के मुख से मैंने सुना था। उसके बाद ज्येष्ठ कार्यकर्ताओं के मुख से बार-बार इस विषय को मैंने सुना और कुछ पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों को भी पढ़ा।

फिर एक बार संस्कृत-भारती के तत्कालीन अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्री चमूकृष्ण शास्त्री जी के मुख से हीब्रू पुनर्जीवन अभियान के नेता बेन्हयूद के प्रेरणादायक जीवन-चरित्र को सुना। उन्हीं दिनों 'Tongue of the prophets' नामक पुस्तक भी मैंने पढ़ी, जिसमें बेन्हयूद के जीवन के कार्यों का निरूपण किया गया है। उसी आधार पर कुछ वर्गों में कार्यकर्ताओं को प्रेरणा देने के लिए भाषण भी दिए। बाद में विचार आया कि यदि इस कथानक का संस्कृत में अनुवाद किया जाए तो वह बहुत लोगों के लिए लाभदायक होगा। ''अनुवाद की अपेक्षा विविध स्रोतों से विषय का संग्रह करके स्वतंत्र लेखन करना अधिक श्रेष्ठ है।'' ऐसा स्मरण कराते हुए चमूकृष्ण शास्त्री जी ने उस विषय से सम्बद्ध कुछ पुस्तकें भी दीं। उनके अध्ययन से हीब्रू पुनर्जीवन अभियान का चित्र मन में और अधिक स्पष्ट हो गया। उस आधार पर स्वतंत्र रूप से ही यह 'भुवमानीता भगवद्भाषा' नामक कथानक लिखा गया।

सम्भाषण -संदेश नामक मासिक पत्रिका में पच्चीस अंकों में धारावाहिक रूप से यह कथानक प्रकाशित हुआ। उन दिनों प्रत्येक अंक के लिए पाठकों की असंख्य प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुईं। चेन्नै नगर के एक पाठक-बंधु ने तो सोलह पृष्ठों का एक लेख भी प्रतिक्रिया-स्वरूप भेज दिया।

लम्बे समय से बहुत से बन्धुओं द्वारा ऐसा अनुरोध किया जा रहा था कि यह कथानक पुस्तक के रूप में प्रकाशित होना चाहिए। अतः अब यह पुस्तक तैयार की गई है। इस कथानक के लेखन, परिष्कार, धारावाहिक रूप से प्रकाशन और अब पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने में जिन-जिन लोगों ने सहयोग किया, उन सभी का कृतज्ञतापूर्वक स्मरण करता हूँ।

भाद्रपद पूर्णिमा
28.09.2004

– डॉ. एच. आर. विश्वास

अनुक्रमणिका

पढ़ने से पूर्व

लेबनान्, सीरिया, जॉर्डन, इजिप्ट (मिस्र) इत्यादि देशों और मेडिटेरेनियन समुद्र (भूमध्य सागर) से घिरा हुआ आकार में अत्यंत छोटा देश है इजराइल। यहूदी यहाँ के मूल निवासी हैं। ईसा पूर्व 1000–900 की कालावधि में कुछ राजाओं ने इजराइल देश को साम्राज्य के रूप में स्थापित करने का प्रयत्न किया। विशेषत: उन्हीं में से डेविड नाम के महाराजा ने जेरुसलेम नगर को राजधानी बनाकर इजराइल देश में यहूदी साम्राज्य की स्थापना की थी। उन दिनों में यहूदी संस्कृति विशेष रूप से विकसित हुई। किंतु उसके बाद असीरिया, बेबीलोन, पर्शिया (फारस), ग्रीक (यूनान) और रोम तथा बहुत से अन्य देशों ने इजराइल पर आक्रमण करके वहाँ शासन किया। अंत में यह देश तुर्की साम्राज्य में विलीन हो गया। दूसरों के द्वारा आक्रान्त मातृभूमि को छोड़कर यहूदी लोगों ने संसार के अन्य देशों में जाकर आश्रय प्राप्त किया। वहाँ के लोगों के साथ समरसता स्थापित कर, उसी स्थान की भाषा बोलते हुए, वहीं व्यापार आदि करते हुए अपना जीवन–यापन करने लगे परन्तु सभी के मन में मातृभूमि के प्रति श्रद्धा अवश्य थी।

यहूदी संस्कृति जब पूर्ण रूप से विकसित थी तब इजराइल में हीब्रू ही व्यवहार की भाषा थी। ईसाइयों के 'बाइबिल' नामक पवित्र ग्रंथ के पूर्वार्द्ध (ओल्ड टेस्टामेंट) का अधिकतम हिस्सा हीब्रू भाषा में ही लिखा गया था। यहूदियों की सभी धार्मिक विधियाँ हीब्रू भाषा में ही संपन्न की जाती थीं। काल के प्रवाह के साथ जब यहूदी लोग अन्य देशों में गए तब हीब्रूभाषा केवल धार्मिक विधियों में ही बची रह गई। **इसी कारण यहूदियों के मन में इस प्रकार के भाव उत्पन्न हो गए थे कि हीब्रू भाषा का उपयोग केवल धार्मिक कार्यों के लिए ही किया जाना चाहिए अन्य कार्यों में नहीं। नित्य व्यवहार में पवित्र हीब्रू भाषा का उपयोग पाप है**, ऐसी धारणा उनके समाज में रूढ़ हो गई थी। इसीलिए सार्वजनिक स्थान में यदि कोई हीब्रू भाषा बोलता था तो उसकी गणना

अपराधियों में की जाती थी। देवताओं की भाषा में बात करने का अधिकार हम मनुष्यों को नहीं है, ऐसी उन लोगों की दृढ़ धारणा थी।

किंतु यहूदी संस्कृति के पुनरुत्थान की आकांक्षा रखने वाले कुछ लोगों ने सोचा कि व्यावहारिक भाषा के रूप में हीब्रू भाषा को पुन: जीवित करने से ही यहूदी संस्कृति का पुनरुत्थान सम्भव है। उनमें से एलिसर बेन्हयूद अग्रणी था। उसने इस विषय में बहुत से स्वप्न देखे थे। उन सपनों को साकार करने के लिए उसने अपने जीवन को दाँव पर लगा दिया। उसके इसी साहस की कथा है – **धरा पर लाए भगवद्भाषा।**

हीब्रू भाषा और संस्कृत भाषा के पुनरुत्थान के मार्ग में बहुत सारे समान अंश हैं। सावधानी से इस कथानक का अवलोकन करने पर वे अंश स्पष्ट हो जाते हैं। इस दृष्टि से भी इस कथानक को पढ़ना चाहिए।

रॉबिन्सन क्रूसो

डिंग डांग, डिंग डांग .... !

टन-टन, टन-टन ....!

प्रार्थना मंदिर का बड़ा घण्टा बज रहा था। इसी के बीच लोगों के पैरों की आवाज आ रही थी। दोबारा से बजते हुए घण्टे की ध्वनि में उस बालक ने धीरे-धीरे नेत्रों को खोला। सामने उपस्थित दस से अधिक प्रौढ़ लोगों को देखते हुए उसका मुँह अपने आप ही संकुचित हो गया। तब तक कुछ लोग पास आ गए।

"तुम कौन हो?" उनमें से किसी ने पूछा।

"मैं कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ?" जैसे स्वयं से पूछते हुए उस बालक ने मन में खुद से भी प्रश्न किया। उसके मन में अतीत के पृष्ठ उलटने लगे।

●●●●

रूस देश के लियुतेनिया प्रदेश के लुज़्की नगर में लीब्पर्लमन् परिवार में 13 वर्ष पूर्व एलिसर नाम के उस बालक का जन्म हुआ था। उन दिनों रूस देश में ज़ार का शासन था जिसमें प्रत्येक परिवार में पहले पुत्र को छोड़कर अन्य सभी पुरुष संतानों को सेना में प्रविष्ट होकर सेवा करनी होती थी। इसलिए इस बालक के चतुर पिता ने उपाय सोचकर सरकारी अभिलेख में कहीं भी इस पुत्र के जन्म का उल्लेख ही नहीं किया। इसलिए एलिसर को 'पर्लमन्' उपनाम छोड़कर अन्य परिवार का 'एलिनाफ' उपनाम अपने नाम के साथ लगाना पड़ा।

अपने माता-पिता की पाँच संतानों में असाधारण एलिसर को आरंभ से ही पुस्तकें प्रिय थीं। उसके पुस्तक प्रेम को देखकर उसके विद्यालय के शिक्षक ने कभी उसकी माँ से कहा था – "इसकी बुद्धि अत्यन्त तीक्ष्ण है, यदि यह अच्छी तरह से अध्ययन करेगा तो भविष्य में यह असाधारण बनेगा।"

शिक्षक की बातों से एलिसर की माता फेगा खिन्न थी क्योंकि स्वयं के परिवार की निर्धनता को वह जानती थी। पति भी उस विषय में निरासक्त ही था। ऐसा है, तो इस प्रतिभावान् पुत्र का शिक्षण कैसे होगा, यह सोचते हुए फेगा को

अपने भाई का स्मरण हुआ। पास में ही डेविड–वूल्फसन् नामक उसका भाई निवास करता था जो धनिक और धार्मिक था। फेगा की प्रार्थना स्वीकार करके वह एलिसर की शिक्षा की व्यवस्था करने के लिए उसे अपने घर ले गया।

कुछ समय बाद ही ऐलिसर के पिता का देहान्त हो गया। माता ने अन्य पुरुष के साथ विवाह कर लिया किंतु उसका विवाह विच्छेद हो गया। उसका फिर तीसरे पुरुष के साथ विवाह हुआ किंतु उसके साथ भी विवाह विच्छेद हो गया।

एक वर्ष तक एलिसर मामा के घर सुख से रहा। तेरह वर्ष का होने पर इसका बार–मित्ज़्ब–संस्कार (उपनयन संस्कार के समान) संपन्न किया गया। तब मामा ने उससे कहा – ''बेटा! आगे के अध्ययन के लिए तुम्हें पोलोट्स्कनगर जाना होगा। इसके बाद मेरी सहायता की प्रतीक्षा नहीं करना। अपने प्रयत्न से ही आगे ज्ञान प्राप्त करना।''

मामा की आज्ञा को मानने के अलावा एलिसर के सामने अन्य कोई मार्ग नहीं था। वह दूसरे दिन ही पोलोट्स्कनगर पहुँच गया। वहाँ किसी धर्मशाला में रहने लगा और एक ऐसे विद्यालय में प्रवेश ले लिया जहाँ धार्मिक शिक्षण ही चलता था।

एलिसर को विद्यालय में डेविड नाम का नया मित्र मिला। वह उसको एक दिन जोसेफ ब्लूकर के घर ले गया। ब्लूकर यहूदी धर्मगुरु था, किंतु आधुनिक दृष्टिकोण वाला तथा अध्ययनशील था। उसका विशाल पुस्तकालय भी था। उसके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर एलिसर उसका शिष्य बन गया।

ब्लूकर को हीब्रू भाषा से अत्यधिक प्रेम था। वह उस भाषा को न केवल धार्मिक विधियों के लिए उपयोगी मानता था, अपितु नित्य व्यवहार में भी उसका उपयोग करना चाहता था। किंतु लोग उसे तब अपराध समझते थे। ब्लूकर ने एलिसर को हीब्रू भाषा सिखाना शुरू किया। कुछ दिनों में ही एलिसर हीब्रू भाषा पढ़ने में समर्थ हो गया।

एक बार अपने हाथों से लिखी एक पुस्तक एलिसर को देते हुए ब्लूकर ने कहा, ''एकांत में इसे पढ़ना!'' एलिसर ने पुस्तक का नाम पढ़ा। वह था – ''रॉबिन्सन क्रूसो।''

हीब्रू भाषा में लिखित उस शीर्षक को पढ़कर एलिसर के आनंद की सीमा नहीं थी। पूजा मात्र में उपयोग होने वाली भाषा में राबिन्सन क्रूसो नामक नाविक की साहसयात्रा का कथा रूप में वर्णन था। 'क्या भाषा इसलिए भी उपयोग की जा सकती है', एलिसर ने सोचा। उस दिन एलिसर नहीं जानता था कि यही पुस्तक उसके जीवन में महान् परिवर्तन का कारण बनेगी।

पोलोट्स्क नगर के एक प्रार्थना मंदिर में एलिसर का निवास था। वह धार्मिक शिक्षण प्राप्त कर रहा था इसलिए उसे निःशुल्क आवास व्यवस्था प्राप्त हो गई थी। ब्लूकर के घर से अपने निवास में आ कर एलिसर ने सबसे पहले उस पुस्तक को छुपा कर रखा, जिससे वह दूसरे लोगों की नज़र में न आए। जब उसे विश्वास हो गया कि कोई नहीं देख रहा है तब एकान्त में बैठकर अतिप्रिय मिठाई के समान उस पुस्तक के एक-एक अध्याय का उसने आस्वादन किया।

कुछ दिन ही बीते थे कि उस प्रार्थना मंदिर के व्यवस्थापक को किसी प्रकार ज्ञात हो गया कि यह बालक हीब्रू भाषा में लिखित 'रॉबिन्सन क्रूसो' की कथा पढ़ता है। इस घोर अपराध के दण्डस्वरूप उसे उस दिन रात को भोजन प्राप्त नहीं हुआ। पर उस रात में भी उस पुस्तक को पढ़ने का मोह छोड़ने में असमर्थ एलिसर एकान्त में उस पुस्तक को पढ़कर ही सोया।

किसी के आने की आहट सुनकर वह जाग गया। जल्दी से उस पुस्तक को अपने बिस्तर के नीचे छिपा कर सोने का अभिनय करने लगा। दरवाजे को खटखटाते हुए उसके मामा ने अंदर प्रवेश किया। अत्यंत सूक्ष्म दृष्टि से निरीक्षण करते हुए उसने भानजे की कपटनिद्रा को जान लिया। इसी बीच उसने बिस्तर के नीचे छिपाई हुई पुस्तक भी निकाल ली। पुस्तक लेकर मोमबत्ती के प्रकाश में उसने उस पुस्तक का नाम जोर से पढ़ा – ''रॉबिन्सन क्रूसो''। नाम पढ़कर वह चिल्लाया – ''मैंने जो सुना था वह सत्य ही है यह मैं जान गया हूँ। मैंने तुम्हें धार्मिक शिक्षण के लिए भेजा था परन्तु तुम अधार्मिक कार्य कर रहे हो। पवित्र भाषा में लिखा गया अपवित्र कथानक पढ़ रहे हो। देव भाषा को अपवित्र करने वाले तुम्हारे लिए आज के बाद मेरे पास कोई स्थान नहीं है। उठो, अपना सामान लेकर अभी यहाँ से निकल जाओ।''

विवश होकर एलिसर अपने कपड़े लेकर वहाँ से चला गया। पर कहाँ जाना है यह वह नहीं जानता था। कभी उसने सुना था कि पास में ग्लुबोकिया नाम का नगर है। उसी दिशा में वह चल दिया। रात को उसे भोजन भी नहीं मिला था इसलिए उसके पैरों में शक्ति भी नहीं थी। फिर भी किसी प्रकार वह धीरे-धीरे मध्य रात्रि के समय ग्लुबोकिया नगर पहुँच गया। उस नगर में उसका कोई भी परिचित नहीं था किंतु वह जानता था कि प्रार्थना मंदिर के दरवाजे तो चौबीस घण्टे खुले ही रहते हैं। उसने एक प्रार्थना मंदिर में पहुँचकर अंदर प्रवेश किया। वहाँ दीपक का धीमा प्रकाश फैला था। अंदर जाकर एक बैंच के ऊपर कराहते हुए वह गिर गया। शीघ्र ही उसे गहरी नींद आ गई।

●●●●

"तुम कौन हो? कहाँ से आए हो?" जागे हुए उस बालक से सुबह की प्रार्थना में सम्मिलित लोगों ने पूछा। रोते हुए एलिसर ने संक्षेप में अपनी कथा कही। उन उपस्थित लोगों में से एक लम्बे और मध्यम आयु के पुरुष ने एलिसर के मन को बहुत आकर्षित किया। सब सुनकर उस पुरुष ने एलिसर से कहा – "मैं श्लोमो योनस हूँ। मेरा परिवार बहुत बड़ा है। यदि तुम्हें स्वीकार हो तो तुम भी मेरे परिवार के सदस्यों में से एक हो सकते हो.....।" एलिसर ने सहमति में सिर हिला दिया और उसके पीछे चल दिया। योनस ग्लुबोकिया नगर का प्रतिष्ठित और धनी नागरिक था। उसका मदिरा बनाने का व्यवसाय था। उद्यानों से सुसज्जित विशाल घर था। योनस के घर में एक विशाल कमरे में बने हुए ग्रंथालय को देखकर एलिसर आश्चर्यचकित हो गया। आलमारियों में सैंकड़ों पुस्तकें व्यवस्थित रूप से रखी हुईं थीं। एक-एक अलमारी को आश्चर्य से खोलकर देखते हुए एलिसर का चेहरा मुरझा गया। यह देखकर योनस ने पूछा, "बेटा! क्या हुआ.....?"

"ये पुस्तकें किस भाषा में लिखी हुई हैं? न तो ये यिड्डिश भाषा में हैं और न ही हीब्रू भाषा में। मुझे तो ये दो ही भाषाएँ पढ़नी आती हैं।" ऐलिसर ने कहा।

योनस ने कहा, " ये पुस्तकें जर्मन, फ्रेंच और रूसी भाषा में लिखी गई हैं। यदि तुम चाहो तो वे भाषाएँ भी सीख सकते हो।"

योनस की पत्नी भी उसी के समान सहृदय थी। उनके चार पुत्रियाँ और दो पुत्र थे। नाश्ते के समय एलिसर का परिचय उनकी बड़ी बेटी डेबोरा के साथ हुआ। वह अठारह वर्ष की थी। वह एलिसर की सारी कथा सुनकर बोली – "यदि आप चाहें तो मैं आपको वे सारी भाषाएँ सिखा सकती हूँ।"

एलिसर ने प्रसन्नता से इस बात को स्वीकार कर लिया। "तो विलम्ब क्यों? शुभ कार्य जल्दी करना चाहिए। अभी से ही शिक्षण आरंभ हो जाये" ऐसा कहती हुई डेबोरा उसे पुस्तकालय में ले गई। योनस की छोटी पुत्री पोला उस समय एलिसर को विस्मय से देख रही थी।

डेबोरा निःसन्देह उत्तम भाषा शिक्षिका थी। उसने एलिसर को अत्यंत प्रेम से जर्मन, फ्रेंच और रूसी भाषा सिखाई।

धीरे-धीरे एक-एक शब्द का उच्चारण करके, उच्चारण के प्रकारों को दिखाकर, एलिसर के मुख से उच्चारण करवा कर, उसके अर्थों की व्याख्या करते हुए पढ़ाने वाली डेबोरा के प्रशिक्षण और अपेक्षा को एलिसर ने व्यर्थ नहीं

जाने दिया। निरंतर अभ्यास से दिन-प्रतिदिन प्रगति करते हुए एलिसर ने उसे अपने परिश्रम से संतुष्ट रखा।

योनस पैदल टहलने के लिए जाते समय बीच-बीच में एलिसर को भी साथ ले जाता था। इसी प्रकार एक दिन जाते समय योनस ने एलिसर से कहा, ''बेटा! भाषा सीखने में आप अत्यधिक कुशल हैं, ऐसा मैंने सुना है। यह जानकर मुझे बहुत संतोष हुआ। उन सभी भाषाओं को आप ठीक से सीखिये। किंतु बेटा, कभी भी हीब्रू भाषा को मत भूलना। कितनी सुमधुर भाषा है वह! किंतु आज वह केवल प्रार्थना के लिए उपयोग की जाती है। पवित्र यहूदी साहित्य की मान रक्षा उस भाषा के द्वारा की जाती है, पर मैं चाहता हूँ कि वह नित्य-व्यवहार की भाषा के रूप में प्रयोग की जाए। वचन दो कि अपने जीवन में कभी हीब्रू भाषा को नहीं भूलोगे।'' एलिसर ने अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की।

दो वर्ष तक एलिसर डेबोरा से भाषाएँ सीखता रहा। इस बीच उसने जर्मन, फ्रेंच और रूसी, तीनों भाषाओं में अपनी शिक्षिका के समान सामर्थ्य प्राप्त कर लिया। दो वर्षों में एलिसर की अध्ययन के प्रति आसक्ति और परिश्रम को देखकर योनस को विश्वास हो गया कि उचित अवसर प्राप्त होने पर यह बालक महान कार्य करेगा। इसलिए उसके आगे पढ़ने की व्यवस्था करनी चाहिए। ड्यूनबर्ग नगर जाकर वहाँ एलिसर अपनी आगे की पढ़ाई करे, ऐसा प्रबंध किया गया।

एलिसर का ड्यूनबर्ग जाने का दिन भी आ गया। उस दिन भी डेबोरा ने प्रतिदिन के समान एलिसर को पढ़ाया। पाठ समाप्त होने पर उसका मन खिन्न था। एलिसर की भी वैसी ही स्थिति थी। फिर भी एलिसर ने कहा, ''डेबोरा, आपके पढ़ाने से ही मैं आज कोई भी वाक्य पाँच भाषाओं में बोल सकता हूँ ....।'' डेबोरा ने कहा – ''हाँ, मैं जानती हूँ। किंतु यहाँ से विदा लेते समय आप इसके अतिरिक्त मुझसे कुछ और कहना चाहते हो क्या ....?''

''सच कहती हो डेबोरे! यहाँ से जाते समय मेरी एक ही चिंता है कि मैं कैसे आपके बिना जीवित रहूँगा? ....।''

डेबोरा ने कहा – ''इसका अर्थ है कि आप भी मुझे चाहते हैं। चलो, अंततः यह बात आपने अपने मुँह से तो कही। प्रिय एलिसर! मुझे वचन दो कि जहाँ कहीं भी रहोगे मेरा स्मरण करते रहोगे।''

एलिसर ने यिड्डिश भाषा में कहा, ''मैं वैसा ही वचन देता हूँ।''

डेबोरा ने कहा – "नहीं मित्र! यह वचन मैं हीब्रू भाषा में ही सुनना चाहती हूँ। उस पवित्र भाषा में ही इस पवित्र जीवन शपथ को हम दोनों को ग्रहण करना चाहिए। तभी मुझे संतुष्टि होगी।"

जब एलिसर हीब्रू भाषा में ये बातें कह रहा था, कहीं तब तक अंदर आती हुई डेबोरा की माता बोली – "बेटा! जल्दी करो। आपको जाने के पहले भोजन भी करना है।"

भोजन के बाद डेबोरा स्वयं के द्वारा बनायी गयी ऊन की शॉल लाकर एलिसर के कन्धे पर रखकर बोली, "ठंड से यह तुम्हारी रक्षा करेगी और इसी प्रकार जब-जब आप इसको देखोगे तब-तब मेरा स्मरण करोगे।" एलिसर उन लोगों से विदा ले कर ड्यूनबर्ग चला गया।

●●●●

ड्यूनबर्ग नगर में किराए से एक कमरा लेकर एलिसर ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में पढ़ना शुरू कर दिया। उसे छात्रवृत्ति भी मिल गई जिससे शिक्षण के लिए आवश्यक पुस्तकें खरीदने में वह समर्थ हो सका। ड्यूनबर्ग नगर में बहुत से यहूदी परिवार थे। उनके संपर्क और संगति ने एलिसर के ज्ञान क्षितिज का विस्तार कर दिया। विशेष रूप से विट्नस्की नाम के युवक ने बार-बार एलिसर के साथ चिंतन और चर्चा करते हुए एलिसर की चिंतन शक्ति का विस्तार किया।

एलिसर ने सोचा, "इजराइल देश के मूल निवासी हम यहूदी अनेक देशों में निवास करते हुए बिखरे हुए हैं। हमारा देश अभी गुलाम है। हमारी भाषा हीब्रू व्यवहार से दूर हो गई है। इसलिए हमारी यहूदी संस्कृति प्रायः नष्ट ही हो गई है। हम सभी यहूदियों को संघटित होना चाहिए। अपने देश को स्वतंत्र कराना चाहिए। जैसे बल्गारिया देश के लोगों ने अभी स्वतन्त्रता प्राप्त की है। भाषा को पुनः व्यवहार में प्रतिष्ठापित करना चाहिए जिससे हमारी संस्कृति की रक्षा हो सके। मेरे जीवन में इससे महत्त्वपूर्ण कार्य अन्य कोई नहीं हो सकता।"

ड्यूनबर्ग नगर में एलिसर के जीवन का लक्ष्य उसे स्पष्ट हो गया। उसने निश्चित किया कि इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए ही जीना है। उसने यह भी निश्चित किया कि उसकी तैयारी करने के लिए पेरिस नगर ही उचित है क्योंकि पेरिस नगर बुद्धिजीवियों का केन्द्र था। उसने निश्चित किया कि पेरिस में रहकर चिकित्सकीय शिक्षण भी प्राप्त करना चाहिए, जिससे भविष्य में योग्य जीवन तथा सम्मानित सामाजिक स्थिति को प्राप्त किया जा सके।

कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न

सुंदर पेरिस नगर के चिकित्सा महाविद्यालय में प्रवेश और वहाँ अध्ययन तो एलिसर के लिए निमित्त मात्र ही था। वह तो उस नगर में रहने वाले, विभिन्न कारणों से वहाँ आकर मिलने वाले बुद्धिजीवियों, पत्रकारों, नीति-निर्माण करने वालों और प्रतिष्ठित लोगों के दर्शन में, उनसे परिचय प्राप्त करने में तथा उनके साथ इजराइल देश और हीब्रू भाषा के नवोत्थान के विषय में, अपने सपनों के आदान-प्रदान में ही अधिकाधिक समय बिताता था। देश और दुनियाँ में होने वाले हर प्रकार के परिवर्तन का वह अत्यंत जागरुकता से परिशीलन करता था। उसका अधिकतर समय समाचारपत्र पढ़ने में व्यतीत होता था। इतिहास और राजनीति से सम्बन्धित बहुत सारे ग्रंथों को उसने पढ़ा। अवसर मिलने पर वह डेबोरा को पत्र भी लिखता था जिसमें वह अपने सपनों का आकर्षक रूप से कुछ इस प्रकार निरूपण करता था, ''इजराइल देश की भाषा हीब्रू ही होनी चाहिए। किंतु विद्वानों की हीब्रू भाषा नहीं और न ही ग्रंथों की हीब्रू भाषा अपितु सामान्य लोगों के द्वारा नित्य जीवन में व्यवहार योग्य सरल हीब्रू भाषा होनी चाहिए। मैं जानता हूँ कि हीब्रू भाषा को दैनिक व्यवहार में लाना सरल नहीं है किंतु फिर भी प्रयास तो करना ही चाहिए। मैं इसी कार्य के लिए जीवन लगाऊँगा।''

उन्हीं दिनों एलिसर बीमार हो गया। पहले भी उसे खाँसी तो थी ही। वही खाँसी अब दुगुनी हो गई। कभी-कभी तो खाँसी के साथ खून भी निकलता था। उसने चिकित्सक से परामर्श किया। परीक्षण करके डॉक्टर ने कहा - ''स्वास्थ्य के विषय में आपको अधिक सावधानी रखनी चाहिए। आप क्षय रोग (टी.बी.) से पीड़ित हैं। स्वास्थ्य की रक्षा के लिए आपको कुछ समय के लिए पेरिस नगर छोड़कर कहीं और रहना चाहिए।''

एलिसर ने समझ लिया कि उसकी आयु कम है। मेरे जीवन के दिन कम हैं किंतु करने वाले कार्य पर्वत के समान हैं। इसलिए एक - एक क्षण भी अमूल्य जानकर मुझे जीवन जीना चाहिए।

●●●●

उस दिन एलिसर के मन में बहुत आनंद और संतुष्टि थी जब उसने एक विशिष्ट लेख को पूर्ण किया था। उसके लिए उसने विस्तृत अध्ययन किया था और बहुत से प्रमाण भी इकट्ठा किये थे। उस लेख में उसने यहूदियों का इतिहास, श्रेष्ठ परम्परा, इजराइल देश के लिए स्वतन्त्रता प्राप्ति की आवश्यकता, हीब्रू भाषा का पुनर्जीवन इत्यादि तथ्यों को उत्तम विधि से प्रतिपादित किया था। उसका दृढ़ विश्वास था कि यदि लेख किसी पत्रिका में प्रकाशित होगा और यहूदी इसे पढ़ेंगे तो बहुत श्रेष्ठ परिणाम होगा। 'हानाग्गिड्' नामक पत्रिका में अपना लेख भेजकर उस दिन से उसने लेख प्रकाशित होने के क्षण गिनने शुरू कर दिये। प्रतीक्षा में बैठे हुए एलिसर को भोजन भी अच्छा नहीं लग रहा था। दो दिन के बाद प्रत्येक घंटे अपने मकान-मालिक के घर जाकर वह पूछता, "मेरे लिए कोई पत्र आया है क्या?" दो दिन के बाद उसके नाम से एक पत्र आया। मकान-मालिक के पास से पत्र को झपटकर एलिसर अपने कमरे की तरफ दौड़ा। किंतु उस पत्र को पढ़कर एलिसर का शरीर कटे हुए केले के पेड़ के समान बिस्तर में गिर गया। निराशा से वह मृत के समान हो गया। उस पत्र में लिखा था, "खेद के साथ सूचित किया जाता है कि आपका लेख प्रकाशन योग्य नहीं है।" इस पत्र ने एलिसर के सभी सपनों को धूल में मिला दिया था।

दूसरे दिन एलिसर से मिलने आये उसके मित्र तहशिनकोव को पिछले दिन के समाचार का पता लगा। एलिसर के हितैषी तहशिनकोव ने उसमें फिर से उत्साह भरा। उसने कहा, "मित्र! अन्य पत्रिकाएँ भी हैं। आपका यह महत्त्वपूर्ण लेख कोई पत्रिका तो प्रकाशित करेगी ही। प्रयत्न तो अवश्य करना चाहिए। उन पत्रिकाओं को भी यह लेख भेज कर देखिए।" तहशिनकोव के सुझाव के अनुसार एलिसर ने अन्य पत्रिकाओं में भी लेख भेजा। फिर से प्रतीक्षा शुरू हो गई।

वियेना नगर से प्रकाशित होने वाली 'हर्षहार' नामक पत्रिका से प्राप्त उत्तर यद्यपि अत्यंत संक्षिप्त था तथापि उसने एलिसर को आनंद के सागर में डुबो दिया। उसमें लिखा था, "आपका लेख प्रकाशन के लिए स्वीकृत कर लिया गया है किंतु उसका शीर्षक बदल दिया जाएगा। 'ज्वलन्त समस्या' के स्थान पर 'महत्त्वपूर्ण प्रश्न' इस शीर्षक से वह लेख प्रकाशित किया जाएगा।"

उस पत्र को पढ़कर एलिसर के आनंद की सीमा ही नहीं थी। उस पत्र ने उसके जीवन में चेतना ला दी। कुछ दिनों के बाद हर्षहार पत्रिका में एलिसर का वह ऐतिहासिक लेख प्रकाशित हुआ। उसमें एलिसर ने अत्यंत स्पष्ट शब्दों में प्रतिपादित किया था कि संसार के सभी भागों में बिखरे हुए यहूदियों का अपने इजराइल देश में लौटकर वहाँ नए साम्राज्य का निर्माण ही यहूदी संस्कृति की रक्षा

का एकमात्र उपाय है। इजराइल देश की देवभूमि में हम स्वतन्त्रता से जियेंगे। खुद का अनाज खुद ही पैदा करेंगे, इसलिए सभी यहूदी निर्णय करें और स्वदेश आएँ। वहाँ अपनी शक्ति के अनुसार भूमि खरीदें और खेती शुरू करें। इस प्रकार थोड़ी-थोड़ी भूमि खरीद कर वहाँ की पूरी भूमि को अपनी बना लें। स्वतन्त्र इजराइल देश में अपनी प्राचीन संस्कृति फिर विकसित हो जाएगी।

लेख के अंत में लेखक का नाम प्रकाशित था – **'बेन्यहूद'**। उस नाम को पढ़कर आश्चर्य प्रकट करने वाली मित्र से एलिसर ने कहा, ''हाँ! यही मेरा उचित नाम है। यह तो पूरी तरह से हीब्रू भाषीय नाम है। इसका अर्थ है 'यहूद का पुत्र'। परमपिता यहूद का पुत्र मैं हूँ ही इसलिए यह नाम सार्थक ही है।''

●●●●

एलिसर की बीमारी फिर बढ़ गई। उसने जिस चिकित्सक से परामर्श किया था, उसने कहा, ''पहले भी मैंने कहा था कि आपको कुछ समय के लिए पेरिस छोड़कर अल्जीर जाना चाहिए। वहाँ का वातावरण ही आपका स्वास्थ्य ठीक करेगा। यह आपको जल्दी से जल्दी करना चाहिए अन्यथा आगे आपको पछताना पड़ेगा।''

एलिसर के पास इस प्रकार आराम के लिए जाने हेतु धन ही नहीं था फिर भी परिस्थिति की गम्भीरता को जानकर उसके मित्रों ने उसकी सहायता की। वहाँ से धन प्राप्त कर एलिसर इच्छा न होने पर भी अल्जीर चला गया।

एलिसर अल्जीर तो आराम के लिए आया था। वहाँ उसने भ्रमण आदि कम करके अध्ययन में ही मन स्थिर किया। गम्भीर अध्ययन से उसके चिंतन का विस्तार हुआ, वैचारिक आधार और भी अधिक स्पष्ट हो गया। वह सदैव विचार मग्न रहता कि विश्व के विभिन्न भागों में निवास कर रहे हम यहूदियों ने आज स्वयं की भाषा को भुला ही दिया। एक समय यह हीब्रू भाषा हमारी व्यवहार की भाषा थी। आज हम जहाँ रह रहे हैं, उसी देश की भाषा में व्यवहार कर रहे हैं। सत्तर से अधिक भाषाओं में व्यवहार करने वाले यहूदियों की सबकी सांझी अपनी भाषा तो कोई भी नहीं है और वह हीब्रू भाषा के अतिरिक्त कोई अन्य भाषा हो भी नहीं सकती। यद्यपि हीब्रू सरल और मधुर भाषा है तथापि दो हजार वर्षों से वह व्यवहार से दूर चली गई है। पूजा इत्यादि धार्मिक विधियों में ही केवल उसका उपयोग होता है। नित्य व्यवहार में उस भाषा का प्रयोग करना सम्भव है, ऐसा लोग न तो स्वीकार करते हैं और न ही विश्वास करते हैं। इसके अतिरिक्त हीब्रू भाषा में आधुनिक व्यावहारिक शब्द नहीं हैं इसलिए प्राचीन ग्रन्थों का अध्ययन करके उनसे शब्द प्राप्त करना चाहिए। प्रतिदिन नई आविष्कार होने

वाली वस्तुओं के लिए हीब्रू भाषा में नए शब्दों की रचना करनी चाहिए। शब्दनिर्माण का सामर्थ्य तो हीब्रू भाषा में है ही अत: मुझे शोधकर्ता बनना चाहिए। हीब्रू भाषा के शब्दकोश का निर्माता बनना चाहिए।

एलिसर जब पेरिस नगर लौटा तब तक उसके 'महत्त्वपूर्ण प्रश्न' लेख को अत्यंत लोकप्रियता प्राप्त हो चुकी थी। अनेक पत्रिकाओं में वह लेख अनेक बार प्रकाशित हो चुका था इसलिए यहूदी समुदाय में वह चर्चा का विषय बन चुका था। किंतु एलिसर के विचार से बहुत लोगों की सहमति नहीं थी अपितु विरोध ही था। विभिन्न देशों में निवास करने वाले यहूदियों में से बहुत से लोगों की इच्छा इजराइल पुन: जाने की अपेक्षा जिस देश में निवास कर रहे हैं उसी देश के देशवासियों के साथ सामञ्जस्यपूर्वक जीवन जीने की थी।

एलिसर ने अपने पक्ष को सुदृढ़ बनाने तथा अपने विचार की व्याख्या करने के लिए अन्य बहुत सारे लेख लिखकर प्रकाशित कराये जिनके कारण यहूदी समुदाय में विचार मंथन शुरू हो गया। एक दिन एलिसर ने किसी को कहते हुए सुना, ''इस एलिसर का यह कैसा कपट है कि वह अन्य यहूदियों से तो इजराइल देश जाने के लिए अनुरोध करता है लेकिन स्वयं सुन्दर पेरिस नगर में रहकर सुख भोग रहा है।'' इस बात ने एलिसर को अत्यधिक दु:खी किया। आत्मावलोकन करके उसने शीघ्र निर्णय किया, ''हाँ। मुझे स्वयं सर्वप्रथम इजराइल देश जाना चाहिए। वहाँ निवास करने वाले भाइयों के बीच रहकर ही मुझे कार्य बढ़ाना चाहिए। हीब्रू भाषा को पुन: जीवित करना चाहिए।''

एक दिन पेरिस में चिकित्सकीय शिक्षण को आधे में ही छोड़कर, आँखों में अनेक सपने संजोकर एलिसर फिलिस्तीन नगर चल दिया।

●●●●

योनस इस बात से अनभिज्ञ नहीं था कि एलिसर उसकी पुत्री डेबोरा से प्रेम करता है। योनस का इस सम्बन्ध में कोई विरोध भी नहीं था क्योंकि एलिसर की सत्पात्रता में कोई संशय ही नहीं था। परन्तु वह शिक्षा पूरी कर चिकित्सक के रूप में समाज में प्रतिष्ठित हो जाए तब उसका और डेबोरा का विवाह हो, ऐसा उसका विचार था। इस बीच उसने सुना कि एलिसर डॉक्टरी की पढ़ाई बीच में ही छोड़कर पेरिस से इजराइल जा रहा है। एलिसर ने एक पत्र लिखकर योनस से निवेदन किया, ''इन दिनों मेरा स्वास्थ्य खराब होता जा रहा है। डॉक्टर का भी कहना है कि मैं बहुत समय तक जीवित नहीं रहूँगा। इसलिए अपने शेष जीवन को सार्थक करने के लिए शीघ्र ही स्वदेश जाऊँगा। इस बात में कोई संशय नहीं है कि डेबोरा मुझसे अधिक योग्य पति प्राप्त कर सकती है। फिर भी, यदि ऐसी

स्थिति में भी वह जीवनयात्रा में मेरी सहगामिनी बनना चाहती है तो शीघ्र ही वियेना नगर आ जाए। वहाँ से हम मिलकर इजराइल चले जाएँगे।''

उसका पत्र पढ़कर योनस का परिवार विमूढ़ हो गया। तब डेबोरा ने घोषणा की, ''पिताजी! एलिसर की स्थिति कैसी भी हो, वह कितने भी कम दिन जीवित रहे, वह ही मेरा पति है। मैं उसी के साथ विवाह करूँगी। यह मेरा अंतिम निर्णय है इसलिए शीघ्र ही मुझे वियेना भेजने की व्यवस्था कीजिए।''

वियेना आस्ट्रिया देश की राजधानी थी। वहाँ जाने के लिए पासपोर्ट इत्यादि की आवश्यकता थी। अभी वह सब प्राप्त करने का समय नहीं था इसलिए गुप्त रूप से किसी भी प्रकार डेबोरा को वहाँ तक पहुँचाना है, ऐसा योनस ने अपने भाई को सूचित किया। हर्षहार पत्रिका के सम्पादक के अतिरिक्त वियेना में एलिसर का कोई भी परिचित नहीं था। उसी ने एलिसर का प्रथम लेख प्रकाशित किया था। एलिसर ने निश्चित किया कि उसका दर्शन तो करना ही चाहिए। इसलिए वियेना नगर जाकर एक वसतिगृह में किराए से एक कमरा लेकर एलिसर हर्षहार पत्रिका के कार्यालय गया। सम्पादक ने एलिसर का हार्दिक स्वागत किया। वह भी इजराइल देश की स्वतन्त्रता और पुनर्निर्माण चाहता था इसलिए समान आचार-विचार वाले उन लोगों में शीघ्र ही आत्मीयता हो गई। उसने कहा, ''आपके लेख का इस समय बहुत प्रभाव दिखाई देता है। अनेक यहूदी इजराइल जाने का विचार कर रहे हैं।'' बहुत देर तक वे दोनों उसी विषय में वार्तालाप करते रहे। सम्पादक ने एलिसर से प्रार्थना की कि वह आगे भी उसकी पत्रिका के लिए लेख लिखता रहे।

वियेना नगर में एलिसर के दो कार्य थे, हर्षहार पत्रिका के सम्पादक से मिलना तथा डेबोरा के लिए कुछ दिनों तक प्रतीक्षा करना। स्वयं की अस्वस्थता, आर्थिक समस्या और उन सबके बीच हाथ में लिया हुआ यह कठिन कार्य, इन सब बातों का जब एलिसर मन में आकलन करता तब उसे डेबोरो का वहाँ आना असम्भव सा लगता। किन्तु एलिसर के अन्तर्मन में डेबोरा के आगमन को लेकर एक आशा की किरण अवश्य थी। इसलिए ''वियेना में ही किसी निवास गृह में रह रहा हूँ'' ऐसी सूचना एलिसर ने योनस को दे दी। डेबोरो के आगमन के विषय में कोई संदेश निवासगृह में आया होगा, इसी आशा में एलिसर वहाँ गया किन्तु निराश हो गया। उसके बाद खिन्न मन से वह कमरे में बैठ गया। एक घण्टा ही बीता होगा कि दरवाजे पर आहट हुई। जब एलिसर ने दरवाजा खोला तो उसे स्वयं के नेत्रों पर विश्वास नहीं हो रहा था क्योंकि दरवाजे पर उसकी स्वप्नसुंदरी डेबोरा खड़ी थी। दोनों के नेत्रों से आनंद के अश्रु प्रवाहित हो उठे। बहुत देर तक

दोनों आलिंगनबद्ध खड़े रहे। इसके बाद घण्टों तक बीच में बीते समय और एक-दूसरे की कुशलता के बारे में बात करते रहे।

आगे के पाँच-छह दिनों तक वे दोनों हाथ पकड़कर वियेना नगर की गलियों में घूमते रहे। दोनों के उत्साह और उल्लास की सीमा नहीं थी किन्तु इसी बीच उन्हें ज्ञात हुआ कि वियेना में दोनों का विवाह सम्भव नहीं है क्योंकि वियेना में विवाह के लिए दोनों का जन्म प्रमाणपत्र तथा अन्य प्रमाणपत्र अनिवार्य थे। दोनों के पास न तो वे प्रमाण-पत्र थे और न ही उनकी शीघ्र प्राप्ति सम्भव थी।

उन्हें पता लगा कि तुर्की में ऐसी समस्या नहीं है। वहाँ निर्विघ्न विवाह हो सकता है। इसलिए उन दोनों ने कान्स्टान्टिनोपल नगर जाने का निर्णय किया। कुछ समय बाद ही समाचार प्राप्त हुआ कि एलिसर का पेरिस नगर में रहने वाला मित्र तहशिनकोव भी उन दोनों के साथ इजराइल देश जाने के लिए वहाँ आ रहा है।

तहशिनकोव के आने के समाचार ने एलिसर को जितना आनंद से भर दिया उतना ही डेबोरा के मन को व्यथित कर दिया। दो प्रेमियों की विहार यात्रा में तीसरे व्यक्ति का प्रवेश उसे अच्छा नहीं लगा। पाँच-छह दिनों में तहशिनकोव वहाँ उपस्थित ही हो गया। एलिसर के पास कोई स्त्री भी होगी यह उसने सोचा ही नहीं था। उसके साथ एलिसर विवाह करना चाहता है, यह जानकर तो वह पूर्णतः खिन्न हो गया।

एकान्त में उसने एलिसर से कहा, "मित्र! यद्यपि डेबोरा सुन्दरी और गुणवती है तथापि मैं सोचता हूँ कि आपके लक्ष्य को प्राप्त करने के मार्ग में वह निश्चय ही रुकावट बनेगी। वह स्त्री है। सुशिक्षित परिवार में सुख से पली-बढ़ी कोमलांगी है और आप काँटों से भरे कठिन रास्ते पर निकले हुए यात्री हैं। ऐसी अवस्था में उसके साथ तुम्हें सहयोग नहीं अपितु कष्ट ही अधिक प्राप्त होंगे।"

एलिसर का स्वप्न तो कुछ और ही था। उसने कहा - "किन्तु मैं उसे अत्यधिक चाहता हूँ। मैं सोचता हूँ कि मेरे ध्येय मार्ग में वह भी मेरी उत्तम सहयोगी बनेगी।"

"पर एलिसर, जरा सोचो! आप हीब्रू भाषा के पुनरुत्थान का स्वप्न देखते हो लेकिन वह तो उस भाषा का एक अक्षर भी नहीं जानती। यद्यपि मैं यहूदी नहीं हूँ तथापि जितनी मैं हीब्रू जानता हूँ वह तो उतनी भी नहीं जानती। फिर ऐसी स्थिति में वह कैसे तुम्हारी सहयोगी बनेगी?" एलिसर के मन में यह विचार कभी नहीं आया था किन्तु डेबोरा के विषय में उसका विश्वास अचल था।

इस बीच तहशिनकोव ने दो-तीन बार एकान्त में डेबोरा के साथ भी बातचीत की तथा उसे लौटाने के अनेक प्रयत्न किए किन्तु डेबोरा भी अडिग ही रही।

इसलिए जीवित है हीब्रू

एक दिन एलिसर और डेबोरा ने साथ में नौकाविहार किया। नौका विहार के बाद नदी के तट पर जब दोनों बैठे थे तब अस्त होते हुए सूर्य को देखकर एलिसर के मुख से अचानक हीब्रू भाषा में एक वाक्य निकला – "अरे! यह कितना सुंदर है।" यद्यपि डेबोरा हीब्रू भाषा नहीं जानती थी फिर भी उसने उस वाक्य के अर्थ का अनुमान लगाकर पुनः उसी हीब्रू भाषा के वाक्य का उच्चारण किया।

उन दोनों के मध्य हीब्रू भाषा में किया गया यह प्रथम सम्भाषण था। इसके बाद अपने इजराइल देश की दिशा में मुँह करके धीरे से एलिसर ने कहा – "प्रिय डेबोरे ! वहाँ.....जहाँ हमारे पूर्वजों ने जीवन गुजारा, उसी पवित्र देश में जॉर्डन नदी के किनारे दो हजार वर्षों के बाद जन्म प्राप्त करने वाले प्रथम हीब्रू मातृभाषी शिशु की माता बनोगी तुम। हीब्रू मातृभाषा बोलने वाली प्रथम माता के रूप में तुम्हारी ख्याति होगी।"

डेबोरा ने एलिसर को स्मरण दिलाया कि अभी तक उनका विवाह सम्पन्न नहीं हुआ है। एलिसर ने विश्वासपूर्वक कहा – "हाँ, स्मरण है। कैरो (काहिरा) नगर में हम दोनों के द्वारा किया जाने वाला पहला कार्य यही है" यह सुनकर डेबोरा की सभी चिंताएँ समाप्त हो गईं।

कैरो नगर में एक दिन एलिसर, डेबोरा और तहशिनकोव को बिना पूर्व सूचना के एक पुरोहित के घर ले गया। यहाँ क्यों आए हैं, ऐसा उन दोनों ने भी नहीं पूछा था। एलिसर ने उस यहूदी पुरोहित और उसकी पत्नी के सामने डेबोरा का हाथ पकड़कर हीब्रू भाषा में एक वाक्य बोला। आश्चर्य के भाव से देख रहे डेबोरा और तहशिनकोव से पुरोहित ने कहा, – "हाँ! यहूदी सम्प्रदाय के अनुसार दो साक्षियों के सामने शुद्ध रूप से उच्चारित यह एकमात्र वाक्य भी दोनों का विवाह सम्पन्न करता है जो अभी एलिसर ने हम दोनों के सामने कहा है। अतः डेबोरा और एलिसर का विवाह सम्पन्न हो गया है। अब हमें मिलकर भोजन करना चाहिए। आइये, हम मिलकर विवाह का मंगल उत्सव मनाते हैं।"

क्या यह सब सत्य है? ऐसा विश्वास करने में असमर्थ सी डेबोरा खड़ी हुई थी।

कैरो नगर से नौका द्वारा प्रस्थान करके वे तीनों सबसे पहले जाफ्फानगर पहुँचे। उन सभी को जेरुसलेम जाना था। यद्यपि जेरुसलेम वहाँ से बहुत दूर नहीं था फिर भी उस समय सुविधाओं के अभाव के कारण उतनी दूर जाने के लिए भी बहुत समय लगता था। स्थानीय लोगों की सलाह मानते हुए उस दिन रात्रि तक वहीं रुककर रात में वहाँ से उन तीनों ने घोड़ा गाड़ी से यात्रा आरम्भ की।

डेबोरा तो बहुत थक गई। इस सबके बीच भी एलिसर ने गाड़ी चलाने वाले के साथ स्नेहपूर्वक वार्तालाप आरंभ कर दिया। एलिसर का वाक्‌चातुर्य ऐसा था कि यात्रा समाप्ति के पहले ही गाड़ी चलाने वाला हायिजेकब् उसका परम मित्र बन गया। आगे हीब्रू भाषा के पुनरुत्थान के अभियान में भी उसने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

जब गाड़ी जेरुसलेम पहुँची तब तक सुबह हो चुकी थी। नगर के मार्गों पर नागरिकों का आवागमन शुरू हो चुका था। इस प्रकार आने जाने वाले लोगों में बहुत से अरबी लोग दिखाई दे रहे थे। मार्ग गन्दे और दुर्गन्धयुक्त थे पर एलिसर का मन भावविभोर था। "हमारे पूर्वजों का, यहूदियों का यह परम पवित्र नगर है। उनके चरणों की धूल के कारण यहाँ की अंगुलिमात्र भूमि भी पवित्र है।" इस प्रकार की भावनाओं से वह भरा हुआ था।

जेरुसलेम में एलिसर का फ्रमकिन नामक एक ही व्यक्ति परिचित था जिसने अपनी पत्रिका में एलिसर का लेख प्रकाशित किया था। एलिसर उसका घर ढूँढकर वहाँ पहुँच गया। फ्रमकिन ने उन सबका हार्दिक स्वागत किया। एलिसर के लेख के विषय में लम्बी बातचीत भी फ्रमकिन ने की। इसके बाद एलिसर की भावी योजना क्या है, इसके बारे में उसने पूछा। एलिसर ने कहा, "यहीं रहना है यह तो निश्चित है, किन्तु कैसे रहूँगा, नहीं जानता। मेरे पास एक सोने के सिक्के के अलावा कुछ भी नहीं है। मुझे शीघ्र ही नौकरी और आवास की आवश्यकता है।"

विशाल हृदय वाले फ्रमकिन ने उसी दिन एलिसर को अपनी पत्रिका का उपसंपादक नियुक्त कर दिया। जब तक व्यवस्था नहीं होती तब तक अपने घर में रहने के लिए एलिसर के परिवार को निमन्त्रण भी दे दिया। एलिसर की समस्याओं का तात्कालिक निवारण हो गया था।

किन्तु पाँच दिनों में ही यह अनुभव हो गया कि डेबोरा का फ्रमकिन की पत्नी के साथ सामञ्जस्य इतना सरल नहीं था। इसलिए उन दोनों ने शीघ्र ही आवास परिवर्तन का निर्णय लिया। एलिसर के पास एक सोने के सिक्के के अलावा कुछ नहीं था। नौकरी का वेतन तो महीने के अन्त में ही प्राप्त हो सकता था, उससे पहले नहीं। फिर भी एलिसर निराश नहीं हुआ। नगर में सभी जगह घूमकर वह घर ढूँढता रहा। अन्त में एक गृहस्वामिनी ने अपने घर में दो कमरे देने के लिए सहमति दी। किन्तु उस स्थान तक पहुँचने के लिए मुख्य मार्ग से बहुत दूर जाना पड़ता था। वहाँ छत पर दो कमरे थे। छत पर पहुँचने के लिए रस्सी से बनी सीढ़ी पर चढ़ना पड़ता था। कोई अन्य उपाय नहीं है, ऐसा सोचकर एलिसर और डेबोरा ने उसे स्वीकार किया तथा वहाँ जाकर रहने लगे।

अभी तो एलिसर के हाथ पूरी तरह से खाली थे। घर के लिए अति आवश्यक दो-चार वस्तुएँ लाने के लिए भी उसके पास धन नहीं था। उसकी चिंता को समझते हुए शीघ्र ही डेबोरा निकट में स्थित बाजार जाकर अपने मातृगृह से प्राप्त एक आभूषण को बेचकर कुछ धन ले आई। डेबोरा के जीवन में त्याग का आरम्भ इस प्रकार हुआ।

एक दिन एलिसर के कार्यालय जाने के बाद डेबोरा ने सबसे पहले घर साफ किया। उसके बाद उसे याद आया कि दिन के भोजन के लिए तो घर पर कुछ नहीं है। कहीं से बिस्किट खरीदना चाहिए, ऐसा डेबोरा ने सोचा। पिता के घर में वैभव में पली-बढ़ी डेबोरा घरेलू कार्यों से अपरिचित ही थी। इसलिए किसी के मार्गदर्शन की आवश्यकता है, ऐसा मानकर उसने पड़ोस में स्थित घर की गृहिणी को पुकारा। कुतूहल से वह गृहिणी बाहर आ गई। उसे नमस्कार कर अपना परिचय देकर डेबोरा ने कहा – ''बहिन ! मुझे बिस्किट खरीदना है। पास में कहाँ मिलेगा?'' वह गृहिणी विस्मय से डेबोरा को देखते हुए बोली ''पुत्री! यहूदी महिलाएँ कभी बिस्किट नहीं खरीदती बल्कि स्वयं बनाती हैं।'' डेबोरा बोली, ''ठीक है बहिन! वैसा ही करूँगी। किन्तु मैं बनाना नहीं जानती। आप मुझे सिखाएँगी क्या?'' महिला ने कहा – ''नहीं! न केवल मैं बल्कि कोई अन्य यहूदी महिला भी तुम्हें कुछ नहीं सिखाएगी, जब तक कि तुम पूरी तरह यहूदियों की तरह व्यवहार न करो। कोई भी यहूदी महिला घर के अन्दर भी इस तरह बालों को बिना ढँके नहीं रहती। पहले कपड़े से बालों को ढको तब मैं तुम्हें भोजन बनाना सिखाऊँगी।''

विनम्र भाव से डेबोरा ने कहा – ''ऐसा ही करती हूँ।'' उस महिला के कहे अनुसार डेबोरा ने वेश–भूषा में परिवर्तन किया। वह गृहिणी जब संतुष्ट हो गई तब उसने डेबोरा को भोजन बनाना सिखाया।

एलिसर जब लौटकर आया तब घर में बालों को ढककर खाना बनाती हुई डेबोरा को देखकर आश्चर्यचकित हो गया। वह जानता था कि आधुनिक परिवेश में पली–बढ़ी डेबोरा का इस प्रकार के परम्परागत व्यवहारों में न केवल अविश्वास था बल्कि उनके प्रति अरुचि भी थी। आश्चर्य से देखते हुए एलिसर से डेबोरा ने कहा – ''प्रिय! यदि इन लोगों के द्वारा हम स्वीकार कर लिए जाते हैं तभी भविष्य में हमारे विचारों को ये लोग स्वीकार करेंगे। हम भी तभी स्वीकार किए जाएँगे जब हम पूर्ण रूप से यहूदियों की तरह व्यवहार करें, यहूदी ही बन जाएँ इसलिए आपके विचारों का पोषण करने के लिए ही मैंने ऐसा व्यवहार किया है।''

एलिसर ने प्रेम और अभिमान से अपनी पत्नी का आलिंगन किया और बोला – ''हाँ प्रिये! अपने कार्य का सम्पादन करने के लिए हम दोनों को अपने जीवन में इस प्रकार के बहुत से परिवर्तन लाने ही होंगे। मैंने ऐसा पहले ही सोचा था किन्तु आप ऐसा कैसे करेंगी इस विषय में मुझे संदेह था। अब मैं निश्चिंत हो गया हूँ।''

एलिसर ने भी अपने बाह्य रूप में परिवर्तन कर लिया। परम्परागत यहूदियों की तरह उसने लम्बा चोगा धारण कर लिया। उसके चेहरे पर अंगुली जितनी लम्बी दाढ़ी–मूँछ हो गई। दोनों ने अत्यंत सावधानी से यहूदियों की परम्परागत जीवन–शैली का अनुसरण कर लिया। साप्ताहिक पर्व दिन पर दोनों परम्परागत वेश में प्रार्थना मंदिर जाने लगे। अन्य लोगों के साथ मिलकर दोनों प्रार्थना करते थे। प्रार्थना करते समय आँखें बन्द करने पर भी उन दोनों का ध्यान प्रार्थना की अपेक्षा हीब्रू भाषा में उच्चारित किए जाने वाले मंत्रों और पद्यों में ही रहता था कि इनमें से कौन–कौन से शब्द नित्य जीवन में व्यवहार में लाए जा सकते हैं।

'शलाम्' हीब्रू भाषा का शब्द है जिसका प्रयोग 'सुप्रभातम्' के अर्थ में किया जाता है। एलिसर जब किसी को देखता तब हीब्रू भाषा में 'शलाम्' शब्द कहते हुए अभिनंदन करता। उसके मुँह से हीब्रू शब्द सुनकर लोग आश्चर्यचकित होते थे। वे चुप हो जाते थे। एलिसर जिस–जिस को देखता उस–उस को 'शलाम्' कहता। कुछ बच्चे एलिसर की नकल करते हुए उसका मजाक उड़ाते।

एलिसर जिस मार्ग से जाता उस मार्ग में छिप कर उसका मजाक बनाने के लिए एलिसर की शैली में 'शलाम्' कहते। फिर भी एलिसर विचलित नहीं हुआ। वह जानता था कि यह तो तात्कालिक परिणाम है अतः वह धैर्य से अपने प्रयत्न बार-बार करता रहा। उसने निश्चय कर लिया था कि दो हजार वर्ष पहले व्यवहार से दूर हो चुकी इस भाषा को फिर से व्यवहार में लाने के लिए मुझे पर्वत के समान प्रयास करने पड़ेंगे।

एक दिन सुबह किसी सज्जन ने बेन्यहूद (एलिसर) के घर का दरवाजा खटखटाया। उसने अपना परिचय 'निस्सिबेहर' इस नाम से बताकर कहा- "श्रीमान! मैं एक विद्यालय आरंभ करने वाला हूँ। वहाँ आप शिक्षक के रूप में कार्य करें, मैं यह निवेदन करने आया हूँ।" एलिसर ने कहा - "मुझे स्वीकार है। किन्तु मैं वहाँ केवल हीब्रू भाषा के माध्यम से ही पढ़ाऊँगा। मैं यह भी स्पष्ट जानता हूँ कि आप इसे स्वीकार नहीं करेंगे।" उस सज्जन ने कहा, "मेरी तो यही इच्छा है इसीलिए मैं आपके पास आया हूँ। हीब्रू भाषा के माध्यम से ही पढ़ाया जाना चाहिए यह बहुत दिनों से मेरा स्वप्न है। उस स्वप्न को साकार करने में आप ही समर्थ हैं ऐसा मानकर मैं यहाँ आया हूँ।"

बेन्यहूद ने आनन्दपूर्वक उस नौकरी को स्वीकार कर लिया क्योंकि पत्रिका संपादन का कार्य उसकी जीविका निर्वहन के लिए पर्याप्त नहीं था। आर्थिक समस्या अत्यधिक थी।

जब बेन्यहूद ने यह समाचार डेबोरा को सुनाया तब वह प्रसन्नता से बोली- "प्रिय! हम दोनों का भाग्य अनुकूल है। उचित समय में ही नौकरी का यह अवसर आपको प्राप्त हुआ है क्योंकि......।" आगे डेबोरा ने कुछ नहीं कहा फिर भी उसकी आँखों की चमक से बेन्यहूद जान गया कि उसकी पत्नी गर्भवती है। उसके आनंद की कोई सीमा नहीं रही। उस रात को बहुत देर तक दोनों सोए नहीं। डेबोरा के पेट के ऊपर कोमलता से वात्सल्य का हाथ फेरते हुए बेन्यहूद ने कहा - "प्रियतमे डेबोरे! यह आपका अहोभाग्य है कि दो हजार वर्ष बाद आप प्रथम हीब्रू मातृभाषी शिशु को जन्म देने वाली माता बनेंगी। अहोभाग्य है हमारे जन्म लेने वाले शिशु का जिसके द्वारा केवल परमपवित्र हीब्रू भाषा सुनी जा रही है, कोई अन्य भाषा नहीं। लेकिन उसके लिए डेबोरे! आपको हमेशा जागरुक रहना पड़ेगा कि वह अन्य भाषा न सुन सके। कुछ वर्षों तक अन्य लोगों के सम्पर्क से दूर घर के बन्धन में ही उसे रखना पड़ सकता है। हमारे घर में हीब्रू

भाषा के अतिरिक्त किसी अन्य भाषा के शब्द नहीं सुनाई देने चाहिए। हमारा घर दो हजार वर्षों के बाद प्रथम हीब्रू भाषा बोलने वालों का घर बनेगा.....।''

बेन्यहूद के सपनों ने डेबोरा के मन में जितना विस्मय उत्पन्न किया उतना ही भय भी उत्पन्न कर दिया क्योंकि अभी तक डेबोरा हीब्रू भाषा में सारा वार्तालाप करने में समर्थ नहीं थी। साथ ही, पति के अतिरिक्त और किसके साथ वह हीब्रू भाषा में व्यवहार करती? फिर भी बिना किसी प्रतिप्रश्न के डेबोरा ने पति के वचनों को स्वीकार कर लिया।

बेन्यहूद ने विद्यालय में अध्यापन आरंभ कर दिया। वह हीब्रू भाषा में ही पढ़ाता था। शुरुआत में ही इस विषय में अन्य शिक्षकों ने विरोध किया – ''परम पवित्र भाषा हीब्रू में लौकिक विषयों का अध्यापन.....! यह सर्वथा अनुचित है।'' ऐसे आक्षेप उन लोगों ने लगाये। बेन्यहूद जब विद्यालय से बाहर आता था तब वे छिपकर उस पर पत्थर फेंकते थे। पर बेन्यहूद ने छात्रों का मन जीत लिया था। उन पर उसका प्रभाव बढ़ रहा था। छात्र भी हीब्रू भाषा पढ़ना चाहते थे। इसलिए बेन्यहूद अत्यन्त संतुष्ट था। धीरे-धीरे विद्यालय में छात्र संख्या भी बढ़ रही थी इसलिए निस्सिं बेहर भी संतुष्ट था।

एक बार जेरुसलेम नगर के मुख्य मार्ग पर डेबोरा के साथ बेन्यहूद जोर-जोर से हीब्रू भाषा में बात करता हुआ जा रहा था। एक व्यक्ति ने आश्चर्य से उनको देखा और बेन्यहूद से पूछा, ''क्षमा करें, आप दोनों किस भाषा में बात कर रहे हैं?'' बेन्यहूद ने कहा, ''हीब्रू भाषा में।'' उस व्यक्ति ने कहा, ''किन्तु हीब्रू भाषा में तो कोई नहीं बोलता। वह तो मृतभाषा है।'' तब बेन्यहूद् ने आत्म विश्वास से कहा, ''आपका चिंतन गलत है मित्र। मैं जीवित हूँ, मेरी पत्नी जीवित है। हम दोनों हीब्रू-भाषा में बोल रहे हैं अत: हीब्रू भाषा अवश्य ही जीवित है।''

पत्रिका – संपादन और विद्यालय में पढ़ाना, इन दोनों कार्यों में बेन्यहूद को दुगुना कार्य करना पड़ता था जिसके कारण उसे पर्याप्त आराम नहीं मिलता था। इसलिए उसकी खाँसी भी बढ़ गई। डेबोरा ने जिस चिकित्सक से परामर्श किया उसने बेन्यहूद को आराम करने की सलाह दी। किंतु बेन्यहूद का मानना था कि स्वयं का स्वास्थ्य उतना महत्वपूर्ण नहीं है। संसार के सर्वप्रथम हीब्रू मातृभाषी शिशु का अच्छी स्थिति में स्वागत करने के लिए और सुख से उसका पालन करने के लिए अपेक्षित आर्थिक स्थिति प्राप्त करने के लिए दोनों स्थान पर

कार्य करना अनिवार्य है, दिन कम हैं और करने योग्य कार्य बहुत हैं, इसी बात को बार-बार स्मरण कर वह कार्य में मग्न रहता था।

एक दिन बेन्यहूद अपने कमरे में अध्ययन कर रहा था। घर के बाहर कुछ शोरगुल सुनकर डरी हुई डेबोरा अंदर आकर बोली – ''बाहर जोर-जोर से शोर करता हुआ एक दल दिखाई दे रहा है। हीब्रू भाषा में बोलते हुए वे शोर कर रहे हैं। मैं सोच रही हूँ कि वे लोग हम दोनों का कुछ अहित करने ही आ रहे हैं। अब हमारा क्या होगा...?'' किन्तु बेन्यहूद शान्तस्वर से विश्वासपूर्वक बोला – ''यदि हीब्रू भाषा में बोल रहे हैं तो वे हमारे हितैषी ही होंगे। चलो, देखते हैं।'' दोनों ने बाहर आकर देखा। वहाँ यूरोपीय शैली में सजे-धजे लगभग बीस युवक व युवतियाँ दिखाई दिए। बेन्यहूद को सामने पाकर वे उसे घेर कर बोले-''हे गुरु! हम आपके शिष्य हैं।'' कुछ लोग बोले – ''सेनापति ! हम आपकी सेना के सैनिक हैं। आपकी आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहे हैं, आप आदेश करें कि हमें क्या करना है।''

पवित्र भाषा में अपवित्र विचार

आशंकित बेन्यहूद बातचीत से जान गया कि वे यूरोप से आए हुए विश्वविद्यालय के छात्र हैं। वे सब उसके लेख पढ़कर इतने प्रभावित हुए थे कि वे अपने अध्ययन को छोड़कर बेन्यहूद के कार्य में सहयोग करने के लिए वहाँ आ गए थे। यह जानकार बेन्यहूद की आँखों में आनंद और संतोष के आँसू आ गए किन्तु अपनी विपन्न अवस्था के बारे में सोचकर उसे बहुत दुःख भी हुआ क्योंकि इतनी दूर से आने वालों को वह एक बार भोजन करवाने में भी समर्थ नहीं था। सभी को केवल पेय वितरित कर शीघ्र ही वह उनके रहने की व्यवस्था करने के लिए प्रयत्नशील हो गया। इस नगर में जितने उसके मित्र और हितैषी थे, उन सभी की सहायता लेने का उसने निश्चय किया। बेन्यहूद का विचार था कि यदि उन सभी परिचितों में से प्रत्येक घर में एक-एक व्यक्ति के रहने की व्यवस्था हो जाती है तो समस्या का तात्कालिक समाधान हो जायेगा।

अत्यधिक प्रयत्न के बाद किसी प्रकार वह उनकी तात्कालिक व्यवस्था करने में समर्थ हो पाया। आए हुए उन लोगों में से कुछ प्रतिभाशाली लोग कुछ विषयों में अनुभव प्राप्त भी थे। बेन्यहूद ने निश्चित किया कि उनकी प्रतिभा और अनुभव का सदुपयोग हीब्रू भाषा के प्रचार-प्रसार में करना चाहिए। सौभाग्य से उनमें से कुछ लोग हीब्रू भाषा बोलने में समर्थ थे। उनमें से दो-तीन को बेन्यहूद ने हीब्रू भाषा शिक्षक के रूप में नियुक्त कर दिया। हीब्रू भाषा के हितैषी एक व्यापारी से बेन्यहूद ने निवेदन किया, "आप अपनी दुकान में कर्मचारी के रूप में इनमें से एक को नियुक्त कर लें। यह दुकान में आने वाले ग्राहकों के साथ हीब्रू भाषा में ही बात करेगा, किसी अन्य भाषा में नहीं। इससे हीब्रू भाषा के प्रचार कार्य में आपका महान योगदान होगा।" उस व्यापारी ने इस बात को सरलता से स्वीकार कर लिया। इसी प्रकार अन्य लोगों की व्यवस्था भी बेन्यहूद ने की। कुछ लोगों को उसने खेती करने वाले लोगों के बीच रखा। उनके साथ निवास करते हुए वहाँ भी उन्होंने हीब्रू भाषा का प्रसार किया।

बेन्यहूद के लेखों को पढ़कर जैसे यूरोप से छात्र आए थे, उसी प्रकार धीरे-धीरे अनेक परिवार भी इजराइल देश में रहने के लिए आ गए। बेन्यहूद को उनकी भी व्यवस्था करनी पड़ी। उनके इस उत्साह की रक्षा के लिए बेन्यहूद को उनके लिए अपेक्षित भूमि, व्यवसाय इत्यादि दिलवाने के लिए अत्यधिक श्रम करना पड़ा। फिर भी उसने प्रयत्नपूर्वक सब किया। बहुत सारे परिवार इजराइल देश में आकर बस गए।

डेबोरा के प्रसव का दिन भी आ गया। धन के अभाव के कारण बेन्यहूद उसके लिए अपेक्षित पलंग की व्यवस्था करने में भी असमर्थ रहा किन्तु सहायता के लिए उसने एक महिला को नियुक्त कर लिया। 1882 ईसवी में एक दिन बेन्यहूद को यह शुभ समाचार मिला कि उसके चिंतन के अनुसार दो हजार वर्षों के बाद सर्वप्रथम हीब्रू भाषा बोलने वाला शिशु उसके घर उत्पन्न हुआ है। शिशु के जन्म के समय उपस्थित रहने वाली परिचारिका (दाई) को भी बेन्यहूद ने कठोरता से बताया था कि उसे किसी भी शब्द का उच्चारण नहीं करना है क्योंकि वह हीब्रू भाषा नहीं जानती थी। बेन्यहूद ने निर्णय किया था कि जन्म लेने वाला शिशु किसी अन्य भाषा को न सुने। बेन्यहूद की आज्ञा का अनुसरण करते हुए परिचारिका ने मौन रहकर ही सारे कार्य किए। नवजात शिशु के कान में डेबोरा ने प्रथम हीब्रू शब्द का उच्चारण किया - 'मेरा पुत्र।'

डेबोरा ने पुत्र को जन्म दिया है, यह समाचार सुनकर पड़ोस की कुछ महिलाएँ नवजात शिशु को देखने आईं। किन्तु प्रसूतिका कक्ष के द्वार पर खड़े होकर बेन्यहूद ने उनके हीब्रू भाषा ज्ञान की परीक्षा की। उसने कहा, ''यदि आप हीब्रू भाषा जानती हो तो अंदर जाओ, शिशु को देखो और बोलो। यदि हीब्रू भाषा नहीं जानती हो तो बाहर आने तक आपको एक भी शब्द का उच्चारण नहीं करना है।'' इस प्रकार क्रमशः उसने एक-एक को अंदर भेजा।

शिशु का नाम 'बेनझियोन' रखा गया। यही शिशु आने वाले समय में हीब्रू मातृभाषा बोलने वाले पहले शिशु के रूप में प्रसिद्ध हुआ। यहूदियों में मान्यता है कि नवजात पुरुष शिशु को यदि हाथों में उठा लिया जाय तो संतानहीन महिलाओं को भी संतान प्राप्ति हो जाती है। इस प्रथा के अनुसार अनेक उस प्रकार की (संतानहीन) महिलायें बेन्यहूद के घर नवजात शिशु को गोद में उठाने आईं। किन्तु बेन्यहूद ने उनमें से एक-एक का हीब्रू भाषा का ज्ञान परख कर ही शिशु को उठाने का अवसर दिया।

●●●●

बेन्झियोन धीरे-धीरे बड़ा हो रहा था। बेन्यहूद के कठोर अनुशासन के कारण वह माता-पिता के अतिरिक्त अन्य लोगों का दर्शन बहुत कम ही कर पाता था। जो हीब्रू भाषा बोलने में समर्थ थे केवल उन्हीं को शिशु के पास जाने की अनुमति बेन्यहूद देता था। बहुत महीनों, वर्षों तक केवल माता-पिता के मुँह देखने और केवल उन्हीं का सम्भाषण सुनने के कारण उस शिशु के मस्तिष्क में उन दोनों के चित्रों के अतिरिक्त अन्य कोई चित्र अंकित ही नहीं हुआ। बेन्यहूद का दृढ़विश्वास था कि उसका पुत्र सर्वप्रथम बिना किसी अन्य भाषा के मिश्रण के शुद्ध रूप से हीब्रू भाषा में ही सम्भाषण करेगा। किन्तु दुर्भाग्य! एक वर्ष का हो जाने के बाद भी शिशु ने एक भी शब्द नहीं बोला। दो-तीन माह और बीत गए। अभी भी शिशु ने एक भी शब्द नहीं बोला। बेन्यहूद ने सोचा कि कुछ बालक विलम्ब से बोलना शुरू करते हैं, मेरे बालक की भी वही स्थिति होगी। किन्तु कुछ महीनों के और बीत जाने पर भी जब शिशु कुछ नहीं बोला तब डेबोरा के मन में भी संदेह उत्पन्न हो गया कि क्या वे यह उचित कर रहे हैं? उसके मन में कुछ दिनों पहले किसी के द्वारा पूछा गया प्रश्न गूँजा, "क्या आप अपने पुत्र को केवल हीब्रू भाषा सुनाकर उसे गूँगा और मूर्ख बनाना चाहती हो?"

पुत्र का दूसरा जन्मदिन भी आ गया। अब भी जब बेन्झियोन ने एक भी शब्द नहीं बोला, तो डेबोरा के सब्र का बाँध टूट गया। अनेक लोगों ने उससे कहा, "असम्भव कार्य को पूर्ण करने की इच्छा करने वाले आपके पति अपने ही पुत्र को बलि का पशु बना रहे हैं। आप सावधान हो जाओ।"

"हमने पहले ही कहा था कि यह कभी सम्भव नहीं है। आप दोनों का प्रयत्न पूर्णत: विफल ही होगा" कुछ लोगों ने ऐसा भी याद दिलाया।

इन सब बातों से पूर्णत: खिन्न डेबोरा को सांत्वना देते हुए बेन्हयूद बोला, "प्रिये! आज भी मेरा पूर्ण विश्वास है कि हमारा पुत्र शुद्ध हीब्रू भाषा में ही बोलेगा। कुछ महीने और धैर्य रखो। यदि तब भी नहीं बोला तो "मैं और मेरा प्रयत्न विफल हुआ। मैं पराजित हूँ। हीब्रूभाषा फिर कभी मातृभाषा नहीं बन सकती" ऐसा संपादकीय लेख पत्रिका में लिखकर संपूर्ण जगत् से क्षमा याचना करूँगा।

तीन माह के बाद बेन्झियोन ने प्रथम शब्द बोला। पति-पत्नी आनन्दित हो गए। बीतते दिनों के साथ वह प्रतिदिन नए-नए शब्दों का उच्चारण कर रहा था। शुद्ध हीब्रूभाषा में बोलते हुए, हँसते हुए, रोते हुए पुत्र को देखकर दोनों ने जीवन की सार्थकता का अनुभव किया।

●●●●

''बेन्यहूद का पुत्र बेन्झियोन हीब्रू भाषा में ही बोलता है'' यह समाचार जेरुसलेम नगर में चारों ओर फैल गया। उस विशिष्ट शिशु को देखने के लिए बहुत सारे लोग बेन्यहूद के घर आए। एक दिन शनिवार की शाम के समय कुछ लोग आए, जिनमें नगर के कुछ प्रमुख यहूदी धर्मगुरु भी थे। सदैव के ही समान बेन्यहूद ने दरवाजे पर खड़े होकर उनमें से एक-एक की हीब्रू सम्भाषण क्षमता का परीक्षण करके ही पुत्र से मिलने के लिए अनुमति दी। आए हुए सभी लोग बेन्झियोन के मुँह से हीब्रू भाषा में सम्भाषण को सुनकर अत्यधिक आश्चर्यचकित हो गए। सभी ने ललाट पर चुंबन कर शिशु का अभिनन्दन किया, और डेबोरा की प्रशंसा की। अभिनंदन करते हुए बेन्यहूद से वे लोग बोले - ''आपने एक अद्भुत लक्ष्य प्राप्त किया है।'' वह धर्मगुरु भी शिशु का विशेष रूप से परीक्षण कर रहा था।

प्राय: जब दो घंण्टे बीत गए, डेबोरा पुत्र के पास आकर उसके कान में बोली - ''बेटा! शौचालय जाओ।'' डेबोरा के मुँह से निकले इस वाक्य को सुनकर पास में ही बैठा वह धर्मगुरु जोर से चिल्लाया- ''यह शर्मनाक है। जिस भाषा में बाईबिल की रचना की गई है, जो प्रार्थना के लिए प्रयोग की जाती है, उस पवित्र भाषा को आप लोग धरती पर ले आए हैं। उसी भाषा में 'शौच' करने के लिए भी कहते हैं। धिक्कार है आपकी मूर्खता को....।''

ऐसा बोलते हुए वह बेन्यहूद के परिवार को शाप देता हुआ वहाँ से निकल गया। वहाँ उपस्थित सब अतिथि भी स्तब्ध हो गए।

सबके चले जाने के बाद अंत में बचे हुए बेन्यहूद के पिनेस् नामक मित्र ने कहा, ''मित्र! हीब्रू भाषा के पुनरूज्जीवन के लिए आपके द्वारा किए जाने वाले प्रयासों का मैं अभिनंदन करता हूँ। आपके इस युद्ध में मैं सहयोग करता रहा हूँ। फिर भी मित्र! यह प्रयत्न हम बड़े लोगों का होना चाहिए। उसमें शिशुओं को साधन की तरह उपयोग नहीं करना चाहिए। इस नादान शिशु को अपने प्रयोग के लिए बलि का पशु मत बनाओ। वह अभी हीब्रू भाषा में सब कुछ बोलता है ऐसा जो आप सोचते हो वह भ्रान्ति ही है। वह तो सुना हुआ ही पुन: उच्चारण करता है, जैसे कि सिखाया हुआ तोता।'' यह केवल तोते के वचन हैं। दो हजार वर्षों से व्यवहार से दूर हो गई भाषा में क्या किसी भी शिशु का विकास होता है? फ्रेंच, जर्मन, रूसी, यिड्डिष, कोई भी भाषा उसे पढ़ाओ। उसी भाषा में उससे प्रेम करो, गीत गाओ, कथा सुनाओ, जिससे उसका अंतर्मन फूल के समान विकसित हो; अन्यथा वह मूर्ख ही रह जाएगा।''

''नहीं....। मैं अपने पुत्र के साथ अन्य भाषा में बातचीत कभी नहीं करूँगा।'' – ऐसा बेन्यहूद ने निष्ठुरता से कहा।

''परन्तु मित्र! इस कारण से आप अपने पुत्र को ही बलि का बकरा बना रहे हो। उस पर दया करो। इस प्रयत्न में तो आप कभी सफल नहीं होंगे....।'' पिनेस् ने पुनः कहा।

''यदि प्रथम पुत्र के साथ मेरा प्रयत्न विफल हो जाएगा तो मैं दूसरी संतान के साथ पुनः यही प्रयास करूँगा। यदि वहाँ भी विफल रहा तो तीसरी और चौथी संतान के बाद भी यही प्रयास करूँगा। जब तक सफलता नहीं मिलेगी मैं नहीं रुकूँगा।'' बेन्यहूद ने दृढ़ता से कहा। पति के वचनों को सुनकर डेबोरा काँप गई।

बीतते समय के साथ बेन्यहूद ने अनुभव किया कि उसके विचार उसकी अपेक्षा के अनुसार प्रकाशित करने के लिए उसे स्वयं ही कोई पत्रिका प्रकाशित करनी होगी। किंतु इसके लिए उसकी आर्थिक सामर्थ्य नहीं थी। उत्साही तथा दृढ़निश्चयी लोगों के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। सबसे पहले बेन्यहूद ने फ्रेमकिन महोदय की पत्रिका के उपसंपादक पद से त्यागपत्र दे दिया। उसके बाद डेबोरा के साथ लम्बी बातचीत की। उसने अनुकूल भाव तो प्रदर्शित किए किंतु उसे भी धन की ही चिंता थी क्योंकि अब तक उसने अपने सारे आभूषण बेच दिए थे। बेन्यहूद ने ऋण प्राप्ति के लिए प्रयत्न शुरू कर दिए। हीब्रू भाषा पर गौरव करने वाले किसी व्यक्ति से उसने एक सोने का सिक्का ऋण के रूप में माँगा। उसने दे तो दिया किन्तु पूछा, ''इतने कम धन में कैसे पत्रिका प्रकाशित करोगे?'' बेन्यहूद ने कुछ भी प्रत्युत्तर नहीं दिया। उन्हीं दिनों जेरुसलेम नगर के किसी मुद्रणालय (प्रेस) के स्वामी से बेन्यहूद का परिचय हो गया, जो कम व्यय में मुद्रण करने के लिए तैयार था। 'दि डीर' नामक साप्ताहिक पत्रिका का प्रकाशन निश्चित हो गया। छोटे आकार की चार पृष्ठों वाली उस पत्रिका के प्रथम अंक के लिए सभी लेखों को बेन्यहूद ने अत्यंत श्रद्धा से लिखा और अत्यधिक उत्साह से मुद्रणालय ले गया। मुद्रणालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों में से कोई भी हीब्रू भाषा नहीं जानता था। इसलिए उसने अक्षर संयोजन (कम्पोजिंग) का अभ्यास साथ में ही शुरू कर दिया। मुद्रणालय के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक वातावरण में पूरे दिन रहकर अक्षर संयोजन के कारण उसकी बीमारी और बढ़ गई। फिर भी जब 'दि डीर' पत्रिका के प्रथम अंक की चार सौ प्रतियाँ तैयार हुईं, बेन्यहूद के आनंद की कोई सीमा नहीं रही। मध्य रात्रि में उन पत्रिकाओं को लेकर उड़ता हुआ सा वह घर पहुँचा।

अत्यधिक उत्कण्ठा से वह पत्रिका को पढ़ने के लिए बेचैन अपनी पत्नी डेबोरा से बोला–''प्रिये! सबसे पहले इनको व्यवस्थित मोड़ना है। फिर इनके ऊपर पते लिखने हैं। फिर टिकट चिपकाने हैं। सूर्योदय से पहले डाकखाने में भेजने के लिए इन्हें तैयार करना है। याद रहे, यदि एक के भी ऊपर टिकट नहीं लगा तो दण्ड शुल्क देना होगा। उसे देने में मैं समर्थ नहीं हूँ अतः अत्यंत सावधानी से यह कार्य करना होगा।'' बेन्यहूद के स्वभाव को जानने वाली डेबोरा ने कुछ भी कहे बिना कार्य आरंभ कर दिया। सूर्योदय तक उन दोनों का कार्य समाप्त हो गया। कार्य समाप्त होते ही बेन्यहूद ने घोषणा की, ''प्रिये! आज के बाद प्रत्येक गुरुवार को हम दोनों की रात इसी प्रकार व्यतीत होगी। उसके अतिरिक्त पत्रिका के प्रसार की व्यवस्था भी आपको ही देखनी होगी।''

'डि डीर' पत्रिका के प्रथम अंक के लिए तीन सौ ग्राहक मिले। पूरी तरह से हीब्रू भाषा में प्रकाशित उस पत्रिका को पढ़ने वाले ग्राहकों के भिन्न-भिन्न प्रकार के विचार प्राप्त हुए। कुछ परम संतुष्ट थे तो दूसरी ओर देव भाषा के सांसारिक उपयोग को देखकर कुछ परम्परावादी क्रोधित भी थे। पहले अंक के प्रत्येक अक्षर को अनेक बार पढ़ने वाली डेबोरा ने मुक्त मन से पति की प्रशंसा की। वह जानती थी कि पत्रिका प्रकाशन बेन्यहूद का अत्यंत प्रिय कार्य है, इसलिए उसने अपने सभी कष्टों को सहन करते हुए भी बेन्यहूद के कार्य में सहायता करने का निश्चय किया।

उस दिन से बेन्यहूद का कार्य दुगुना हो गया। प्रति गुरुवार उसका दिन मुद्रणालय में ही बीत जाता था। शुक्रवार को सुबह पत्रिका डाकखाने में भेजनी होती थी। इसलिए गुरुवार की रात को पत्रिका का मुद्रण अनिवार्य था। यह कार्य हड़बड़ी के बिना यद्यपि दो-तीन दिन पहले भी समाप्त किया जा सकता था, किन्तु बेन्यहूद इस तरह पत्रिका का प्रकाशन करना नहीं चाहता था। गुरुवार की सुबह तक घटित घटनाओं को भी समाचार पत्र में प्रकाशित करने का इच्छुक बेन्यहूद तब तक प्रतीक्षा करने के बाद ही पत्रिका को छापने के लिए भेजता था। इसलिए प्रत्येक गुरुवार दोनों का पूरी रात जागरण अनिवार्य रूप से होता था।

●●●●

विद्यालय में पढ़ाना और पत्रिका का संपादन, दोनों कार्य साथ-साथ करना असम्भव थे, ऐसा बेन्यहूद को कुछ ही समय में अनुभव हो गया। इसलिए उसने विद्यालय से त्यागपत्र देकर अपना साारा समय पत्रिका के संपादन

में ही लगा दिया। इससे पत्रिका के काम के लिए तो उसे अधिक समय मिलने लगा किंतु इससे उसकी आर्थिक स्थिति शोचनीय हो गई। पत्रिका से आय की अपेक्षा मुद्रण व्यय अधिक होता था। प्रत्येक सप्ताह मुद्रण के लिए कागज खरीदने के लिए तथा मुद्रक और डाकखाने के लिए धन देना होता था अन्यथा अगले अंक का प्रकाशन नहीं होता। इसलिए बेन्यहूद ने प्राप्त होने वाले समस्त धन को पत्रिका के लिए ही उपयोग करते हुए अपने परिवार की उपेक्षा कर दी। डेबोरा तो निस्सहाय थी। थककर घर आये हुए पति के स्वास्थ्य तथा शान्ति के लिए उसे स्वादिष्ट और भर पेट भोजन परोस कर देने के लिए वह सदा प्रयासरत रहती थी, किंतु धन के अभाव के कारण कई दिन दोनों को पर्याप्त मात्रा में भोजन भी नहीं मिल पाता था। फिर भी, साध्वी डेबोरा स्वयं निराहार रहकर भी पति को भोजन कराती थी।

एक दिन ऐसा हुआ कि रात को विलम्ब से मुद्रणालय से लौटे हुए पति का स्वागत करके डेबोरा ने उसकी भोजन व्यवस्था की। उस दिन घर पर एक गिलास दूध और बिस्किट के एक टुकड़े के अतिरिक्त कुछ भी नहीं था, वही दूध गर्म करके पति के सामने रखकर जाने के लिए उद्यत पत्नी से बेन्यहूद बोला– ''डेबोरा तुम जानती हो कि मैं अकेले खाना नहीं खाता हूँ।''

जल्दी से डेबोरा बोली – ''आपको समझना चाहिए प्रिय! मैं पहले की तरह अब नहीं रह सकती हूँ। अब मेरा पुत्र है। मैं शिशु की माता आपके आने तक भोजन के लिए प्रतीक्षा नहीं कर सकती, अतः मैंने पहले ही भोजन कर लिया....।''

''ठीक किया प्रिये! मुझे क्षमा करो'' ऐसा बोलते हुए बेन्यहूद ने तृप्ति के साथ भोजन किया। वास्तविक स्थिति तो केवल डेबोरा जानती थी। उसने भोजन नहीं किया, यदि यह बात बेन्यहूद ज़ानता तो व्याकुल हो जाता और उस थोड़े से भोजन में से ही कुछ डेबोरा को खाने के लिए अनुरोध करता। यदि इतना भी भोजन बेन्यहूद नहीं करेगा तो दुर्बल हो जाने पर उसकी क्या स्थिति होगी, यही सोचकर डेबोरा ने इस तरह झूठ बोल दिया।

उसे तो महीने में अनेक बार इस तरह करना पड़ता था। किंतु कभी उसने पति के सामने यह प्रकट नहीं किया। पति के लिए सब कुछ सहन करती हुई वह उसका मनोबल बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहती थी। बेन्यहूद से विवाह के पूर्व ही वह भविष्य में इस प्रकार के जीवन के लिए मानसिक रूप से तैयार थी।

नए मार्ग में अनेक विघ्न

समय बीतने के साथ 'दि डीर' पत्रिका की लोकप्रियता बढ़ गई। पत्रिका के पृष्ठों की संख्या भी दुगनी हो गई। बेन्यहूद ने धीरे-धीरे पत्रिका के माध्यम से नूतन व्यावहारिक शब्दों का परिचय पाठकों से करवाने के लिए प्रयास शुरू कर दिया। उन्हीं दिनों हीब्रूभाषा में लिखी हुई पाठ्य पुस्तकों की आवश्यकता उसे अनुभव हुई। इसलिए उसने शिक्षकों का एक दल बनाकर उनके सामने यह विचार रखा तथा उन शिक्षकों को पुस्तक लेखन हेतु तैयार कर लिया। इसी बीच उसने सोचा कि नित्य व्यवहार में सभी अवसरों पर हीब्रू भाषा का प्रयोग किया जा सकता है, इस तथ्य को नाटकों के द्वारा परिणामकारी रूप से लोगों को समझाया जा सकता है। इसलिए उसने नाटककारों से संपर्क किया। उन पर अपना प्रभाव जमा कर हीब्रू भाषा में आधुनिक नाटक उनसे लिखवाए। बच्चों और युवाओं ने समाज में यहाँ-वहाँ जाकर उन नाटकों को अभिनीत करके दिखाया। इससे हीब्रू भाषा के प्रचार में बड़ी उपलब्धि हुई।

बेन्यहूद की बुद्धि नवाचार करने वाली थी। वह हमेशा नए-नए मार्गों को खोजती थी, भाषा प्रचार के विविध उपायों को सोचती थी। विचारों के अनुरूप बेन्यहूद का शरीर यद्यपि सहयोग नहीं करता था फिर भी बेन्यहूद मस्तिष्क में उत्पन्न सभी योजनाओं को जल्दी ही कार्यान्वित करने का प्रयास करता था। सूर्योदय से पहले उठना और मध्यरात्रि तक कार्य करना उसका प्रतिदिन का अभ्यास हो गया था। इन दिनों वह दिन में उन्नीस घण्टों तक कार्य करता था। ''आप क्षयरोग से पीड़ित हैं। आपको आराम करना चाहिए।'' डेबोरा और डॉक्टर की ऐसी बात को सुनकर बेन्यहूद कहता था, ''समय बहुत कम है और करने योग्य कार्य बहुत अधिक हैं।''

एक दिन उसने डेबोरा से कहा, '' प्रिये, मैं सोचता हूँ कि इस समय हमें आधुनिक हीब्रू शब्दकोश की अत्यंत आवश्यकता है। 'शब्दकोश' इस शब्द के लिए ही हीब्रू भाषा में शब्द नहीं दिखाई देता, कैसी विडम्बना है! इसलिए मुझे शब्दकोश का निर्माण भी करना चाहिए।

डेबोरा बोली, "हाँ, उसकी आवश्यकता तो है ही और यह भी सत्य ही है कि उस प्रकार का विद्वत्तापूर्ण कार्य करने में आप ही समर्थ हैं। किंतु इसके लिए आप समय कहाँ से लायेंगे?"

"कैसे भी सामंजस्य करना होगा, डेबोरे! आरंभ तो करूँगा। ईश्वर भी दयालु है, कोई मार्ग वह दिखायेगा। प्रति दिन उसके लिए कुछ समय निकालता हूँ..............।" ऐसा बेन्यहूद ने कहा और शब्दकोश निर्माण का कार्य शुरू कर दिया। इस कार्य ने प्राय: पचास सालों का दीर्घ काल लिया, परन्तु उसी के कारण बेन्यहूद का नाम भी इतिहास में अमर हो गया।

बेन्यहूद की गरीबी बढ़ती जा रही थी। उसी बीच उनका दूसरा पुत्र भी हो गया। उस शिशु के जन्म पर उत्सव इत्यादि तो दूर, उस समय डेबोरा के लिए अपेक्षित भोजन खरीदने की आर्थिक सामर्थ्य भी नहीं थी। फिर भी बौद्धिक लोक में ही सर्वदा मग्न बेन्यहूद व्यावहारिक लोक की ऐसी समस्याओं के बारे में कभी नहीं सोचता था। उन सभी समस्याओं से अकेली डेबोरा को ही जूझना पड़ता था। फिर भी वह किसी प्रकार यह सब करती थी। जेरुसलेम नगर के बाहरी भाग में एक भूस्वामी के निवास के एक छोटे हिस्से में उनका निवास था। बेन्यहूद ने 'दि डीर' पत्रिका के एक संपादकीय लेख में लिखा, - "ये जमींदार बहुत क्रूर हैं। वे निर्धनों से करुणाहीन व्यवहार करते हैं। नगर में अभी जल की कमी है किंतु करुणा से रहित ये जमींदार लोग इस अवसर का लाभ उठाकर पानी बेचकर बहुत धन कमा रहे हैं। इनकी धन की लालसा को धिक्कार है। यदि जल्दी ही बारिश नहीं हुई तो ये जमींदार लोग निर्धनों का रक्त भी पी सकते हैं।"

बेन्यहूद के उस संपादकीय लेख ने जमींदारों को आगबबूला कर दिया। उस दिन घर आए हुए बेन्यहूद की उसके मकानमालिक ने कठोर शब्दों में निंदा करते हुए कहा, "अरे टेढ़ी बुद्धि वाले संपादक! जहाँ रहता है उस घर का किराया तो नियमित रूप से नहीं दे सकता और फिर हमको ही उपदेश देता है? हमारी ही निंदा करता है? अभी यहाँ से निकल जा। मेरे घर का आश्रय तेरे लिए समाप्त हुआ। रास्ते में खड़े होकर पानी के लिए भगवान से प्रार्थना करना। तुम लोगों पर विशेष कृपा करने वाला वह भगवान पानी देने की कृपा करेगा।"

ऐसा कहकर उस जमींदार ने निर्दयतापूर्वक बेन्यहूद परिवार को सामान के साथ घर से बाहर निकाल दिया। दूसरा घर ढूँढ़ने के लिए समय और पूर्व सूचना दिए बिना ही उस परिवार को रास्ते पर लाकर पटक दिया गया था। उनकी पेटियाँ और अन्य वस्तुएँ रास्ते पर फेंक दी गई थीं। एक पेटी के ऊपर

बैठी थकी हुई डेबोरा की गोद में वह दूसरा शिशु सो रहा था। बेनझियोन भी रो रहा था। पत्नी को सान्त्वना कैसे देना चाहिए, इसे समझने में असमर्थ बेन्यहूद स्वयं भावावेश के कारण विचित्र स्थिति का अनुभव कर रहा था। उस पर भी हुआ यह कि दस मिनट में ही आकाश काले बादलों से घिर गया और असमय ही वर्षा शुरू हो गई। उन्होंने जल्दी से वस्तुओं को इकट्ठा करके समीप स्थित एक घर की छत के नीचे रखा। एक घंटे तक भारी वर्षा हुई। पहली बारिश आ जाने के कारण प्रसन्न लोग गलियों में आकर बारिश में नाचने लगे। वृष्टि के अभाव में होने वाली समस्याओं पर लिखे गए लेख के कारण बेन्यहूद घर से निकाला गया था। अब तो वह समस्या ही दूर हो गई थी। लोगों की नजर में बेन्यहूद तो कोई देवदूत ही हो गया था। ऐसा मानते हुए वे सब उस मकान मालिक से अनुरोध करने लगे कि बेन्यहूद को फिर से रहने के लिए घर दे देना चाहिए। लोगों के अनुरोध को टालने में असमर्थ उस भूस्वामी ने इच्छा न होते हुए भी बेन्यहूद को रहने के लिए फिर से अवसर दे दिया।

सभी वस्तुओं को अंदर रखने में आधी रात हो गयी थी। उन सभी के कपड़े बारिश में गीले हो गए थे। वस्तुएँ भी गीली हो गई थीं। डेबोरा ने छोटे बच्चे को सुला दिया। ''माँ! बहुत भूख लगी है। कुछ दो'' कह कर बेन्झियोन रोने लगा। ठंड से वह काँप रहा था। डेबोरा की आँखों से आँसू निकल पड़े। उसने बेन्झियोन के लिए एक बिस्किट का टुकड़ा रखा था। वह भी गीला होने से नष्ट हो गया था। ''बेटा! आँखें बंद करके सो जाओ सोने का प्रयत्न करो। माँ तुम्हारे लिए मधुर गीत गायेगी। गीत सुनते हुए सो जाओ'' – ऐसा बेन्यहूद ने आदेश दिया। उसके शरीर को कोमलता से सहलाती हुई पति के द्वारा ही हीब्रू भाषा में लिखी हुई लोरी को डेबोरा गाने लगी। धीरे-धीरे बेन्झियोन सो गया।

इन दिनों बेन्झियोन की भाषा की प्रगति हो रही थी। किंतु वह हमेशा अकेलापन महसूस करता था। बेन्यहूद ने कभी उसे अपनी समान आयु के बच्चों से मिलने का अवसर नहीं दिया था। पुत्र हीब्रू भाषा ही सुने, कोई अन्य भाषा नहीं, बेन्यहूद का यह आग्रह ही उसका कारण था। इसलिए दिन के चौबीस घंटे बेन्झियोन अपने घर में ही बंधक के समान रहता था। घर की ऊँची दीवार को लाँघकर बाहर जाने का अवसर वह कभी नहीं पाता था। उसका कोई मित्र नहीं था। इन सबसे वह बहुत दु:खी होता था। जब वह चार वर्ष का हुआ तब डेबोरा ने दूसरे पुत्र को जन्म दिया, किंतु वह बोलता नहीं था, केवल रोता ही रहता था। यह सब देखकर बेन्झियोन निराश हो गया क्योंकि उसने सोचा था

कि छोटा भाई जन्म लेते ही बोलने लगेगा। छोटे भाई के जन्म लेने के बाद भी वह अपना अकेलापन दूर नहीं कर पाया इसलिए उसके मन में विचार आया कि मुझे मित्र बनाना चाहिए।

एक दिन घर के बगीचे में अकेले खेलते हुए बेन्झियोन ने घर की चारदीवारी से बाहर अनेक बच्चों को खेलते देखा। वह खेल बहुत उत्सुकता और आनन्द वाला था। मुझे भी वहाँ जाना चाहिए, ऐसी इच्छा बेन्झियोन के मन में जागृत हो गई। किंतु चारदीवारी का दरवाजा बन्द ही रहता था। उसे लगा कि माता अभी छोटे भाई की देखभाल में व्यस्त है इसलिए वह किसी प्रकार दरवाजे पर चढ़कर बाहर उतर गया और वहाँ खेलते हुए बच्चों के पास पहुँच गया।

''क्या मैं भी आप लोगों के साथ खेलूँ? '' हीब्रू भाषा में बेन्झियोन ने उनसे पूछा। कभी नहीं सुनी हुई भाषा को सुनकर यिड्डिष भाषा बोलने वाले उन बालकों ने विचित्र भाव से बेन्झियोन को देखा। बेन्झियोन ने वही प्रश्न दोहराया। उनमें से एक बड़े बालक ने यिड्डिष भाषा में बोला, ''अरे......... यह.......उस मूर्ख का पुत्र है.....।'' ऐसा बोलकर वह तुरन्त वहाँ से भाग गया। अन्य बालक भी उसका अनुसरण करते हुए वहाँ से भागते हुए अदृश्य हो गए। बेन्झियोन वहाँ एक ही शब्द को समझ पाया था। 'मूर्ख' है यह। ऐसा क्यों? किसलिए वे मुझे मूर्ख मानते हैं? क्यों वे मेरे साथ नहीं खेलते? यही सब सोचते हुए उसके पैरों की शक्ति समाप्त सी हो गई। वह वहीं बैठ गया। उसकी आँखों से आँसू निकल पड़े। थोड़ी देर बाद किसी आवाज को सुनकर उसने जब पीछे देखा तो वहाँ पूँछ हिलाते हुए एक छोटे से कुत्ते को देखा। बेन्झियोन ने प्रेम से उसे उठा लिया। हीब्रू भाषा में कुछ बोला। उस छोटे कुत्ते से बेन्झियोन ने पूछा, ''ऐ छोटे कुत्ते! क्या तू मेरा मित्र बनेगा? तू तो मुझे मूर्ख नहीं समझेगा?'' अभी भी वह कुत्ता उसका मुँह देखते हुए पूँछ हिला रहा था। बेन्झियोन ने प्रेम से उसका आलिंगन कर लिया। उसे हाथ में पकड़े हुए बेन्झियोन को वहीं नींद आ गई।

''बेन्झियोन......। कहाँ हो.........?'' माता-पिता द्वारा उसे पुकारे जाने की आवाज सुनकर वह जाग गया। ''यदि वे दोनों मुझे देखते हैं तो मुझे घर ले जाएँगे। मेरे इस नए मित्र पिल्ले को तो वे घर ले जाना स्वीकार नहीं करेंगे'' यह सोचकर उसने पुकारने की आवाज सुनकर भी उत्तर नहीं दिया। फिर भी कुछ देर ढूँढ़ने के बाद उन दोनों ने पुत्र को देख ही लिया।

''बेटा! किसलिए इस तरह बाहर आ गए.....? क्या तुम जानते हो कि हम दोनों किस तरह व्याकुल हो गए थे?'' - डेबोरा बोली।

"माँ! मैं बच्चों के साथ खेलना चाहता था इसलिए आ गया। किंतु वे मेरे साथ नहीं खेले, मुझे मूर्ख कह कर भाग गए। किंतु मुझे यह नया मित्र मिला है। पिताजी! मैं इसे नहीं छोडूँगा। कृपया इसे घर ले जाने की अनुमति दे दो। कृपया......।" पुत्र की दीन प्रार्थना सुनकर पिता ने कहा, "वैसा ही होगा, परंतु नियम के साथ। आप इसे हीब्रू भाषा में ही बुलाओगे, किसी अन्य भाषा में नहीं। कोई कुत्ता भी हीब्रू समझता है यह जान कर लोग भी इस भाषा की व्यावहारिकता को स्वीकार कर लेंगे........।"

"मैं वचन देता हूँ कि इसके साथ किसी अन्य भाषा में नहीं बोलूँगा पिताजी......।" बेन्झियोन बोला। वस्तुत: तो वह एक ही भाषा जानता था। अत: उसके लिए हीब्रू में बोलना कष्टकर नहीं था।

उसने वहीं उस बाल शुनक (पिल्ले) का नाम स्पीडी रख दिया। जीवन में पहला मित्र पा कर बेन्झियोन बहुत प्रसन्न था।

●●●●

स्पीडी एक अच्छा कुत्ता था। कम समय में ही वह बेन्यहूद के परिवार का सदस्य बन गया। बेन्झियोन ने उसे अच्छी तरह हीब्रू भाषा सिखाई। अब वह जाओ, आओ, उठो, बैठो, बोलो, पकड़ो इत्यादि आज्ञाओं को समझकर उसी प्रकार पालन करता था। स्पीडी बेन्झियोन का केवल मित्र ही नहीं बल्कि उसका अंगरक्षक भी था। यद्यपि बेन्यहूद कुत्ते को नहीं पसन्द करता था तथापि पुत्र के लिए वह किसी प्रकार उसे सहन करता था। पुत्र ने कुत्ते को भी हीब्रू भाषा सिखाई, यह बेन्यहूद के लिए भी अभिमान का विषय था।

●●●●

प्राय: छह मास बाद एक सुहावनी सुबह बेन्झियोन घर से निकला। अंगरक्षक 'स्पीडी' उसके साथ था ही। "मित्र! मौसम कितना सुन्दर है न?" बेन्झियोन ने अपने मित्र स्पीडी से कहा। 'स्पीडी' ने भी इस बात को स्वीकार करते हुए सिर हिलाया। मार्ग में दोनों तरफ देखते हुए वे दोनों कुछ दूर तक चले गए। वहाँ कुछ बालक खेलते हुए दिखाई दिए। दूर से उनके कपड़ों को देखकर लगता था कि वे जेरुसलेम नगर के अत्यंत रूढ़िवादी लोगों के बच्चे थे। बेन्झियोन उनके पास चला गया। उसके साथ आए हुए कुत्ते को देखकर वे बच्चे डर गए।

"मत डरो, मत डरो। यह मित्र है। यह हीब्रू भाषा समझता है।" उन बच्चों के मन में प्रभाव पैदा करके उनके साथ मित्रता करने का यही अवसर है, ऐसा बेन्झियोन ने सोचा। बच्चों का समूह उन दोनों को घेरकर खड़ा था।

''स्पीडी! आओ....।'' उसने बोला। कुत्ता पास आ गया। 'बैठो' कहने पर वह जल्दी से बैठकर जीभ से अपने स्वामी के पैरों को चाटने लगा। 'स्पीडी बोलो........।' ऐसा कहने पर 'स्पीडी' जोर से भौंका। वह आवाज सुनकर बच्चे दो-तीन कदम पीछे हो गए।

''मत डरो। स्पीडी कुछ नहीं करता। यह बहुत अच्छा है। यदि चाहो तो आप लोग भी इसे छू सकते हो......।'' - अब तो ये लोग निश्चित ही आकर्षित हो जाएँगे। ऐसा सोचकर बेन्झियोन बोला। किंतु अचानक वहाँ क्या हुआ......? उनमें से एक बालक ने झुककर एक पत्थर उठाकर कुत्ते पर फेंका। बेन्झियोन आश्चर्य से सिर उठाकर जब तक समझ पाता तब तक उन सभी ने उन दोनों के ऊपर पत्थरों की वर्षा कर दी। ''मूर्ख.....! पवित्र हीब्रू भाषा को कुत्ते की भाषा बना दिया इसलिए उसका परिणाम भोगो.....।'' बेन्झियोन प्रयास करके वहाँ से उठा। साहस करके किसी तरह उन बच्चों का चक्रव्यूह भेदकर घर की तरफ बहुत तेजी से भागा। जब वह घर पहुँचा तब वहाँ माता नहीं थी। लेखन कार्य में मग्न बेन्यहूद ने सिर उठाकर घबराये हुए पुत्र से पूछा- ''बेटा, क्या हुआ.....?''

''उन्होंने हम दोनों को पत्थरों से मारा.......।'' ऐसे बोलते हुए बेन्झियोन को याद आया कि वह उन लोगों के बीच में ही कुत्ते को अकेला छोड़ आया है।

''किंतु वे कौन लोग हैं.......?'' पिता का यह प्रश्न सुने बिना ही वह वहाँ दौड़ गया जहाँ यह घटना घटी थी। अब वह स्थान निर्जन था। कोई भी बालक वहाँ नहीं था। बेन्झियोन के मन में किसी अनिष्ट की आशंका होने लगी। पिल्ले को खोजते हुए उसने पत्थरों के ढेर को देखा। पत्थरों के ढेर को जब उसने हटाया तो खून से सना हुआ कुत्ता उसे दिखाई दिया। ''स्पीडी! उठ, चल घर चलते हैं......।'' वह जोर से चिल्लाया। किंतु कुत्ता नहीं हिला। उसका शरीर हाथों में उठाकर किसी तरह बेन्झियोन घर पहुँचा।

घर के बगीचे के एक कोने में उस कुत्ते को गाड़ने के लिए बेन्यहूद ने एक गड्ढा बनाया। कुत्ते के शरीर को लेकर उसके पास जाते हुए बेन्झियोन के नेत्रों से आँसू बह रहे थे। पीछे आ रही माता से उसने पूछा - ''माँ! इस बेचारे ने उन लोगों का क्या बुरा किया था?''

''बेटा! आप कुत्ते को हीब्रू भाषा में सम्बोधित कर रहे थे और उनकी दृष्टि में वह घोर अपराध था......।'' डेबोरा ने कहा।

"किंतु वह कैसे?" पुत्र के इस अगले प्रश्न का उत्तर डेबोरा के पास नहीं था।

बेन्यहूद ने कहा "आओ बेटा! कुत्ते के शरीर को यहाँ रखो। फिर हम मिट्टी से गड्ढे को भरते हैं......।

"नहीं पिताजी! यह मैं नहीं कर सकता। मैं अपने प्रिय कुत्ते को नहीं छोड़ सकता।"

"बेटा! यह तो अनिवार्य है। विलम्ब मत करो......" बेन्यहूद उसके हाथों से कुत्ते के शरीर को लेकर गड्ढे में रखकर मिट्टी भरने लगा। यह सब देखने में असमर्थ बेन्झियोन दोनों हाथों से अपना मुँह ढक कर खड़ा हो गया।

कार्य समाप्त करके बेन्यहूद ने पूछा," बेटा! स्पीडी के शव को हमने जहाँ दफन किया है उस स्थान पर यह शिला होगी। इसके ऊपर मैं क्या वाक्य लिखूँ?"

"पिता जी.......। मैं सोचता हूँ कि आप ऐसा लिखो – "यहाँ सो रहा है 'स्पीडी बेन्यहूद' नाम का कुत्ता, जिसने जीवन में किसी को पीड़ित नहीं किया परंतु दुष्ट बच्चों की क्रूरता से वह मार दिया गया।"

" नहीं बेटा! मैं तो कुछ और ही लिखना चाहता हूँ। यही अत्यंत उचित है....." ऐसा बोलते हुए बेन्यहूद ने खड़िया से बड़े अक्षरों में शिला के ऊपर लिखा – "यहाँ सो रहा है प्रथम 'हीब्रू शुनक', जिसने प्रथम हीब्रू भाषा बोलने वाले अपने स्वामी बालक की सेवा में अपने प्राण अर्पित कर दिए।"

जेल में कोमल बच्चे

दिन बीतते गए। बेन्यहूद के कष्ट बढ़ते ही जा रहे थे। आय का स्रोत कुछ भी नहीं था और व्यय दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा था। उसका दूसरा पुत्र 'अविचायिल' जब डेढ़ साल का था तभी डेबोरा पुनः गर्भवती हो गई।

पत्रिका के संपादन, मुद्रण और प्रकाशन में मग्न बेन्यहूद पत्नी तथा पुत्रों पर बिलकुल ध्यान नहीं दे पाता था। इसी प्रकार कुछ महीने बीत गए। इन दिनों में डेबोरा का हीब्रू भाषा ज्ञान भी अच्छी तरह से विकसित हो गया था। दोनों पुत्र भी धाराप्रवाह रूप से केवल हीब्रू भाषा ही बोलते थे। वह परिवार वास्तविक रूप से हीब्रू घर के रूप में बदल गया था।

"प्रिय.....! आप कुछ दिनों के लिए रूस क्यों नहीं चले जाते.....?" एक दिन डेबोरा ने पति से कहा।

"किस लिए.......?" बेन्यहूद ने पूछा।

"आपके श्वसुर के मन में आपके प्रति बहुत आदर है। हमारे द्वारा किया जाने वाला हीब्रूभाषा के पुनरूज्जीवन का कार्य उन्हें भी प्रिय ही है, अतः वे हमारी कुछ न कुछ सहायता अवश्य करेंगे।"

"हाँ! आपका कहना तो सही है।" थोड़ा सोचकर बेन्यहूद बोला - "इसके साथ ही यदि वहाँ जाऊँगा तो पत्रिका के लिए बहुत से नये ग्राहक भी मिल सकते हैं। किंतु इसके लिए दो-तीन महीनों का समय अपेक्षित होगा......"

"तो उससे क्या.......?" डेबोरा बोली।

"मेरी अनुपस्थिति में पत्रिका की क्या स्थिति होगी?" बेन्यहूद ने कहा। डेबोरा ने यह तो सोचा ही नहीं था। फिर भी, उसकी आँखों में आँखें डालकर डेबोरा बोली - "यदि आप अनुमति दें तो उतने दिनों तक पत्रिका संचालन का भार मैं वहन करूँगी.....।"

यह तो बेन्यहूद ने भी कभी नहीं सोचा था। डेबोरा की सामर्थ्य के विषय में उसके मन में कोई संशय नहीं था। इन दिनों उसका भाषा ज्ञान भी

पर्याप्त विकसित हो गया था। बेन्यहूद ने कहा, "हो सकता है। मैं भी डाक द्वारा लेख भेज सकता हूँ। दो-तीन कार्यकर्ताओं की सहायता से आप यह कार्य भार सँभाल सकती हैं। किंतु प्रिये! दोनों पुत्रों का उत्तरदायित्व तुम्हारे ऊपर है। इसी के साथ अभी आपके गर्भकाल का सातवाँ माह भी चल रहा है। यह सब आप कैसे संभालेंगी?"

"दो-तीन महीने किसी भी तरह सँभालूँगी? आपके लौटने पर समस्याएँ तो दूर हो जाएँगी?" विश्वास के साथ डेबोरा बोली।

बेन्यहूद का मास्को जाना निश्चित हो गया।

अगले दिन सुबह जब बेन्झियोन उठा तब अपने घर के अंदर उसने शोर-शराबा सुना। घबराकर वह अपने कमरे से अपनी माता के कमरे की तरफ भागा। किंतु माता के कमरे का दरवाजा बन्द था। उसे सामने ही उसकी परिचित दाई दिखी। 'माँ....माँ....!' इस प्रकार जोर-जोर से चिल्लाते हुए बेन्झियोन को शान्त करके वह बोली, "बेटा! बधाई हो। तुम्हारी छोटी बहन का जन्म हुआ है।"

आश्चर्य से बेन्झियोन ने कहा "ऐसा.....? क्या मैं अभी उसे देख सकता हूँ?"

"थोड़ी देर बाद देख सकते हो, वह अभी सोई है......।" किंतु बेन्झियोन के मन को विश्वास नहीं हुआ। उसने पूछा- "अरे बहन! कल ही माँ ने मुझे कहा था कि दो महीने बाद मेरी बहन का जन्म होगा।"

"ठीक कह रहे हो बेटा! हमने भी वैसा ही सोचा था। किंतु तुम्हारी बहन तुम्हारी प्रतीक्षा को सहन न कर पाई। इसलिए दो महीने पहले ही आज सुबह इस संसार में आ गई।" - हँसते हुए उस दाई ने कहा।

इसी बीच अंदर से शिशु के रोने की आवाज सुनाई दी। "बेटा! थोड़ी देर के बाद ही मैं तुम्हें बुलाती हूँ। तब बहन को देखना" ऐसा कहकर वह दाई अंदर चली गई।

"मेरी छोटी बहन का जन्म हुआ है। मेरी छोटी बहन का जन्म हुआ है....।" मन ही मन में बेन्झियोन बोला। उसके मन में विचार आया "अहो! कैसा शुभ समाचार है। इसे सभी को बताना चाहिए।" वह शीघ्रता से पास के कमरे में गया। वहाँ सोये हुए अपने दो वर्ष के भाई को उठा कर बोला - "अविचायिल... अविचायिल.....। उठ। हम दोनों की छोटी बहन का जन्म हुआ है।"

परंतु जागते हुए भी उसमें कोई हलचल दिखाई नहीं दी। उसने आँखें खोलकर भाई को देखा और फिर से आँखें बंद कर चादर ओढ़ कर सो गया। निराशा से बाहर आकर बेन्झियोन ने रास्ते पर देखा। वहाँ कुछ लोग घूम रहे थे। उन्हें संकेत करता हुआ बोला – ''अरे, मेरी छोटी बहन का जन्म हुआ है....।'' किसी भी व्यक्ति ने कोई प्रतिक्रिया नहीं की। तभी कहीं से आकर घर में प्रवेश करते हुए पिता को उसने देखा। वह जल्दी से पिता के पास जाकर बोला, ''पिता जी! शुभ समाचार है। मेरी छोटी बहन का जन्म हुआ है।''

''ऐसा क्या? मैं बहुत खुश हूँ....।'' – ऐसा बोलते हुए बेन्यहूद उसकी ठोढ़ी को छूकर उसे बधाई देकर अपने कमरे में जाकर कुछ पत्रों को लेकर फिर से जाने के लिए तैयार हो गया।

''पिता जी....! क्षण भर प्रतीक्षा करो अभी बहन को देखने के पश्चात् चले जाना....।'' बेन्झियोन बोला।

''किंतु अभी मेरे पास समय नहीं है। मुद्रणालय जाना है। मैं शाम को आकर देखता हूँ बेटा! आप सावधान रहना कि कोई भी तुम्हारी बहन के सामने हीब्रू भाषा के अतिरिक्त कोई अन्य भाषा न बोले। यह तुम्हारा ही उत्तरदायित्व है।'' ऐसा बोलकर शीघ्रता में वहाँ से दौड़ता हुआ सा बेन्यहूद निकल गया।

''अफसोस! पिताजी को तो हमसे ज्यादा हीब्रू भाषा ही प्रिय है....।'' बेन्झियोन के मन में ऐसा विचार उत्पन्न हुआ। निराशा से वह माता के कमरे के पास गया।

''अंदर आ जा बेटा! बहन को देख....।'' दाई ने उसे बुलाया। उसने अंदर प्रवेश किया। वहाँ सोई हुई दुर्बल शरीर वाली माता को देखा। उसके पास में रंगीन कपड़े में अभी जन्म लिया शिशु सोया था। ''देख बेटा! यह तेरी नई छोटी बहन है....।'' डेबोरा बोली। आश्चर्य से बेन्झियोन शिशु को देखते हुए बोला – ''कितनी सुंदर है! माँ, इसके अंग कैसे छोटे-छोटे हैं....! इसका क्या नाम होगा....?''

''हमने सोचा है कि इसका नाम 'येमिमा' होगा। तुम क्या सोचते हो....?'' – डेबोरा बोली।

''येमिमा...! सुंदर नाम है। अच्छा है।'' – छोटी बहन को आँखों से ही जैसे रस पीता हुआ और देखता हुआ बेन्झियोन बोला।

दाई ने शिशु को हाथों में उठा लिया। धीरे-धीरे झुलाती हुई अरबी भाषा की लोरी वह गाने लगी। शीघ्रता से बेन्झियोन उठा और बोला – ''बहन!

मेरी छोटी बहन केवल हीब्रू भाषा ही सुने। अन्य भाषा नहीं। इसलिए आपको यह गीत नहीं गाना चाहिए....।''

''देखो डेबोरा! हमें देखने के लिए दूसरा आरक्षक भी आ गया.....।'' – आश्चर्य से उस नर्स ने कहा। बेन्झियोन के जन्म के समय भी उसी ने डेबोरा की सेवा की थी। वही सब सोचते हुए वह डेबोरा से बोली – ''डेबोरे! अब तो मैं कुछ हीब्रू शब्द भी जानती हूँ, किंतु उस समय मेरी स्थिति कैसी थी यह ध्यान है या नहीं....?'' उस समय का स्मरण करती हुई डेबोरा भी हँस दी।

●●●●

'दि डीर्' पत्रिका की लोकप्रियता बढ़ती जा रही थी। ग्राहकों की संख्या में भी वृद्धि दिखाई दे रही थी। पर तभी दूसरा संकट उपस्थित हो गया। केवल धार्मिक विषयों में ही प्रयोग की जाने वाली हीब्रू भाषा 'दि डीर्' पत्रिका में नित्य व्यवहारों का वर्णन करने के लिए उपयोग की जा रही है, इससे कई यहूदी धर्मगुरु असंतुष्ट थे। इसलिए उन्होंने उस पत्रिका के विषय में दुष्प्रचार किया। उन्होंने अपने यहूदी शिष्यों को आदेश दिया कि इस पत्रिका को मत खरीदो। इसको पढ़ना भी पाप है। धर्मभीरु सामान्य लोगों ने इन सब बातों को मानकर पत्रिका को खरीदना बन्द कर दिया। ग्राहकों के अभाव में पत्रिका का संचालन ही कठिन हो गया।

बेन्यहूद की आर्थिक स्थिति अब दुर्गति की उच्च सीमा तक पहुँच गई। पति-पत्नी और तीनों बच्चे दिन में एक बार भी भर पेट भोजन नहीं पाते थे। अभी-अभी बच्चे को जन्म देने के बाद अपने आराम के समय को कुछ ही दिनों में समाप्त कर डेबोरा भी घर के कार्यों में व्यस्त हो गई। कपड़ों के ऊपर धागों से कशीदाकारी की कला उसने सीख ली थी। उसे जो समय मिलता उसमें उस काम को करते हुए थोड़ा बहुत धन कमाने के लिए उसने प्रयत्न करना शुरू किया। किंतु उससे भी कुछ अधिक कार्य सिद्ध नहीं हो रहा था। सहायता की प्रार्थना के लिए बेन्यहूद का रूस जाना यद्यपि निश्चित था फिर भी समय से पहले पत्नी का प्रसव होने के कारण उसने वहाँ जाना टाल दिया था। अब तो वहाँ जाने के लिए इकट्ठा किया गया धन भी खर्च हो गया था। दूसरा मार्ग न देखते हुए डेबोरा ने पति से कहा – ''प्रिय! किसी से कुछ ऋण लेकर रूस चले जाओ। बच्चे प्रतिदिन दुर्बल होते जा रहे हैं। उनके रोने से पूरा दिन घर गुंजायमान रहता है। यह आप जानते ही हैं। आपकी खाँसी भी बढ़ रही है.....।''

दीर्घ चिंता में मग्न बेन्यहूद से डेबोरा ने फिर कहा, ''पास के बालिकाओं के विद्यालय में फ्रेंच भाषा की शिक्षिका के रूप में वहाँ के लोग

मुझे नियुक्त करना चाहते हैं। यदि आप अनुमति देंगे तो कल से मैं वहाँ जाऊँगी। हमारी आर्थिक स्थिति भी कुछ ठीक हो जाएगी.......।''

''किंतु बच्चों की क्या व्यवस्था होगी? जब तुम विद्यालय जाओगी तब ये कहाँ और कैसे रहेंगे?'' बेन्यहूद ने पूछा।

''अविचायिल और येमिमा को मैं अपने साथ विद्यालय ले जाऊँगी और बेन्झियोन को भी पढ़ने के लिए विद्यालय भेजा जाए।''

''कभी नहीं......।'' बेन्यहूद ने दृढ़ स्वर में कहा – ''अपने पुत्र को बाहर के प्रभाव से दूषित होने के लिए मैं कोई अवसर नहीं दूँगा। यदि वह विद्यालय जायेगा तो वहाँ पूरे दिन फ्रेंच भाषा ही सुनाई देगी। इतने वर्षों का मेरा परिश्रम धूल में मिल जाएगा। मेरे बच्चे कभी घर से बाहर न जाएँ और न कभी अन्य भाषा के प्रभाव से दूषित हों....।''

पति के स्वभाव को डेबोरा अच्छी तरह से जानती थी। इसलिए उस समय वह चुप हो गई। किंतु कुछ समय के बाद खुद की और बच्चों की खराब अवस्था का उसने फिर से वर्णन किया। सब सुनकर अंत में बेन्यहूद बोला – ''वैसा ही करो डेबोरे। आप विद्यालय जाओ। बच्चों को भी ले जाओ। किंतु मुझे वचन दो कि तुम बच्चों को दूसरे बच्चों से दूर ही रखोगी और अन्य भाषा बोलने वाले किसी भी बच्चे को इन बच्चों से मिलने का अवसर नहीं दोगी।''

ऐसे वचन का परिणाम जानते हुए भी डेबोरा ने उसे स्वीकार कर लिया।

●●●●

दूसरे दिन सुबह ही बेन्यहूद ने यात्रा की तैयारियाँ शुरू कर दीं। डेबोरा तीनों बच्चों के साथ बालिकाओं के विद्यालय गई। विद्यालय के बाहरी भाग में एक कमरा था। वह कमरा विद्यालय द्वारा भण्डार के रूप में प्रयोग किया जाता था। वहाँ टूटी कुर्सियाँ, मेजें और अन्य प्रकार के अनुपयोगी सामान इकट्ठे करके रखे हुए थे। सूर्य का प्रकाश भी कम ही था। धूल से भरे हुए उस कमरे के एक कोने में अपनी शाल को चादर की तरह फैला कर उसके ऊपर दो महीने की पुत्री येमिमा को सुलाकर डेबोरा अपने दोनों पुत्रों से बोली, 'बेटा, अपनी बहन का ध्यान रखना। मैं शीघ्र ही लौट कर आती हूँ।'

उसके बाद कमरे में बाहर से ताला बंद करके कक्षा में जाकर उसने पढ़ाया। कालांशों के बीच जब थोड़ा सा समय होता, वह जल्दी से बच्चों के पास आ जाती थी। बीच में कुछ खाने की वस्तु भी लाकर देती थी। इस कारागार में बालकों ने क्षण-क्षण गिनते हुए किसी तरह समय बिताया। उसके बाद

सप्ताह भर प्रतिदिन छः घण्टों के लम्बे समय के लिए उस धूल और अन्धकार से भरे गंदे कमरे में उन बच्चों के रखा गया।

''माँ! हमें इस प्रकार बन्द क्यों रखती हो....?'' एक दिन बेन्झियोन ने माता से पूछा।

''हीब्रू भाषा बोलने वाले मेरे बच्चों का काई अपहरण न कर ले।'' हँसते हुए डेबोरा बोली।

''इसका मतलब अन्य भाषा बोलने वाले हीब्रू भाषा बोलने वालों का अपहरण कर लेते हैं? '' बेन्झियोन बोला।

''वैसा नहीं है....।'' आगे क्या बोलना चाहिए यह न समझते हुए डेबोरा चुपचाप खड़ी रह गई।

''अरे, कितनी शर्मनाक बात है यह!'' बेन्झियोन ने घृणा से कहा। कुछ सोचकर उसने फिर से कहा – ''इससे तो यदि कोई मेरा अपहरण कर ले तो वही अच्छा होगा क्योंकि तब मैं बाहर जा सकता हूँ। मित्र बना सकता हूँ....। किंतु तब आप दु:खी हो जाएँगी। फिर पाँच–छः वर्षों के बाद कभी आकर चिंता में डूबी हुई आपके कान के पास मैं मुँह रखकर 'माँ! मैं आ गया हूँ।' ऐसे चिल्लाऊँगा, तो आप कितनी रोमांचित हो जाओगी। इसलिए माँ....। सच ही कह रहा हूँ, मैं चाहता हूँ कि मेरा अपहरण हो जाए। हे भगवान, कोई मेरा अपहरण कर ले, आज ही....।'' आँखों से बहती आँसुओं की धारा को सहन करने में असमर्थ डेबोरा शिशु को उठाने के बहाने वहाँ से मुँह फिरा कर चली गई।

●●●●

उस रात पति के सिर में धीरे–धीरे उँगली चलाते हुए डेबोरा बोली, ''प्रिय! आपने कभी अन्दाजा लगाया है कि आपका यह दुराग्रह भविष्य में किस प्रकार का दुष्परिणाम देगा? मुझे लगता है कि 'जेल के बन्धन में हमारा पूरा बचपन इन दोनों ने बरबाद किया' भविष्य में ऐसा सोचकर बेन्झियोन हम दोनों के साथ द्वेष करेगा। इसलिए ऐसा दुराग्रह मत करो। उसे विद्यालय जाने दो। मैं शपथ लेती हूँ कि हमेशा मैं बच्चों के साथ हीब्रू भाषा में ही बोलूँगी, अत: उनका हीब्रू भाषा का संस्कार किसी प्रकार भी शिथिल नहीं होगा।''

बेन्यहूद के मुँह से कोई शब्द नहीं निकला। वह ऐसे शान्त रहा जैसे पत्नी के वाक्य उसने नहीं सुने। किंतु गहरे चिंतन में तो वह मग्न था ही।

मित्र से ऋण लेकर दूसरे दिन जब वह रूस जाने के लिए नाव में चढ़ा तब उसे विदा करने के लिए नौकापत्तन पर आई हुई पत्नी से बोला – ''ठीक है

डेबोरा! बेन्झियोन को विद्यालय भेज दो। बच्चों के विषय में सावधान रहना। मैं अपना कार्य संपन्न करूँगा....।'' ऐसा बोलकर हाथ हिलाकर उसने विदा ली।

''तुम्हारी यात्रा शुभ हो'' – डेबोरा ने भी उसे स्नेह से विदा किया।

बेन्यहूद के जाने के दूसरे दिन ही डेबोरा ने बेन्झियोन का प्रवेश विद्यालय में करा दिया। विद्यालय के प्रधानाचार्य उसके पूर्व परिचित थे ही। उन्होंने सरलता से उसे प्रवेश दे दिया। साढ़े पाँच साल के बेन्झियोन को प्रथम कक्षा में प्रवेश प्राप्त हुआ।

डेबोरा प्रतिदिन पुत्र को उसके विद्यालय छोड़कर स्वयं अविचायिल और येमिमा को लेकर बालिका विद्यालय पढ़ाने जाती थी। वहाँ साढ़े तीन साल का अविचायिल ही येमिमा का संरक्षक था। शाम तक विद्यालय में पढ़कर वहाँ से घर आकर डेबोरा घर के कामों को निपटाती थी। रात को बहुत देर तक जागते हुए बेन्यहूद के लिखे हुए और इकट्ठे किए हुए सभी प्रकार के लेखों को वह पढ़ती थी। यहूदियों के इतिहास को भी उसने गंभीरता से पढ़ा। पत्रिका के संपादन का कार्य तो उसका था ही। स्वयं के हीब्रू ज्ञान को बढ़ाने के लिए प्रतिदिन नियमित तथा संकल्पपूर्वक कुछ पढ़ती थी।

विद्यालय में यद्यपि डेबोरा फ्रेंच भाषा की शिक्षिका थी किंतु पति के जीवन के उद्देश्यभूत कार्य में स्वयं का भी योगदान करने की इच्छा से उसने स्वयं प्रेरणा से छात्रों को हीब्रू भाषा पढ़ाना आरंभ कर दिया। बेन्यहूद ने हीब्रू माध्यम से हीब्रूशिक्षण विधि को जैसे शुरू किया था, उसी विधि का अनुसरण करके उसने पढ़ाया।

अन्य भाषा के एक भी शब्द का उपयोग कक्षा में न करते हुए अभिनय, चित्र आदि की सहायता से उसने सभी शब्दों का बोध कराया। बाद के समय में यही शिक्षण विधि भाषा शिक्षण विधियों में अत्यंत शीघ्र फलदायक विधि होने के कारण पूरे संसार में स्वीकृत हुई। बेन्यहूद नियमित रूप से पत्नी को पत्र लिखता था। डेबोरा भी अपनी और बच्चों की प्रगति पत्र द्वारा उसे सूचित करती थी। यद्यपि उसे प्रतिक्षण विविध प्रकार के कष्टों को सहन करना पड़ता था फिर भी वह प्रेरणात्मक विषयों को ही पत्रों में उल्लेख करते हुए पति के उत्साह को बढ़ाने के लिए प्रयत्न करती थी। ''आप बिना किसी चिंता के अपने कार्यों को संपन्न करके ही लौटना। यहाँ के अपेक्षित सभी कार्यों को बिना भूल चूक के मैं पूरा करूँगी। चिंता मत करना।'' ऐसा वह प्रत्येक पत्र में लिखती थी।

एक वर्ष में तीन कक्षा

मास्को के पास ग्लूबोकिया नगर में श्वसुर के घर में बेन्यहूद का हार्दिक स्वागत हुआ। सास ने विशेष आदर के साथ उसका अतिथि सत्कार किया। डेबोरा की छोटी बहन पोला, जिसका कि पहले भी बेन्यहूद से बहुत स्नेह था, उसने भी जीजाजी का आत्मीय स्वागत किया। इस समय वहाँ भी हीब्रू भाषा में ही बेन्यहूद ने बातचीत की। उसके मुँह से सारा वृत्तान्त सुनकर श्वसुर योनस ने कहा – ''पुत्र! आपने ठीक नहीं किया। आप लोगों की ऐसी दुर्दशा है। आपने हमें पहले सूचित क्यों नहीं किया? खैर छोड़ो, अब तो कहो! मेरी सहायता तो आपके लिए है ही....।''

इसके बाद योनस नगर में अपने मित्रों और हितैषियों से मिला। बेन्यहूद को साथ ले जाकर उसका परिचय कराया। बेन्यहूद ने उनके सामने अपनी योजनाओं का वर्णन किया। बहुत सारे लोगों ने उसके कार्य में सहायता करने के लिए स्वीकृति दी। 'दि डीर' पत्रिका के बहुत सारे ग्राहक भी बने। उसके विचारों को सुनकर बहुत से लोगों ने कहा, ''आप बिना किसी चिंता के पत्रिका का प्रकाशन करो। शब्दकोश का निर्माण भी शुरू करो। हम सहायता करेंगे।''

●●●●

बेन्झियोन ने सोचा था कि विद्यालय में प्रवेश होने पर नए लोक में प्रवेश का अनुभव प्राप्त होगा। स्वच्छंद रूप से विहार करूँगा। किंतु एक सप्ताह के अंदर ही वह विद्यालय में भी ऊबने लगा। अपरिचित भाषा में शिक्षक कुछ पढ़ाते और अपरिचित भाषाओं में अन्य छात्र कुछ बोलते थे। वह किसी बात का अर्थ नहीं समझता था। चुप ही बैठा रहता था। किंतु उसकी परिश्रमशीलता को देखकर शिक्षक संतुष्ट हो गए। वे बेन्झियोन को समझाने का प्रयास करते थे।

साथ में पढ़ने वाले बच्चे बेन्झियोन को परेशान करने का प्रयास करते थे। वे उसे विचित्र जन्तु के समान देखते थे। 'गूँगा' 'बहरा' 'मूर्ख' इत्यादि सम्बोधन करते हुए उपहास करते थे। फिर भी बेन्झियोन ने उनका मन जीतने

और उनसे मित्रता करने के लिए बहुत प्रयत्न किया। इसके लिए उसने उनमें से किसी बालक को अपनी पेंसिल उपहार के रूप में दे दी और किसी को अपना सुंदर लेखनपत्र दे दिया। किसी को अपने भोजन में से भी हिस्सा दिया।

पुत्र के द्वारा विद्यालय में ले जाई जाने वाली वस्तुओं में से धीरे-धीरे एक-एक गायब होती जा रही थीं, यह डेबोरा ने जब देखा तो उस विषय में पुत्र से पूछा। ''मैं नहीं जानता, वस्तुएँ कैसे चोरी हो जाती हैं'' पुत्र के इस कथन पर डेबोरा को विश्वास नहीं हुआ। बार-बार पूछने पर उसने वास्तविक कारण जाना। बेन्झियोन ने माता से कहा, ''माँ! विद्यालय में सब के मित्र हैं। मेरा एक भी मित्र नहीं है। न कोई मेरे साथ बात करता है। मैं कम से कम एक मित्र बनाना चाहता हूँ....।''

''पेंसिल, कागज का टुकड़ा अथवा रूमाल देकर मेरा पुत्र मित्र बनाना चाहता है। खेद है! कितना करुणाजनक है यह....।'' सोचते हुए डेबोरा का मन भर आया।

एक दिन बेन्झियोन विद्यालय में बैठा था। गणित का कालांश था। गणित के अध्यापक अपनी अनाकर्षक शैली में कर्कश कण्ठ से फ्रेंच भाषा में गणित पढ़ा रहे थे। नापसंद विषय और वह भी अपरिचित भाषा में, पाँच मिनट में ही बेन्झियोन ऊब गया। आलस्य का अनुभव करते हुए धीरे-धीरे उसकी आँखें बंद हो गई।

थोड़ी देर बाद अपने चारों ओर कोलाहल सुनकर वह जागा, तो देखा कि सभी बच्चे उसे देखकर आपस में हँस रहे हैं। शिक्षक के मुख पर भी उपहास के भाव थे। ''अरे क्या हो गया इनको?'' ऐसा सोचकर नीचे गीलेपन का अनुभव करते हुए उसने जब कुर्सी देखी तब उसे समझ में आया कि क्या घटित हुआ था। अफसोस! नींद में होने के कारण बेन्झियोन को वहीं लघुशंका हो गई थी। उसकी पैंट गीली थी। शर्म और संकोच से खिन्न बेन्झियोन जल्दी से अपना बस्ता लेकर कक्षा से बाहर भागा। घर पहुँचने तक एक बार भी उसने पीछे मुड़कर नहीं देखा। पीछे से आ रही ठहाकों की आवाजों से डरा हुआ वह हवा की गति से दौड़ता हुआ आया और घर की देहली पर गिर गया। उस समय माता घर पर नहीं थी। उसे वहीं नींद आ गई।

जो कुछ घटित हुआ उसे सुनकर क्या करना चाहिए, यह डेबोरा की समझ में ही नहीं आया। पति भी नहीं थे इसलिए वह असहाय थी। बहुत बार

समझाने पर भी बेन्झियोन विद्यालय जाने के लिए तैयार नहीं हुआ। अन्य छात्रों की उपहासपूर्ण दृष्टि का सामना करने का साहस उसमें नहीं था। एक सप्ताह तक डेबोरा प्रतिदिन उसे विद्यालय भेजने का प्रयत्न करके विफल हो गई। बेन्झियोन ने घर से बाहर एक कदम भी रखना जब छोड़ दिया और डेबोरा को कोई उपाय नहीं सूझा, तब उसने विद्यालय जाकर प्रधानाचार्य से निवेदन किया। वह कुशल प्रधानाचार्य उस दिन शाम को स्वयं डेबोरा के घर आया। जैसे वह कुछ न जानते हों, ऐसा प्रदर्शित करते हुए बेन्झियोन के साथ उन्होंने बातचीत शुरू की, "बेन्झियोन! कैसे हो? एक सप्ताह से मैंने तुम्हें स्कूल में नहीं देखा? सब कुछ ठीक तो है?"

"ठीक तो है। परंतु मैं कभी विद्यालय नहीं आऊँगा।"

"ऐसा क्यों?"

"दूसरे बच्चे मुझे पसंन्द नहीं करते। वे मेरा मजाक उड़ाते हैं। जैसे उस दिन...." बेन्झियोन झिझका।

"ओह! वैसा तो मेरे बचपन में भी घटित हुआ था जब मैं तो तुमसे भी बड़ा था। बाद में मुझे समझ में आया कि पर्याप्त मात्रा में भोजन नहीं किया अतः दुर्बलता के कारण ऐसा हो गया। इसलिए तब से मैं पर्याप्त भोजन करता हूँ। आप भी अगर ठीक से भोजन करोगे तो फिर कभी आपके जीवन में वैसी घटना नहीं होगी। आप तो बुद्धिमान छात्र हैं। मैं सोच रहा था कि क्या आप भी स्वयं को वैसा ही मानते हो....?"

प्रधानाचार्य के वचनों से आत्म विश्वास प्राप्त करके दूसरे दिन फिर से बेन्झियोन विद्यालय गया। द्वितीय कक्षा में ही उसने प्रवेश किया। प्रधानाचार्य की सूचना का पालन करते हुए अन्य छात्र भी चुप बैठे थे इसलिए बेन्झियोन ने किसी कष्ट का अनुभव नहीं किया। समय के साथ बेन्झियोन ने वहाँ सामंजस्य स्थापित कर लिया। पढ़ाई में भी उसने प्रगति दिखाई। अब डेबोरा संतुष्ट हो गई।

●●●●

मास्को से लौट कर बेन्यहूद ने पुत्र की प्रगति को जानकर संतोष अनुभव किया। घर में तो हीब्रू भाषा में ही बातचीत करनी है, इस नियम का डेबोरा ने कठोरता से पालन किया था इसलिए अन्य भाषाओं का प्रभाव होने पर भी उसकी हीब्रू भाषा स्वच्छ और निष्कलंक रूप से सुरक्षित थी। इसके लिए उसने डेबोरा की प्रशंसा की। शीघ्र ही उसने अपने दूसरे पुत्र अविचायिल को भी विद्यालय भेजने के लिए स्वीकृति दे दी किंतु यह निर्देश कर दिया था कि

विद्यालय के अनौपचारिक समय में जब वे दोनों बच्चे मिलेंगे, तब उन दोनों को हीब्रू भाषा में ही बात करनी है। उन दोनों ने उसे स्वीकार किया तथा श्रद्धा से अनुसरण भी किया।

●●●●

बेन्झियोन का तुर्की भाषा का अध्यापक बहुत कठोर था। छात्रों को दण्डित करने के विषय में वह सोचता था कि अधिक दण्ड देने का अधिक फल प्राप्त होगा। अत: वह प्रतिदिन किसी न किसी छात्र को मारता था। बेन्झियोन उससे बहुत चिढ़ता था। एक बार विद्यालय में तुर्की भाषा के कालांश में बेन्झियोन ने पास में बैठे हुए मित्र के कान में कहा, ''देखो इस शिक्षक का डण्डा जैसा टेढ़ा है वैसा ही उसका कण्ठ भी टेढ़ा है।'' हँसी को रोकने में असमर्थ वह बालक जोर से हँस दिया। अन्य कुछ बालक भी उसका अनुसरण कर हँसने लगे।

''क्या हो रहा है....? बेन्झियोन....! उठ....'' शिक्षक चिल्लाया। ''तू क्या बोला, फिर से बोल....!''

''आपका डंडा जैसा मजबूत है वैसा ही आपका कंठ भी है, ऐसा मैंने कहा'' – बेन्झियोन शब्द बदलकर धीरे से बोला।

''अरे....! मुझसे जुबान लड़ाता है? तू कितना धृष्ट है....।'' ऐसा कहकर वह शिक्षक डंडे से बेन्झियोन को मारने के लिए उद्यत हो गया।

''मुझे मारते हो....? खबरदार! मेरे पिता आपकी दुष्टता के विषय में अपनी पत्रिका में समाचार छाप देंगे। जानते हो, वह पत्रकार हैं....'' बेन्झियोन ने सोचा इस शिक्षक से मुक्ति का यही सही उपाय होगा, इसलिए ऐसा बोल दिया।

''जानता हूँ तेरे मूर्ख पिता को और उसकी पत्रिका को। वह मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। ले, अपनी बदतमीजी का फल भुगत....'' ऐसा बोलकर शिक्षक ने उसके हाथों, पैरों और पीठ पर निर्दयता से मारा। उसने मारना तभी बंद किया जब शोर सुनकर स्वयं प्रधानाचार्य ने दौड़ते हुए आकर जबर्दस्ती उसके हाथ से डंडा छीन लिया।

''फिर कभी इस विद्यालय में नहीं आऊँगा। बहुत हो गया....'' बेन्झियोन गुस्से में और सुबकते हुए बोला।

''चिंता मत करो। मैं तुम्हें तीसरी कक्षा में भेजता हूँ। वहाँ तो यह शिक्षक नहीं पढ़ायेगा। इसलिए तुम्हें कोई समस्या नहीं होगी।'' प्रधानाचार्य ने समस्या का समाधान निकाला।

इस प्रकार एक ही साल में बेन्झियोन ने तीन कक्षाओं में प्रवेश प्राप्त कर लिया।

तीसरी कक्षा में बेन्झियोन के शिक्षण में बहुत प्रगति दिखाई देने लगी। समय बीतने के साथ-साथ फ्रेंच भाषा के प्रति वह बहुत आकर्षित होने लगा। उस भाषा की व्यावहारिकता, विशाल शब्द संपत्ति, सरलता इत्यादि बातों ने उसका मन जीत लिया। उसकी तुलना में पुरानी हीब्रू भाषा उसे अव्याहारिक दिखाई देने लगी।

''इस अभागी भाषा में व्यवहार करना है, ऐसा किस कारण से पिताजी अनुरोध करते हैं?'' उसके मन में जब-तब यह प्रश्न उठता रहता था। ''पिताजी का विरोध भी करना चाहिए'' ऐसी भी उसके मन में कभी-कभी इच्छा होती थी।

''अविचायिल के साथ कक्षा के अतिरिक्त समय में आप हीब्रू भाषा में ही बातचीत करते हो या नहीं?'' एक दिन बेन्यहूद ने पुत्र से पूछा। ''विद्यालय में हम दोनों का मिलना बहुत कम होता है। हम दोनों के मित्र भी अलग-अलग हैं। कक्षा के अतिरिक्त समय उन्हीं के साथ बीत जाता है। फिर हम दोनों का मिलना कठिन ही होता है....।'' - बेन्झियोन बोला।

''कठिन होते हुए भी यह कार्य करना चाहिए बेटा!'' पिता ने आज्ञा दी। पुत्र ने स्वीकृति में सिर हिला दिया। किंतु पिता का आदेश व्यवहार के योग्य नहीं है, ऐसा उसने सोचा।

विद्यालय में फ्रेंच भाषा का शिक्षक अत्यंत कुशल था। उसने एक दिन बेन्झियोन को अपने घर बुलाया। वहाँ उसने अपने संग्रह में से फ्रेंच भाषा में लिखित बहुत सारी पुस्तकें दिखायीं।

एक सुंदर और सचित्र पुस्तक शिक्षक ने बेन्झियोन को देते हुए कहा, ''बेटा! यह पुस्तक अत्यंत अद्‌भुत है। घर ले जाकर पढ़ो, फिर लौटा देना। बाद में अन्य पुस्तके भी मैं तुम्हें दूँगा।''

''धन्यवाद'' कहकर बेन्झियोन घर लौट गया। सभी से और विशेष रूप से पिता की दृष्टि से छिपाकर उसे वह पुस्तक पढ़नी थी। उस रात जैसे वह बहुत थका हुआ हो इस प्रकार वह जल्दी ही बिस्तर पर चला गया। उसके बाद सबके सोने पर खिड़की के पास बैठकर वहाँ फैले हुए सड़क के बल्ब के प्रकाश में अत्यंत उत्सुकता से बेन्झियोन ने उस पुस्तक को पढ़ना शुरू किया। लम्बा समय कब बीत गया यह वह जान ही नहीं पाया। पुस्तक हाथ में लिए हुए ही वह सो गया।

दूसरे दिन वह उस पुस्तक को विद्यालय भी ले गया। कक्षा में भी बीच-बीच में शिक्षक की नजरों से बचाकर उसने कुछ पन्ने पढ़ लिए। कक्षा के अतिरिक्त समय में भी उसने पुस्तक पढ़ने के अलावा अन्य कोई कार्य नहीं किया। फिर भी उस मोटी पुस्तक को पूरी पढ़ने में वह असमर्थ रहा। उस दिन शाम को घर जाने के बाद अपने कमरे में जाकर खिड़की के पास बैठकर वह फिर से उस पुस्तक को पढ़ने लगा। उस पुस्तक को पढ़ने में वह इतना लीन हो गया कि पास में आकर खड़े हो गये पिता की ओर भी उसका ध्यान नहीं गया।

''क्या पढ़ रहे हो बेटा......?'' पूछते हुए पुत्र के हाथ से पुस्तक लेकर बेन्यहूद ने देखा। बेन्झियोन की तो जैसे साँस ही रुक गई। 'ओह! अब तो मैं मारा गया।' यह सोचकर वह चुपचाप खड़ा हो गया।

''यह तो बहुत बढ़िया पुस्तक है बेन्झियोन।'' उस पुस्तक को लौटाते हुए बेन्यहूद ने कहा। ''अतिशीघ्र हीब्रू भाषा में इसका अनुवाद करके अपनी पत्रिका में धारावाहिक रूप में प्रकाशित करूँगा। अभी तो फ्रेंच भाषा में पढ़ो। कोई समस्या नहीं। जल्दी ही हीब्रू भाषा में भी पढ़ोगे....।''

पिता के मुँह से निकले वचन सुनकर बेन्झियोन को अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ। ''सच पिताजी....? इसका हीब्रूभाषा में अनुवाद करना चाहिए'', उसने भी कहा। परंतु सरल फ्रेंचभाषा में लिखी इस पुस्तक को क्यों फिर से कठिन हीब्रू भाषा में अनुवाद करना चाहिए, यह उसे समझ नहीं आया।

इसके बाद बेन्यहूद ने अपने द्वारा हीब्रू भाषा में अनुवाद की गई दो तीन वैसी कथाएँ लाकर पुत्र को दीं। यद्यपि बेन्झियोन ने उन्हें पढ़ा फिर भी उसे सरल फ्रेंच भाषा ही अधिक पसंद आई। विद्यालय में भी वह फ्रेंच भाषा में ही प्रथम रहा, हीब्रू भाषा में नहीं। इस सब से पूर्णतः निराश और क्रोधित बेन्यहूद ने एक सप्ताह तक पुत्र के साथ बातचीत नहीं की।

••••

वार्षिक परीक्षा के बाद विद्यालय में गर्मी की छुट्टियाँ शुरू हो गईं। कुछ दिनों तक बेन्झियोन स्वतन्त्र पक्षियों की तरह जेरुसलेम नगर की गली-गली घूमता रहा। न पढ़ने की चिंता थी, न परीक्षा की। कभी-कभी अविचायिल को भी लेकर नगर में घूमा परंतु एक सप्ताह में ही वह ऊब गया। वह अपनी आयु के बच्चों के साथ खेलना चाहता था। किंतु बेन्यहूद, पुत्र के हीब्रू भाषा ज्ञान की रक्षा के विषय में बहुत जागरुक था। इसीलिए छुट्टियों में बेन्झियोन का मित्रों के घर जाना भी बेन्यहूद पसन्द नहीं करता था। ''यदि

खेलना है तो घर में ही छोटे भाई और बहिन के साथ हीब्रू भाषा में ही खेलना है'' ऐसा बेन्यहूद का आदेश था। उस समय फ्रेंच भाषा का शिक्षक भी नगर में नहीं था। इसलिए बेन्झियोन को पढ़ने के लिए फ्रेंच भाषा की सुंदर पुस्तकें नहीं मिलती थीं। यद्यपि बेन्यहूद कभी-कभी उसे हीब्रू भाषा में स्वयं की लिखी हुई कहानियाँ लाकर देता था किंतु पिता के दुराग्रह के कारण मन-ही-मन हीब्रू भाषा से द्वेष करते हुए बेन्झियोन उनको बिना पढ़े ही पिता को झूठ बोल देता था। पिता और हीब्रू भाषा के विषय में उसके मन में घृणा एवं असहिष्णुता उत्पन्न हो गई थी।

असाधारण युद्ध

एक दिन सुबह घर से निकलते हुए बेन्झियोन ने मार्ग में खेलते हुए अपने मित्रों को देखा। उनमें से दो-तीन उसकी कक्षा के ही छात्र थे। बेन्झियोन उनके पास गया। उसे देखकर उसका मित्र डेविड बोला, ''बेन्झियोन! आ जाओ। इस खेल में हमें एक खिलाड़ी की आवश्यकता है। क्या तुम हमारे साथ खेलोगे?''

''क्यों नहीं....? आओ, किंतु यहाँ खेलना ठीक नहीं है। मार्ग में बहुत सारे पत्थर है हम किसी के घर के आँगन या बगीचे में खेलते हैं....।'' - उनमें से किसी ने कहा।

''हम तुम्हारे ही घर के आँगन में खेलते हैं। वह पास में ही है।'' - डेविड ने कहा।

''हमारे आँगन में....!'' - बेन्झियोन चिन्तित हो गया। इस बात को जानकर पिताजी क्या कहेंगे, यह सोचकर वह डर गया। किंतु उसे याद आया कि आज तो पिताजी पत्रिका की छपाई में व्यस्त होकर मुद्रणालय में ही रहेंगे और माँ को तो इस विषय में कोई समस्या नहीं होगी।

''पर मित्रों! हमारे प्रांगण में तो आप लोगों को हीब्रू भाषा में ही बातचीत करनी होगी....।'' - बेन्झियोन ने सबको याद दिलाया।

''जरूर! उसमें क्या है....! आज खेल हीब्रूभाषा में ही हो....।'' सभी ने स्वीकार कर लिया। वहाँ से पाँच मिनट के अंदर बच्चों की वह सेना बेन्यहूद के प्रांगण में एकत्र हो गई। हीब्रू भाषा में ही वार्तालाप शुरू हुआ। आरंभ में उन्होंने नियमों की चर्चा की। किंतु जब चर्चा में लड़ाई-झगड़ा शुरू हुआ तब उनमें से किसी को हीब्रू भाषा याद नहीं रही। मातृभाषा के समान किसी अन्य भाषा में भी कहीं झगड़ा किया जा सकता है? इसके बाद खेल शुरू हुआ। हर बच्चा अपनी मातृ-भाषा में बोल रहा था। रूसी, अरबी, यिड्डिष, फ्रेंच आदि भाषाएँ वहाँ बोली जा रही थीं। कुछ ही देर में फिर उनके बीच झगड़ा शुरू हो गया। झगड़ा जब बहुत बढ़ गया तब डेविड ने फ्रेंच भाषा में कहा - ''मित्रों! यह कैसी मूर्खता है.....? हम यहाँ खेलने के लिए आए हैं, लड़ने के लिए नहीं।

आओ, सभी हाथ मिलाओ। अब हम सब झगड़ा छोड़कर स्नेह के प्रतीक के रूप में फ्रेंच राष्ट्रगीत गाते हैं। शुरू करो एक-दो-तीन......'' यह सुनकर सबने फ्रेंच राष्ट्रगीत गाया।

गीत समाप्त होने पर बेन्झियोन ने देखा कि न जाने कब से पिताजी पास में खड़े होकर उन बच्चों को देख रहे थे। क्रोध के आवेग से बेन्यहूद का शरीर काँप रहा था। बेन्झियोन भी काँप गया। फिर भी स्वयं को नियन्त्रित करके किसी तरह खड़ा रहा।

तभी उनमें से किसी एक बालक की दृष्टि बेन्यहूद पर पड़ी। ''अरे आ गया वह मूर्ख!'' उसने दूसरे के कान में कहा। ''मूर्ख आ गया। भागो-भागो। अन्यथा वह हमें मारेगा।'' बच्चों ने एक दूसरे से कहा।

''धिक्कार है इस पागल परिवार को.....'' ऐसा बोलते हुए वे बच्चे जल्दी से दौड़ते हुए वहाँ से निकल गए। बेन्झियोन अकेला ही वहाँ खड़ा रह गया।

''बेन्झियोन! मेरे पीछे आओ'' – ऐसा कहकर बेन्यहूद घर की ओर चला। काँपता हुआ पुत्र उसके पीछे चल दिया। उसे ऐसी स्थिति में अकेला छोड़कर चले गए मित्रों के प्रति उसके मन में घृणा उत्पन्न हो गई। उनके द्वारा कहे गए शब्द उसके कानों में और भी अधिक जोर से गूँज रहे थे। ''ये कैसे दोस्त हैं। अब पिताजी क्या करेंगे....? मारेंगे....? या किसी दूसरे प्रकार से दण्डित करेंगे ....?''

तब तक वे दोनों घर पहुँच गए। कमरे में जाकर बेन्यहूद ने बिना कुछ कहे अपनी कमर से चमड़े का पट्टा निकाल लिया। डर से काँप रहे पुत्र को उसने निर्दयता से मारा। एक..... दो.....तीन.... चार। ओह! कैसे प्रहार थे वे! उसके बाद एक भी शब्द बोले बिना बेन्यहूद घर से चला गया।

बेन्झियोन का शरीर घायल हो गया था और उससे भी ज्यादा मन। मार की तुलना में अपमान उसके लिए अधिक पीड़ादायक था।

''बेटा! क्या हुआ?'' – तभी घर आई डेबोरा ने पुत्र की ऐसी स्थिति देखकर पूछा। जो घटित हुआ वह जानकर उसने बेन्झियोन के घावों पर लेप लगाते हुए कहा – ''बेटा! तुम्हें वैसा नहीं करना चाहिए था। तुम तो जानते ही हो कि तुम्हारे पिता....''

माँ की बात को बीच में ही काटते हुए पुत्र ने कहा, '' जानता हूँ माँ! मेरे पिता कैसे राक्षस हैं! सब के पिता के समान वह व्यवहार क्यों नहीं करते? क्यों वह मुझे ऐसे बंधन में रखते हैं.....? बोलो....।''

"बेटा! अभी तुम छोटे हो। तुम्हारे पिता का लक्ष्य और उसके लिए उनके द्वारा किए जा रहे संघर्ष को तुम अभी नहीं समझ सकते। किंतु किसी दिन वह भी जान जाओगे। तब अपने पिता के प्रति गौरव का अनुभव करोगे, जिसने तुम्हें सबसे पहला हीब्रू भाषा बोलने वाला शिशु बनाया ....।"

"मैं हीब्रू बोलने वाला पहला शिशु नहीं बनना चाहता माँ! दूसरे बच्चों की तरह मैं भी सामान्य बच्चा बनना चाहता हूँ। मेरे पिता भी दूसरे बच्चों के पिता की तरह ही रहें। जैसे वे बच्चों से प्रेम करते हैं वैसे ही मेरे पिता भी मुझे चाहें....। यही मैं चाहता हूँ ....।"

"बेटा! तुमने गलत समझ लिया है। तुम नहीं जानते कि तुम्हारे पिता तुम्हें कितना चाहते हैं। कभी भी इस विषय में सन्देह न करना। वह हमेशा कार्य में व्यस्त रहते हैं। तुम्हारी पढ़ाई के विषय में बहुत अनुशासनपरक हैं यह तो सत्य है। किंतु तुमसे वे बहुत प्रेम करते हैं। जानते हो कि जब तुम छोटे से थे तब तुम्हारे कान में कितनी बाइबिल कथाएँ उन्होंने सुनाईं? एक-एक शब्द कैसे उन्होंने तुम्हें पढ़ाया?"

"माँ! बहुत बार आपके मुँह से मैंने ये कहानियाँ सुनी हैं। मैं इनसे संतुष्ट नहीं हूँ। मेरे पिता भी वैसे क्यों नहीं रहते जैसे दूसरों के पिता रहते हैं? मेरे मित्र भी मुझे और मेरे पिता को मूर्ख समझते हैं, उपहास करते हैं। वह मैं सहन नहीं कर सकता....।"

●●●●

छुट्टियाँ बीत जाने पर विद्यालय फिर से शुरू हो गया। बेन्झियोन उत्साह से विद्यालय गया। वहाँ तो मित्रों के साथ मेल-मिलाप और बातचीत कर ही सकते थे। पिता इस विषय में नहीं रोकते थे।

"सुप्रभातम्....।" विद्यालय में प्रवेश कर बेन्झियोन ने मित्रों का अभिवादन किया। किंतु अफसोस! उनमें से एक ने भी उसकी बात का उत्तर नहीं दिया। सभी के मुँह जैसे पत्थर के हो गए थे। "क्या हो गया इनको? क्यों ये ऐसा व्यवहर कर रहे हैं?" ऐसा सोचता हुआ बेन्झियोन अपने स्थान पर जाकर बैठ गया और उसने अपने सबसे अच्छे दोस्त डेविड से पूछा – "मित्र! क्या बात है..?

"मुझे क्षमा करो। मुझे तुम्हारे साथ बातचीत नहीं करनी है......?" डेविड ने कहा।

बेन्झियोन बोला "वह किसलिए? उस दिन मेरे पिता ने उस प्रकार का व्यवहार किया, इसलिए क्या....? किंतु वे तो अब तक सब भूल गए हैं। ...... और उस दिन दण्ड तो मुझे मिला न कि तुम लोगों को .....।"

नहीं, वह कारण नहीं है। किन्तु तुम प्रश्न पूछ कर मुझे परेशान मत करो। मैं तुम्हारे साथ बात नहीं करता....।''

''वही तो किसलिए, यह पूछ रहा हूँ ....।'' किंतु डेविड ने कोई उत्तर नहीं दिया। तब तक शिक्षक कक्षा में आ गए। पाठ शुरू हो गया। बेन्ज़ियोन को लगा कि उस दिन शिक्षक ने भी उसके साथ अपरिचित की तरह व्यवहार किया। शिक्षक ने उससे एक भी प्रश्न नहीं किया।

भोजन अवकाश के समय बेन्ज़ियोन ने फिर से डेविड से पूछा – ''मित्र! बताओ मैंने क्या अपराध किया है? कुछ तो बोलो ....''

''उधर देखो, कारण तुम खुद ही समझ जाओगे....'' ऐसा कहकर डेविड ने विद्यालय के सामने बने हुए भवन की दीवार की ओर हाथ से इशारा करके दिखाया। बेन्ज़ियोन ने वहाँ देखा। हाथ से लिखा हुआ एक पोस्टर चिपका हुआ था। उस पर यिड्डिश भाषा में कुछ लिखा हुआ था। बेन्ज़ियोन वह भाषा नहीं जानता था। मित्रों के सहयोग से उसने उस भाषा के पाँच-छह शब्द जाने थे, दो-तीन अक्षर कभी उसने पढ़े भी थे। इसलिए वहाँ काली स्याही से बड़े-बड़े अक्षरों में लिखे, 'बेन्यहूद' इस एक शब्द को वह किसी प्रकार पढ़ने में समर्थ हुआ। ''इसका मतलब ये भित्तिपत्र मेरे पिता के लिए लिखे गए हैं। उन्होंने क्या अपराध किया है ....?'' परंतु उसे उत्तर देने वाला कोई भी नहीं था।

उसके बहुत बार निवेदन करने पर अंत में एक छात्र बोला – ''कल तुम्हारे पिता के लिए मंदिर में काली मोमबत्तियाँ जलाई गई थीं। (यहूदी परम्परा के अनुसार किसी व्यक्ति का जब सामाजिक बहिष्कार किया जाता है तो उसकी सूचना के रूप में उसके नाम से मंदिर में अमंगल की सूचना देने वाली काली मोमबत्तियाँ जलाई जाती हैं।) रात में किसी ने सड़कों पर घोषणा भी की थी कि बेन्यहूद का परिवार अपवित्र है। कोई भी यहूदी उसके परिवार के लोगों के साथ बात न करे ....''

''खबरदार! नहीं जानते क्या कि इसके साथ बातचीत नहीं करना है...?'' ऐसा बोलते हुए बेन्ज़ियोन के साथ बात करते हुए उस लड़के को एक दूसरा लड़का खींचकर ले गया।

बेन्ज़ियोन का गला रुँध गया। ''ऐसा क्यों ....? ठीक है, पिताजी से ही पूछता हूँ। वही उत्तर जानते होंगे।'' यह सोचता हुआ वह पिताजी के पत्रिका-कार्यालय की और दौड़ा। रास्ते में दीवारों पर यहाँ-वहाँ उसने उन्हीं पोस्टरों को

चिपके देखा, जिसमें बेन्यहूद का नाम बड़े-बड़े अक्षरों में काली स्याही से लिखा हुआ था। उसे लगा जैसे वे पोस्टर उसे देख-देख कर हँस रहे हों।

तेज चाल से मुद्रणालय पहुँचकर पिता के सामने खड़े होकर उसने कहा- "पिताजी, ये सब क्यों इस तरह का व्यवहार कर रहे हैं? आपने उन लोगों के प्रति क्या अपराध किया है?"

बेन्झियोन! तुम यहाँ ....? क्यों, विद्यालय नहीं गए?"

"पिताजी! वहाँ मेरे साथ कोई बातचीत नहीं करता। वे कहते हैं कि उन्हें मेरे साथ बात नहीं करना चाहिए। आपके नाम से कल मंदिर में काली मोमबत्तियाँ जलाई गईं थीं। नगर में यहाँ-वहाँ पोस्टर लगे हुए हैं जिनमें आपका दुष्प्रचार किया है! पिताजी! यह सब क्या है?" जोर से रोते हुए बेन्झियोन ने पूछा।

"बेटा! उत्तेजित मत होओ। धैर्य रखो।" बेन्यहूद ने उसके कंधों पर हाथ रखते हुए सांत्वनापूर्वक कहा - "चलो मैं भी तुम्हारे विद्यालय चलता हूँ। ऐसी बातों पर तुम्हें ध्यान नहीं देना चाहिए। तुम्हें ठीक से पढ़ना चाहिए। ऐसी विपत्तियों में तो हमें और भी अधिक बलवान बनना चाहिए।"

बेन्यहूद अपना कोट पहनकर पुत्र का हाथ पकड़कर बाहर आ गया। वहाँ उसका वाहन गधा खड़ा था। "बेटा! आ जाओ। चढ़ो इस पर ...." ऐसा कहकर उसे बिठाकर स्वयं भी गधे पर बैठकर गधे को हाँकने लगा। पिता का सहारा लेकर बैठे हुए पुत्र को निश्‍चिंतता थी। फिर भी उसने पिता से पूछा - "पिताजी! विद्यालय में भी थोड़ी देर आप मेरे साथ रहेंगे क्या .... ?"

"अवश्य रहूँगा। चिन्ता मत करो ....।" - पिता ने आश्वासन दिया।

रास्ते में जब पोस्टर दिखे तब बेन्झियोन ने पूछा - "पिताजी! यहाँ क्या लिखा है?" एक पोस्टर के पास गधे को रोक कर उसमें लिखे वाक्य को पढ़कर हीब्रू भाषा में उसका अनुवाद करके बेन्यहूद ने कहा - "बेन्यहूद की 'दि डीर' - पत्रिका का बहिष्कार किया गया है। कोई भी धार्मिक यहूदी इस पत्रिका को न पढ़े और न खरीदे। कोई भी यहूदी उसके परिवार के साथ बातचीत न करे।"

"परंतु ऐसा क्यों?" बेन्झियोन ने पूछा।

"बताता हूँ बेटा ....।"

"यद्यपि यह बच्चा है फिर भी अब तो मुझे बताना ही होगा" ऐसा बेन्यहूद ने निश्‍चित कर लिया था। "आ जाओ! कोई पेय पीते हैं" ऐसा कहकर निकट के जलपान गृह में पुत्र के साथ प्रवेश किया। वहाँ अंगूर का ठंडा रस पीते

हुए बेन्यहूद ने पुत्र से कहा – ''बेटा! अभी तुम बहुत छोटे हो। सब नहीं समझ पाओगे! फिर भी कहता हूँ। तुम जानते हो कि हम यहूदी हैं। खेती के सम्बन्ध में हमारी प्राचीन परम्परा चली आ रही है कि हम निरंतर छह वर्ष तक खेत जोतते हैं। बीज बोते हैं, अन्न का उत्पादन करते हैं पर सातवें साल खेती में विराम देते हैं; अर्थात् प्रत्येक सातवें साल कोई भी यहूदी खेत नहीं जोतता। यह जमीन के आराम का वर्ष होता है। उस वर्ष खेत जोतना या खेती करना पाप होता है, ऐसा सारे यहूदी मानते हैं। संयोग से ये वर्ष वैसा ही सातवाँ साल है। मेरे लेखों से प्रभावित होकर बहुत से यहूदी अन्य देश छोड़कर इजराइल आ गए हैं। यहाँ उन्होंने भूमि खरीद ली है। हाल ही में खरीदी हुई भूमि में एक वर्ष तक खेती नहीं की जायेगी तो उसकी क्या स्थिति होगी? इसलिए मैंने पत्रिका में प्रतिपादित किया कि 'आपत्तिकाल के धर्म' के रूप में इस वर्ष ऐसे सभी लोगों को खेती करना चाहिए। उसे स्वीकार बहुत सारे लोगों ने खेतों को जोतकर बीज बो दिए। इस कार्य का कारण मैं हूँ, इसलिए मुझे और मेरे परिवार को इस प्रकार की सजा दी जा रही है....।''

''अरे, वह तो यहाँ है। आराम से अंगूर का रस पी रहा है....। आ जाओ। मारो उसको। उसकी हड्डियाँ तोड़ दो ....'' – बाहर कोई युवक इस प्रकार जोर से चिल्लाया। तुरन्त आस-पास के रास्ते से पंद्रह-बीस लोगों का समूह वहाँ आ गया। सबके हाथों में पत्थर थे। बेन्यहूद जिस जलपान गृह में था वहीं वे लोग घुस गए। उस युवक ने उँगली का इशारा करके बेन्यहूद को दिखाते हुए फिर से कहा – ''यहीं है वह मूर्ख ....।''

''बेटा! चलो, घर चलते हैं ....।'' जैसे उसे अनिष्ट की सूचना प्राप्त हो गई हो, इस प्रकार बेन्यहूद शीघ्रता से उठकर पुत्र का हाथ पकड़कर बिजली की गति से वहाँ से बाहर आकर गधे पर बैठकर उसे हाँकने लगा। दौड़ते हुए गधे के पीछे वे लोग भी दौड़ने लगे। उसे निशाना बनाकर उन्होंने पत्थर फेंके। कुछ बच्चों ने पास में आकर छड़ी से गधे को भी पीछे से मारा।

''पिताजी! ये हमें मार ही देंगे....'' बेन्झियोन डर से चिल्लाया। गधे को अधिक तेजी से दौड़ाने के लिए बेन्यहूद ने कोशिश की। रास्ते में यह तमाशा देखते हुए अन्य कुछ लोग भी उस समूह में शामिल हो गए। उन्होंने भी उस समूह के कार्य में शामिल होते हुए पत्थरों की वर्षा में सहयोग किया।

''मारो! गधे के साथ इन दोनों को गाड़ दो ....?'' उनमें से एक ने कहा।

पिता–पुत्र और गधे के शरीर पर जगह–जगह घाव हो गए। किसी प्रकार पुत्र की रक्षा करने का प्रयत्न बेन्यहूद ने किया। दो मिनट के अंदर वे घर पहुँच गए। घर के आँगन में घुसते ही जल्दी से ऊँची चारदीवारी के दरवाजे को बंद कर बेन्यहूद ने चटखनी लगा दी। वह जानता था कि उस समूह में इससे आगे आने की हिम्मत नहीं है। वैसा ही हुआ भी। बार–बार दुर्वचनों से निंदा करके वह समूह वहाँ से चला गया। गधे को उसके स्थान पर बाँधकर पुत्र का हाथ पकड़कर बेन्यहूद ने घर में प्रवेश किया। धीरे से डेबोरा ने दरवाजा खोला, वह भय से काँप रही थी। उसकी आँखों में और चेहरे पर घबराहट के भाव थे। आँखों की चमक जैसे चली गई थी। उसने पूछा – "हाय! आप दोनों की ऐसी हालत! आप दोनों ठीक तो हैं ....?"

"भाग्य से बच गए। ठीक है। जो हुआ सो हुआ। परन्तु इस समय आप यहाँ कैसे? यह तो विद्यालय का समय है?" बेन्यहूद ने पूछा।

"उन्होंने मुझे नौकरी से निकाल दिया ....।" धीरे से डेबोरा बोली।

"ओह! इसका मतलब यह भी मेरे लेख का ही परिणाम है....?"

"समझ लो कि वही है। किंतु उन्होंने मुझे वैसा कहा नहीं। 'आपका स्वास्थ्य दुर्बल है। आपको खाँसी भी है, साथ ही आप फिर से गर्भवती हैं। इसलिए छः–आठ महीनों के लिए अथवा जब तक आपको आराम करना है, करिए। अगले वर्ष हम आपसे संपर्क करेंगे। तब फिर से आइये।' ऐसे मधुर वचनों के साथ उन्होंने मुझे वहाँ से विदा कर दिया.....।"

"माँ! इसका मतलब हमारे घर एक और बच्चा आएगा? कितना मज़ा आयेगा! माँ! अब तो येमिमा की छोटी बहिन ही होगी" – बेन्झियान सारी पीड़ा भूलकर आनंद से बोला।

"परंतु उसके लिए अभी अनेक महीने शेष हैं। प्रतीक्षा करो, बेटा।" डेबोरा ने कहा। पति की ओर उन्मुख होकर वह पुनः बोली – "मैंने सोचा था कि मैं भी नौकरी करती हूँ और उससे प्राप्त वेतन से प्रत्येक महीने थोड़ा - थोड़ा ऋण चुकाया जा सकता है। किंतु अब यह सब हो गया। इसी बीच एक और शिशु भी हमारे परिवार में आ जाएगा। उसका भी पेट भरना होगा। इस बीच आपकी पत्रिका की क्या दशा होगी प्रिय....? बोलो, अब क्या करेंगे?"

"सबका सामना करना होगा, डेबोरा। दूसरा कोई मार्ग नहीं है। धैर्यवान सैनिकों के समान हमें युद्ध करना होगा। मुझे लगता है कि भविष्य में हमारा यह युद्ध इससे भी अधिक भीषण होगा ....।"

"असाधारण युद्ध है यह ....।" उसने भी स्वीकारा।

क्रूरता की पराकाष्ठा

बेन्यहूद के परिवार का सामाजिक बहिष्कार हो गया। कोई भी व्यक्ति उनके घर नहीं आता था। कोई भी उनके साथ बातचीत नहीं करता था। कुछ लोग अलबत्ता कभी-कभी उसके घर की ऊँची दीवारों के पास आकर गालियाँ देकर अपनी जीभ की चंचलता को शांत करते थे।

अगले दिन बेन्यहूद दोनों पुत्रों को विद्यालय भेजने के लिए तैयार था। डेबोरा ने उसे रोकते हुए कहा-''बच्चों को बाहर मत भेजो क्योंकि वे लोग इन दोनों को भी मारेंगे।''

''कोई भी वैसी दुष्टता नहीं क़रेगा। उनकी दृष्टि में अपराध तो मेरा है। इन दोनों बच्चों का क्या दोष है? इन दोनों का मेरी पत्रिका से कोई सम्बन्ध नहीं है।'' ऐसा कहकर बेन्यहूद ने स्वयं ही दोनों पुत्रों को कपड़े पहनाने में सहयोग करके उन दोनों को विद्यालय भेज दिया।

डरते हुए बच्चे थोड़ी दूर गए ही थे कि तभी नगर के पन्द्रह-बीस लोगों का एक समूह सामने आ गया। उन दोनों नादान बच्चों को घेरकर वे सब लोग खड़े हो गए। ''यहाँ हैं उस मूर्ख के दोनों पुत्र। पवित्र भाषा को अपवित्र करने वाले दुष्ट की संतानें हैं ये दोनों...।''-किसी ने कहा। अन्य लोगों ने यह सुनकर सहमति में सिर हिलाया।

''विद्यालय के लिए देर हो रही है। हम दोनों को जाना है। कृपया हट जाइये....।'' – बेनझियोन ने दीनता से याचना की।

''नहीं....। इन दोनों को यहाँ से जाने का मौका नहीं देना है....'' भीड़ में से कोई बोला। उन्होंने उन दोनों बच्चों को हर दिशा से घेर लिया। किसी ने निर्दयता से उनके ऊपर पत्थर फेंका।

''हाय माँ! पिताजी....!!'' पत्थर की चोट से अविचायिल चिल्ला उठा।

''तेरा बाप काम में बहुत व्यस्त है! अभी तो वह बुरे विचारों वाले किसी दूसरे लेख की तैयारी में लगा होगा.....!'' किसी अन्य व्यक्ति ने उपहासपूर्वक कहा।

"अविचायिल! आ जाओ, हम दोनों दौड़ते हैं...।" ऐसा कहते हुए बेन्झियोन छोटे भाई का हाथ पकड़कर दौड़ने के लिए तैयार हो गया किन्तु जब रास्ता ही नहीं मिला तो हताश हो गया। "यहीं हम दोनों की मृत्यु निश्चित है"– उन दोनों ने सोचा।

"अरे अभागों! यह क्या पाप कर रहे हो? तुम लोगों को शर्म नहीं आती...?" तभी कोई कठोर स्वर सुनाई दिया। साक्षात् भगवान की तरह वहाँ नगर का बढ़ई सोलोमन प्रकट हो गया। अपने काम से वह उसी रास्ते से जा रहा था और यह शोर-शराबा सुनकर पास में आ गया। बलवान शरीर वाला सोलोमन पुनः चिल्लाया, "इन दोनों असहाय बच्चों को परेशान करने में क्या तुम्हें शर्म नहीं आती? तुम सबको धिक्कार है! इन दोनों बच्चों ने क्या अपराध किया है? बिना कोई शोर-शराबा दिए यहाँ से चले जाओ। अन्यथा यदि किसी ने कुछ गड़बड़ की तो इसी कुल्हाड़ी से उसका गला काट डालूँगा....।"

धारधार कुल्हाड़ी को इधर-उधर चलाते हुए वह खड़ा हो गया। उसका गंभीर चेहरा देखकर डर से सभी लोग वहाँ से भाग गए। उसने उन दोनों बच्चों को घर तक सुरक्षित रूप से पहुँचाया। बेन्यहूद को देखकर उसने कहा.... "महाशय! मैं नहीं जानता कि जो आपके द्वारा किया जा रहा है वह उचित है या अनुचित, किंतु इस बात को तो ध्यान रखो कि हम बड़ों के झगड़े में नादान बच्चों को बलि पशु नहीं बनाना चाहिए।" इतना कहकर वह तेजी से वहाँ से चला गया।

"अरे मेरे बच्चों....।" डेबोरा ने उन दोनों को गले लगा लिया। माँ के आलिंगन से दोनों बच्चे अपना सारा दुःख भूल गए। उसके बाद उन दोनों को विद्यालय भेजने के लिए बेन्यहूद ने भी जोर नहीं दिया।

तीन दिन बीत गए। बच्चे घर में ही बँधे हुए थे। शब्दकोश बनाने में तल्लीन बेन्यहूद घर पर ही था। छोटे भाई और बहिन के साथ खेलते हुए बेन्झियोन ने देखा कि अचानक ही माँ दीवार का सहारा लेकर बैठ गई। अत्यधिक पीड़ा को सहन कर रही हो, इस प्रकार दाँतों से बार-बार होठ काट रही थी। उसकी आँखों की चमक कम हो गई थी।

"माँ! क्या हुआ? आप बीमार हैं क्या?" – उसने पूछा।

"हाँ बेटा! मुझे लग रहा है कि मेरे प्रसव का समय आ गया है।"

"परन्तु आपने तो कहा था कि उसके लिए अभी कुछ महीने लगेंगे?"

"कभी-कभी ऐसा भी होता है बेटा ....।" डेबोरा लम्बी सांस लेकर लेट गई।

बेन्झियोन जल्दी से पिता के पास जाकर बोला – ''पिताजी! माँ को प्रसव पीड़ा शुरू हो गई है। अब क्या करें?''

''ऐसा.......?'' पूछते हुए बेन्यहूद ने पत्नी को आकर देखा और सब समझ गया।

''उस नर्स को जल्दी लाओ......।'' कष्ट से डेबोरा बोली। बेन्यहूद कोट पहनकर उसे लाने बाहर गया। बेन्झियोन ने माँ के पास बैठकर उसके बालों को प्रेम से सहलाते हुए पूछा – ''माँ! क्या पानी पीने की इच्छा है? मैं क्या सहायता करूँ?''

''नहीं बेटा! मैं जाकर बिस्तर में लेटती हूँ। तुम छोटे भाई–बहन का ध्यान रखना.....'' इतना कहकर वह धीरे–धीरे उठकर कमरे में जाकर लेट गई। बाहर बैठकर भी बेन्झियोन माँ के मुख से निकलने वाले अव्यक्त शब्दों और उसके द्वारा अनुभव की जाने वाली पीड़ा का अंदाजा कर रहा था। ''अफसोस! किसी भी तरह माँ की सहायता करने में असमर्थ हूँ'' ऐसी भावना से वह व्याकुल था। क्षण घण्टों में बदल रहे थे। बेन्यहूद नहीं लौटा।

''अम्मा को क्या हो गया......?'' ऐसा पूछते हुए येमिमा और अविचायिल पास में आ गए।

''हुश....। शोर मत करो। अभी माँ शिशु को जन्म दे रही है....।'' बेन्झियोन ने किसी बड़े व्यक्ति की तरह कहा। उसने वहीं बैठकर उन दोनों को गले लगा लिया। तीनों बच्चे माँ के लिए कुछ भी करने में असमर्थ से माँ की पीड़ा का अनुमान करते हुए खड़े थे।

लंबे समय के बाद लौटे हुए बेन्यहूद का चेहरा धुँधला था। ''उन लोगों ने मेरा रास्ता ही रोक लिया। वे कहते हैं कि मैंने उनकी पवित्र हीब्रू भाषा को अपवित्र किया है। मैंने आज की यहाँ की परिस्थिति को समझाने की बहुत कोशिश की परंतु उनमें से कोई मेरी बात सुनने के लिए तैयार ही नहीं था.....।'' बेन्यहूद ने विषाद से कहा।

''प्रिय....। जल्दी करो। हमारी पड़ोसन उस अरबी महिला सलीमा को ही बुला लाओ.....'' अंदर से ही कराहते हुए डेबोरा बोली।

''सलीमा...? वह टूटे दाँत वाली महिला माँ की क्या सहायता करेगी....?'' बेन्झियोन बोला।

''जल्दी करो। जल्दी सलीमा को बुलाओ...'' फिर से डेबोरा बोली।

बेन्यहूद तो यह सुनकर भी खड़ा ही रहा। उसने कहा, ''परंतु वह अरबी महिला तो हीब्रूभाषा नहीं जानती.....। मैं उसे नहीं बुलाऊँगा.....।''

''हाय! अब दर्द सहन नहीं कर सकती। सलीमा को बुलाओ......'' डेबोरा फिर से चिल्लाई।

''परंतु......'' अभी भी बेन्यहूद सोच ही रहा था।

''पिताजी जल्दी करो। आप जाकर सलीमा को लाओ। मैं माँ के पास रहता हूँ......?'' बेन्झियोन ने अनुरोध करते हुए कहा।

कोई उपाय न देखते हुए बेन्यहूद बाहर चला गया। कुछ समय बाद उसके साथ सलीमा आई। इस प्रकार के कार्यों में वह कुशल थी इसलिए शीघ्र ही काम में लग गई। कमरे के बाहर बैठे हुए बच्चे माँ के अव्यक्त रुदन को सुनते हुए ही सो गए। पूरी रात डेबोरा को प्रसव पीड़ा होती रही। अंत में सुबह बेन्यहूद की दूसरी बेटी का जन्म हुआ। वह बहुत कमजोर थी। उसे देखने से ही लग रहा था कि वह बहुत समय तक जीवित नहीं रहेगी।

''प्रिय! किसी डॉक्टर को लाओ। नहीं तो मुझे लगता है कि यह बेचारी जिंदा नहीं रहेगी.........'' – डेबोरा ने कहा।

''ठीक है। किसी डॉक्टर को लाना ही होगा......'' बेन्यहूद ने भी मान लिया। ''परंतु कैसे......? क्या वे फिर मेरा रास्ता नहीं रोकेंगे.......? वे दुष्ट लोग मुझे पत्थरों से नहीं मारेंगे? कैसे बाहर जाऊँ........?''

''पिताजी! मेरा परिचित एक साधु है। वह वैद्य भी है। वह मुझसे बहुत स्नेह करता है। नगर के बाहर पास ही पहाड़ के रास्ते में साधुओं के साथ रहता है। मैं उसे लाता हूँ....'' ऐसा कहकर पिता की अनुमति की प्रतीक्षा किए बिना ही बेन्यझियोन बाहर भाग गया। सुबह का समय था। रास्ते में कुछ लोग ही थे। बेन्झियोन तेज कदमों से दौड़ते हुए ही नगर के बाहर पहाड़ की तलहटी में पहुँच गया। साधुओं के निवास स्थान में पहुँचकर उस पूर्व परिचित साधु को देखकर लड़खड़ाते शब्दों में किसी प्रकार उसने माता की बिगड़ी हुई तबियत का हाल सुनाया। वह दयालु साधु तुरन्त उसकी अंगुली पकड़कर उसके घर की ओर चल दिया।

जब वे दोनों घर पहुँचे तब तक डेबोरा की स्थिति बिगड़ चुकी थी। वह निरंतर खाँस रही थी। उसके होंठों पर खून की कुछ बूंदें दिखाई दे रहीं थी। लंबे समय तक उसके कमरे में ही रहकर साधु ने अनेक प्रकार के उपचार किए। वहाँ

से जाने के पहले उसने बेन्यहूद के साथ फ्रेंच भाषा में विस्तार से बातचीत की।

"पिताजी! उसने क्या कहा....?" उसके जाने के बाद बेन्झियोन ने पूछा।

"उसने मुझे अपने घर बुलाया है, और कहा कि वहीं शब्दकोश बनाने का काम करो। देखो वह यहूदी नहीं है। फिर भी मुझे और मेरे लक्ष्य को वह समझता है। परंतु मेरा अपना ही समाज मेरा इस तरह अपमान करता है....।" उदास होकर बेन्यहूद ने कहा।

"शिशु और माँ के विषय में उसने क्या कहा.....?"

"शिशु के विषय में अभी कुछ नहीं कहा जा सकता।"

"माँ के.....?"

"वह भी बहुत कमजोर है बेटा! वैद्य का मानना है कि उसे लम्बे समय तक आराम करना चाहिए। इसी बीच माँ को खाँसी भी शुरू हो गई है। लेकिन सब कुछ वैसा नहीं होता जैसा हम सोचते हैं। सालों पहले डॉक्टर ने मुझे बताया था कि मेरे जीवन का समय सिर्फ एक साल बचा है किंतु मैं अभी तक जी रहा हूँ और काम भी कर रहा हूँ। मेरे संपर्क के कारण तुम्हारी माँ स्वस्थ होते हुए भी खाँसी से पीड़ित हो गई। आज वह मुझसे भी ज्यादा कमजोर हो गई है। हाय! यह सब भाग्य का खेल है।"

"इसका मतलब क्या आप यह कहना चाहते हैं कि माँ अब जीवित नहीं रहेगी....?" घबरा कर ऐसा पूछते हुए बेन्झियोन की आँखों से आँसू बहने लगे।

"नहीं बेटा, वैसा नहीं है। किंतु डॉक्टर कहता है कि वह इस हेमन्त ऋतु की ठंड सहन नहीं कर सकती। इसलिए हमें दो महीने तक जेरुसलेम नगर छोड़कर कहीं और जाना होगा। हमें जाफ्फा नगर जाना पड़ेगा।"

"पिताजी! बाहर यह कैसा शोर है....? क्या आप भी सुन रहे हैं..?" अचानक कमरे में घुसते हुए अविचायिल ने पिता से कहा।

बाहर बहुत भीड़ हो, ऐसी आवाजें सुनाई दे रही थी। घोड़ों की पदचाप और हिनहिनाहट कानों में सुनाई देने लगी।

"बेटा! जल्दी दौड़। चारदीवारी के दरवाजे बन्द कर। अविचायिल, सारी खिड़कियाँ बन्द कर दो" – बेन्यहूद ने घबराकर पुत्रों से कहा।

"पिता जी! यह क्या हो रहा है?" डरकर बेन्झियोन ने पूछा।

"लगता है, कोई नई विपत्ति आ गई......।"

जल्दी से चारदीवारी के दरवाजे बन्द कर अंदर आते हुए बेन्झियोन ने कहा – ''पिताजी! बीस से अधिक घुड़सवार बाहर खड़े हैं। लग रहा है कि वे हमारे घर ही आए हैं। परंतु वे हमारे शत्रु की तरह नहीं लग रहे हैं क्योंकि उन्होंने जो झण्डे हाथ में ले रखे हैं उन पर 'इजराइली सेना' लिखा है।

बेन्यहूद ने आश्चर्य से घर के आँगन में जाकर दीवारों से बाहर नजरें दौड़ाईं। सच ही बीस से अधिक युवा वहाँ थे। सभी ने अरबी वेशभूषा धारण कर रखी थी। बेन्यहूद को पहचान कर उन्होंने कहा – ''गुरु बेन्यहूद! हम आपकी रक्षा के लिए आए हैं....।''

''किंतु आप सब कौन हैं....? कहाँ से आए हैं....?''

''हम सब किसान हैं और स्वयं को इजराइली सैनिक मानते हैं। पास के ही भिन्न-भिन्न गाँवों और नगरों से हम आए हैं। आपके बहिष्कार का समाचार हमने सुना। इसलिए आपकी रक्षा के लिए ही हम आए हैं....।''

''ऐसा....!!!''

विपत्ति बुरे सपने की तरह दूर हो गई। बेन्यहूद का मन भावुक हो गया।

रक्षकों के आने की बात जंगल की आग की तरह नगर में जल्दी ही फैल गई। न केवल उतने, बल्कि और भी अनेक लोग बेन्यहूद के शिष्य हैं यह मालूम होते ही जेरुसलेम नगर के लोगों ने अचानक ही बेन्यहूद के परिवार के ऊपर लगाई गई बहिष्कार की आज्ञा को वापस ले लिया। सत्य है, भय बिन होय न प्रीति। अब सभी यहूदी उन लोगों से बातचीत करते थे, नगर में डेबोरा की कुशलता जानने के लिए बहुत से लोग आए। नए जन्मे शिशु के लिए दूध और अन्य प्रकार के आहार की जैसे बाढ़ ही आ गई। धीरे-धीरे शिशु स्वस्थ हो गया। निश्चिंत डेबोरा भी अपनी पुरानी स्थिति में आ गई।

''क्या नाम रखें इसका....?'' बेन्यहूद ने एक दिन पूछा!

''यह हमारे जीवन में शान्ति लाई है। इसलिए इसका नाम 'श्लोमिट्' (शान्ति) रखेंगे'' – डेबोरा बोली।

जीवन में शांति मिल गई है, इस विषय में बेन्यहूद को अभी भी विश्वास नहीं था। ''हो सकता है यह युद्ध के पहले की शांति हो....।'' उसने सोचा। फिर भी डेबोरा की बात को उसने माना। बच्ची का नामकरण 'श्लोमिट्' ही कर दिया गया।

मैं हार गया

डेबोरा को स्वास्थ्य लाभ के लिए हेमन्त ऋतु में दो महीने कहीं और जाना चाहिए, ऐसी डॉक्टर ने सलाह दी थी। इसलिए बेन्यहूद ने सपरिवार जाफ्फा जाने का निश्चय किया। उस दौरान उसने पत्रिका के संपादन और मुद्रण का उत्तरदायित्व अत्यंत आत्मीय सहयोगियों को सौंपा। पत्रिका के स्वरूप और विषय-वस्तु में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं करना है, बेन्यहूद ने उन्हें ऐसा निर्देश भी दिया। बेन्यहूद का विचार था कि यात्रा के समय भी वह शब्दकोश निर्माण का काम करता रहेगा। यात्रा की तैयारियाँ शुरू हो गईं। एक अच्छी घोड़ा-गाड़ी किराए पर ली गई। आवश्यक वस्तुएँ इकट्ठी की गईं। सबके लिए गर्म कपड़े और खाने की चीजें तैयार की गईं। तैयारियों को देखकर बेन्झियोन रोमांचित हो रहा था। वह तो जाने के समय की ही प्रतीक्षा कर रहा था। बहुत व्याकुल होते हुए भी बेन्यहूद ने पत्नी के स्वास्थ्य लाभ को ही मन में रखकर किसी प्रकार वहाँ से जाने के लिए स्वयं को तैयार किया था। वह भीं इस समय सामान्य गृहस्थ की तरह व्यवहार कर रहा था।

एक सुखमयी सुबह उन्होंने जेरुसलेम नगर से यात्रा शुरू की। बच्चे बहुत प्रसन्न थे, विशेष रूप से बेन्झियोन। डेबोरा श्लोमिट् को गोद में लेकर गाड़ी में बैठी थी। येमिमा पिता का हाथ पकड़ कर उनके पास बैठी थी। अविचायिल के साथ बेन्झियोन गाड़ी चलाने वाले के पीछे ही बैठा था। वह हर कदम पर 'ये क्या? वो क्या?' पूछता जाता था। गाड़ी चलाने वाला भी स्नेह से उसके प्रश्नों का उत्तर देता जाता था।

न केवल दिन में अपितु रात को भी यात्रा चलती रही। बीच-बीच में कुछ गाते हुए वह चालक घोड़ों को हाँकता जाता था। इसी बीच उन्होंने सामने से आता हुआ ऊँटों का एक समूह देखा। घोड़ा-गाड़ी चलाने वाले को यह शंका हुई कि कहीं ये अरबी लोग उन्हें परेशान न करें क्योंकि पहले भी उसे ऐसा अनुभव हुआ था किंतु ऐसा कुछ भी घटित नहीं हुआ। चालक ने गाड़ी आगे बढ़ा दी।

थोड़ी दूर जाने के बाद बेन्झियोन ने देखा कि तीन अरबी घुड़सवार गाड़ी का पीछा कर रहे हैं। बेन्झियोन ने पिता को बताया, बेन्यूहद ने भी पीछे देखा। सच ही था, तीनों पीछा करने वाले बंदूकधारी थे। बेन्यहूद ने गाड़ीवाले को आदेश दिया-"गाड़ी तेज चलाओ। घोड़ों की जल्दी हांको।" गाड़ीवान ने चाबुक मारते हुए घोड़ों को हांका। वे तेजी से दौड़े फिर भी पाँच मिनट के अंदर ही वे घुड़सवार गाड़ी के पास आ गए।

"पिताजी, वह तो लोलिक है....?" बेन्झियोन ने उन घुड़सवारों में से एक को पहचान कर कहा।

"सच! यह तो वही है...।" पास आए हुए लोलिक को पहचान कर बेन्यहूद ने कहा। लोलिक उन लोगों का नेता था जो कुछ दिनों पहले उसके परिवार की रक्षा के लिए आए थे।

"मित्र...। आप यहाँ कैसे...?" बेन्यहूद ने आश्चर्य से पूछा।

"आपकी यात्रा का समाचार सुना। इस रास्ते में आने वाले कष्टों की अधिकता को हम जानते हैं। हम भी जाफ्फा नगर के ही निवासी हैं। अभी वहीं जा रहे हैं। रास्ते में भी आपकी रक्षा करनी है, ऐसा सोचकर हम चल दिये। अरबियों के बीच कठिनाई न हो इसलिए उनके जैसे कपड़े भी हमने पहने हैं।"

उसके मुख से यह बात सुनकर बेन्यहूद बहुत प्रसन्न हुआ। लोलिक उसके परिवार के सभी सदस्यों का बहुत आत्मीय था। "अरे भाभी! सब कुशल तो है...? यात्रा में कैसा लग रहा है...?"- उसने डेबोरा से भी पूछा।

"आप जैसे लोगों के साथ रहने पर क्या चिंता? सब कुशल ही है।"-उसने कहा।

सबसे अधिक प्रसन्न बेन्झियोन था। घुड़सवार और बंदूकधारी लोलिक के प्रति उसे बहुत आकर्षण था। पिछले महीने उन दोनों की बहुत प्रगाढ़ मित्रता भी हो गई थी। बेन्झियोन हमेशा लोलिक को कहानी के नायक की तरह श्रद्धा भाव से देखता था।

"पिताजी...! मैं भी लोलिक के साथ घोड़े पर बैठ जाऊँ? कृपया अनुमति दे दीजिए..."-उसने पिता से प्रार्थना की।

"नहीं बेटा! उसे कष्ट होगा..." उसने पुत्र को टालना चाहा।

"नहीं, कोई कष्ट नहीं है। आ जाओ ..."-लोलिक बोला। बेन्झियोन

आनंद से घोड़े पर चढ़ गया। अपने आगे उसे बिठाकर, वह गिरे न इस प्रकार पकड़ कर लोलिक ने घोड़े को हाँका। उसने रोमांचित बेन्झियोन से कहा " डरो मत! तुम्हें भी अच्छा घुड़सवार बनाऊंगा ...।" उसके हाथों में ही लगाम पकड़वा कर उसने घोड़े को आगे बढ़ाया।

"तेज चलते हैं और भी तेजी से ..."-हर्षातिरेक से बेन्झियोन बोला। "चल सकते हैं। परंतु गाड़ी की रक्षा के लिए हमें उसके पीछे ही रहना पडेगा..." लोलिक ने उसे याद दिलाया। फिर भी बीच-बीच में वह उसे थोड़ी दूर गाड़ी से आगे ले जाता था। बेन्झियोन के लिए यह अविस्मरणीय यात्रा थी।

जाफ्फा नगर समुद्र के किनारे है। पहले कभी बेन्झियोन ने समुद्र नहीं देखा था। पहली बार देखकर वह समुद्र के प्रति बहुत आकर्षित हो गया। समुद्र की गहराई, विशालता, उसकी तरंगों की गर्जना, उसके ऊपर तैर रहीं नावों आदि से वह मुग्ध हो गया।

जाफ्फा नगर में बहुत से यहूदी थे। उन्होंने बेन्यहूद परिवार का हार्दिक स्वागत किया। उनके रहने इत्यादि की व्यवस्था के लिए भी उन लोगों ने सहायता की। एक छोटा घर किराए से ले लिया गया। वहाँ व्यवस्थित रूप से वस्तुएँ जोड़कर डेबोरा भोजन बनाने में मग्न हो गई। बेन्यहूद बार-बार वहाँ के लोगों से मिलकर उनको और भी प्रोत्साहित कर रहा था। शब्दकोश निर्माण का कार्य उसने वहाँ भी जारी रखा था।

जाफ्फा नगर के सुखमय वातावरण में बच्चे बहुत प्रसन्न थे। विशेष रूप से बेन्झियोन। लोलिक के साथ उसकी मैत्री भी बढ़ गई थी। लोलिक जिस प्रकार कुशल घुड़सवार था उसी प्रकार कुशल नाविक भी था। उसका एक छोटा जहाज भी था। समुद्रप्रिय बेन्झियोन ने रोज ही लोलिक के साथ समुद्र में घूमना शुरू कर दिया। "मैं भी अच्छा नाविक बनूँगा" ऐसा विचार बेनझियोन के मन में उत्पन्न हो गया। लोलिक भी उसे उत्साहित करता था। वे दोनों ही प्रतिदिन जहाज से कुछ दूर समुद्र में घूमने के लिए जाते थे। कभी-कभी दूर तक भी निकल जाते थे।

जाफ्फा नगर में बहुत से अरबी रहते थे। नाव ही उनकी जीविका का साधन था। छोटी-छोटी डोंगियाँ, मध्यम आकार के जहाज और बड़ी-बड़ी नावें भी उनके पास थीं। अबुहमीस भी एक नाविक था जिसके पास अनेक छोटी

डोंगियाँ, मध्यम आकार के पोत तथा कुछ बड़ी नौकाएँ थीं। लोलिक के माध्यम से बेन्झियोन का अबुहमीस से परिचय हुआ। बेन्झियोन यद्यपि छोटा था फिर भी उसकी जिज्ञासा से अबुहमीस बहुत खुश हुआ। वह बेन्झियोन को अपनी अरबी भाषा में समुद्रयात्रा की आकर्षक कथाएँ सुनाता था। अब तक बेन्झियोन थोड़ी-थोड़ी अरबी भाषा भी जान गया था इसलिए अबुहमीस की कहानियों को बहुत ध्यान से सुनता था। उन कहानियों को सुनकर उसके मन में अबुहमीस किसी महान नायक की तरह चित्रित हो गया।

एक दिन लोलिक के साथ बेन्झियोन समुद्र विहार कर रहा था। उस दिन वे दोनों समुद्र में कुछ ज्यादा ही दूर चले गए थे। बातचीत में मग्न वे कितनी दूर आ गए, यह जान ही नहीं पाये। इसी बीच अचानक आकाश में काले बादल दिखाई देने लगे। ''बेन्झियोन! बारिश होगी। जल्दी लौटना चाहिए'' - लोलिक बोला। प्रचण्ड वायु भयंकर वेग से बहने लगी। उसने दूर से देखा कि अन्य नाविक भी दुर्घटना की आशंका से जल्दी-जल्दी लौट रहे थे। उसने कोशिश करते हुए जहाज की दिशा परिवर्तित करनी चाही परंतु, अफसोस! भयंकर तरंगों ने उसका प्रयत्न विफल कर दिया। वे जहाज को विपरीत दिशा में ही ले जा रही थीं। ''बेन्झियोन! सावधान रहो। मजबूती से पकड़ो'' ऐसा कहते हुए लोलिक ने जहाज चलाने के पहिए को दोनों हाथों से मजबूती से पकड़ कर पूरी शक्ति लगाकर उसे घुमाने का प्रयत्न किया। परंतु तभी अचानक आई भयंकर तरंग ने जहाज में घुसकर लोलिक को ऐसा धक्का दिया कि पहिए को छोड़कर वह नीचे गिर गया और घायल हो गया। जहाज के अंदर भी पानी घुस गया। ''लोलिक! अब क्या होगा....? हम जीवित रहेंगे क्या....?'' बेन्झियोन ने घबराते हुए पूछा।

''चिंता मत करो। सब ठीक हो जाएगा। ईश्वर का ध्यान करो....'' यद्यपि लोलिक ने ऐसा कहा, फिर भी उसका मन किसी दुर्घटना की आशंका से भर गया। अब कैसे लौटना है उसे समझ में नहीं आ रहा था। बीच-बीच में जहाज में घुसने वाली तरंगों से उसके अंदर पानी भर रहा था।

''लोलिक, फिर कभी मैं समुद्र की यात्रा नहीं करूँगा।'' तब तक अन्य कोई नौका उनके पास आ गई। उसे पहचान कर आनंद से बेन्झियोन ने कहा - ''यह अबुहमीस की नाव है....।''

''हाँ। लगता है, हमारी रक्षा के लिए वह आया है....।'' तब तक वह नाव पास आ गई। जहाज के पास नाव को लाकर अपने लंबे हाथों को फैलाकर

अबुहमीस ने काँपते हुए बेन्झियोन को उठाकर अपनी नाव में पहुँचा दिया। उसके द्वारा फेंकी हुई रस्सी को पकड़ कर लोलिक भी नाव में पहुँच गया। दोनों का शरीर पूरी तरह गीला था। बारिश में भीगे हुए कबूतर के बच्चे की तरह बेन्झियोन काँप रहा था। मुख से वह दंतवीणा बजा रहा था (उसके दांत किटकिटा रहे थे)। अबुहमीस ने गर्म कपड़े से उसे ढक दिया। तट पर पहुँच कर लोलिक और अबुहमीस ने उसे हाथों में उठाकर घर पहुँचाया। तब तक बेन्झियोन का शरीर बहुत गर्म हो गया था। बुखार से पीड़ित बेन्झियोन को सुला कर डेबोरा ने उन दोनों को धन्यवाद दिया। कुछ देर बाद वे दोनों चले गए।

रात के साथ-साथ बेन्झियोन का बुखार भी बढ़ता गया। डेबोरा डॉक्टर को लेकर आई। उसने बेन्झियोन का परीक्षण कर दवाई दी। तब तक बेन्यहूद भी घर आ गया। मध्यरात्रि तक वहीं रुके हुए डॉक्टर ने वहाँ से जाते हुए कहा– ''प्रत्येक घंटे दवाई देनी है। मैं सुबह आकर देखूँगा।''

पूरी रात डेबोरा पुत्र के पास ही बैठी रही। उसके गर्म ललाट पर गीला कपड़ा रखते हुए बीच-बीच में पेय पिलाते हुए वह उसका शरीर पोंछती रही। सुबह बेन्यहूद उसे आराम के लिए भेजकर स्वयं पुत्र के पास बैठ गया।

''डेबोरा, डेबोरा ....! जल्दी यहाँ आओ'' पाँच मिनट में ही उसने जोर से बुलाया।

''क्या हो गया ....?'' दौड़ती हुई डेबोरा पास आई।

''देखो ....। वह नींद में कुछ बोल रहा है .... ''पुत्र की ओर संकेत करते हुए बेन्यहूद बोला।

ऐसी स्थिति में भी डेबोरा को हँसी आ गई। ''बीमार लोग इस प्रकार सपने में बोलते हैं। इसमें क्या विशेष है ....?'' उसने कहा।

''परंतु डेबोरा! ध्यान से सुनो।'' उसने पुत्र के मुख के पास कान ले जाकर सुना। बेन्झियोन अरबी भाषा में कुछ बड़बड़ा रहा था।

''सुना ....? अपने प्रिय पुत्र के वचन सुने .... ? दो हजार वर्षों के बाद जन्मे सर्वप्रथम हीब्रू भाषी शिशु के ....! डेबोरा! मेरे सारे प्रयत्न विफल हो गए! मैं हार गया ....! मैं हार गया ....!!''

उद्वेग के कारण बेन्यहूद काँप रहा था। पुत्र की सेवा करूँ या पति को सांत्वना दूँ, परिस्थिति को समझ न पा रही डेबोरा स्तब्ध खड़ी रह गई।

वह रात बड़ी कठिनाई से बीती। बेन्यहूद की बेचैनी समाप्त नहीं हुई। सुबह उसे शान्त करते हुए डेबोरा बोली – "प्रिय! क्यों निरर्थक सोच रहे हैं आप? ऐसे तेज बुखार की स्थिति में किसी की बुद्धि खुद के नियंत्रण में नहीं रहती। बेन्झियोन खुद भी नहीं जानता था कि वह अरबी भाषा में बोल रहा है। जाग्रत अवस्था में तो वह हीब्रू भाषा ही बोलता है ....।"

"इसीलिए तो मुझे चिंता है! पुत्र जाग्रत अवस्था में तो हीब्रू भाषा में बोलता है और सपने में अरबी भाषा में ....। इसका क्या मतलब है ....? वह बुद्धि का प्रयोग करके, कोशिश करके हीब्रू भाषा बोलता है। जाग्रत और स्वप्न अवस्था में तो मन से वह इस भाषा को नहीं चाहता है। इससे द्वेष करता है इसलिए ही उस समय उसके मुख से अन्य भाषा निकलती है। अफसोस! इन वर्षों में उसे सभी से मिलने का अवसर देकर मैंने गलती की। खराब मित्रों ने उसका मन दूषित कर दिया है। हम जल्दी ही जेरुसलेम नगर लौट जायेंगे। मैं फिर से बेन्झियोन को उसी वातावरण में पालूँगा जहाँ वह केवल हीब्रू भाषा ही सुने ....।"

इस समय डेबोरा चुप हो गई!

तीन–चार दिनों में धीरे–धीरे बेन्झियोन स्वस्थ हो गया। माँ के मुख से 'जल्द ही हमें लौटना है' सुनकर आश्चर्य से उसने कहा – "परंतु माँ! पहले तो हमारी योजना थी कि हम यहाँ दो महीने तक रहेंगे। अभी तो एक महीना भी नहीं बीता ....। यहाँ हम आनंद से हैं। अभी किसलिए लौटना है ....?"

"वह तो ठीक है बेटा! परंतु यह तुम्हारे पिता का निर्णय है ....।"

"मैं जानता हूँ कि उन्हीं का निर्णय है। वे हमेशा सबके मालिक की तरह ही व्यवहार करते हैं। उनको जो पसंद है वही तय करते हैं, और अन्य लोगों पर थोप देते हैं ....।" बेन्झियोन जानता था कि पिता के निर्णय का माता भी कभी विरोध नहीं कर सकती। फिर उसके विरोध की तो कोई गिनती ही नहीं है।

वापसी यात्रा का दिन भी निश्चित हो गया। सामान बाँधना शुरू कर दिया गया। जाने के पहले बेन्झियोन ने माँ से पूछा – "जाना निश्चित ही है। ठीक है। क्या आज अंतिम बार अपने मित्रों से मिलकर आ जाऊँ?"

"ठीक है बेटा! पर देर मत करना। क्योंकि तुम जानते हो कि अरबी भाषा में मित्रों से बात करना तुम्हारे पिताजी को अच्छा नहीं लगता।"

"ठीक है" ऐसा कहकर वहाँ से जाते हुए बेन्झियोन के मन में विचार आया कि कोशिश करके किसी तरह पिताजी की सर्वाधिकारी प्रवृत्ति का विरोध

करना चाहिए। समुद्र के तट पर उसे देखकर अबुहमीस बहुत प्रसन्न हो गया। लोलिक भी वहीं था। उन दोनों के मन में बेन्झियोन के स्वास्थ्य के विषय में बड़ी चिन्ता थी।

"मित्र! मैं एक कार्यक्रम का आयोजन करूँगा। आने वाले मंगलवार को हम समुद्र विहार करेंगे" – अबुहमीस बोला!

"परंतु मैं नहीं आऊँगा" – बेन्झियोन ने दुःखी होकर कहा।

"किसलिए? समुद्र से डर गए?"

"नहीं, जेरुसलेम वापस जाएँगे।"

"क्यों ....? पहले तो तुमने कहा था कि हम दो महीनों तक यहाँ रहेंगे....।" उसने जिज्ञासा से पूछा।

"सही है, पहले वैसा ही निश्चित किया था परंतु अब मेरे पिताजी ने निर्णय किया है कि कल ही लौटना है।"

"इस प्रकार का निर्णय क्यों....?"

"भगवान ही जानता है। मैं तो नहीं जानता कि वह कब किस प्रकार का निर्णय करते हैं। बिना कुछ कहे उनका निर्णय हमें मानना होता है, बस"- बेनझियोन ने मन की पीड़ा व्यक्त की।

उसकी बात सुनकर उन बच्चों के बीच से कोई बोला-"मेरे पिता कहते हैं कि तुम्हारे पिता बहुत विचित्र हैं। वे खुद को जो पसंद है वही करते हैं....।"

"केवल इतना ही नहीं, दुराग्रही भी हैं...." दूसरे बालक ने कहा। बेन्झियोन के मन में पिता के विषय में जो विचार थे, वही वे बच्चे कह रहे थे।

"कल मेरी माँ पिता से कह रही थी कि तुम्हारे पिता ने धनवान परिवार में जन्मी, सुख से पली हुई कोमलांगी तुम्हारी माँ को राक्षस की तरह कष्ट दिया....।" एक अन्य बालक ने कहा।

"यह भी पूरी तरह सत्य ही है" बेन्झियोन ने सोचा।

किसी और बालक ने कहा-"मेरे पिता बोल रहे थे कि कुछ असम्भव प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील वह खुद का जीवन तो नष्ट कर ही चुका है, दूसरों का जीवन भी नाश कर रहा है। खुद नष्ट होकर दूसरों का नाश कर रहा है....।"

"अफसोस! क्या कर सकते हैं....? तो आज ही तुम चले जाओगे?" ऐसा कहकर अबुहमीस ने उस विषय को समाप्त कर दिया। उसके बाद आधे घंटे तक वहाँ रुक कर उन दोनों से विदा लेते हुए जब वह अपने घर की दिशा में

चला तब दस से अधिक बच्चे उसके पीछे चल दिए। उनके घर भी नगर में थे इसलिए वे भी उसके साथ चले आये।

रास्ते में फिर उनकी बातचीत चालू हुई। बेन्झियोन को देखते हुए एक बालक बोला–''मेरे घर वाले बोल रहे थे कि तुम्हारे घर में सप्ताह में दो–तीन बार उपवास करना पड़ता है। क्या यह सच है....?''

सच होते हुए भी यह बात बालक कैसे स्वीकार करे?

''तुम्हारी माता की जब–तब तबियत बिगड़ती रहती है। उसमें भी तुम्हारे पिता का बुरा व्यवहार ही कारण है, ऐसा मेरे घर के लोग एक दूसरे से बात कर रहे थे।''

''हाय! ऐसा दुष्ट है क्या वह....?'' किसी ने आश्चर्य से पूछा।

''और क्या? दिन–रात हीब्रू का जाप करते हुए, वह यह भी नहीं सोचता कि पत्नी–पुत्र आदि जी रहे हैं या नहीं....।'' ऐसा कहकर उसके आगे उस बच्चे ने जोड़ा-''मैं नहीं जानता, मेरे पिता ने मेरी माँ से ऐसा कहा....।'' यह सब सुनते हुए बेन्झियोन का अंतरंग जैसे उबल रहा था।

''अपने दुष्ट पिता का विरोध क्यों नहीं करते....?''–किसी बच्चे ने पूछा।

''सही तो है....? तुम ये सब क्यों सहन करते हो? क्यों उसका विरोध नहीं करते....?'' – दूसरे ने उसका समर्थन किया।

''ठीक है, मुझे बदला लेना चाहिए। दुष्ट पिता का विरोध करना चाहिए। आज ही....अभी ही....'' – बेन्झियोन के मुख से निकला।

''देरी क्यों....? हम सब तुम्हारे साथ में हैं....'' – उन्होंने घोषणा की। बेन्झियोन की तुलना में तीन–चार साल बड़े बच्चे भी वहाँ थे। उनकी तो उस विषय में बहुत उत्सुकता थी।

''उसके जाने का रास्ता रोककर हम खड़े हो जायेंगे। दूर से अंडे आदि उसके ऊपर फेंकते हैं'' – दूसरे ने तरीका सुझाया।

''ठीक है, वैसा ही करते हैं। आधे घंटे बाद वह इसी रास्ते से आने वाला है। तब तक तैयार हो जाते हैं''–बेन्झियोन बोला। जल्दी से वे सब लोग अपने घरों से अंडे और सड़ी हुई सब्जियाँ इकट्ठी करके ले आए। जिन्हें वैसी कोई चीज नहीं मिली उन्होंने छोटे–छोटे पत्थरों से अपनी जेबें भर लीं। तब तक शाम हो गई। रास्ते में एक जगह अँधेरा था। वहीं बच्चों की सेना खड़ी हो गई। एक उत्साही बालक पास के घर की छत पर चढ़कर वहीं से मार्ग देखता हुआ

बाकी सब लोगों को निर्देश दे रहा था। कुछ देर बाद दूर से आता हुआ बेन्यहूद उसे दिखाई दिया। बेन्यहूद हमेशा की तरह चिंतामग्न और असावधान चला आ रहा था। ''तैयार रहो.... वह दुष्ट आ गया है....''– उस बालक ने कहा। जब बेन्यहूद पास में आ गया तब उसने आदेश देते हुए कहा–''शुरू करो....।''

जल्दी ही बेन्यहूद के ऊपर चारों दिशाओं से अंडों, सब्जियों और पत्थरों की बारिश होने लगी। ''अरे, यह क्या है? ऐसा क्यों कर रहे हो....?'' बेन्यहूद का प्रश्न कंठ में ही रह गया। बच्चों का शोरगुल सुनकर पास के घरों से भी कुछ लोग बाहर आ गए। अफसोस! उन घरों में रहने वाले अधिकांश लोग बेन्यहूद के विरोधी ही थे।

''बेन्यहूद को बच्चे सजा दे रहे हैं। उसका पुत्र भी उस समूह में शामिल है। अच्छा ही हुआ। जो नहीं करना चाहिए वह यदि किया जाये तो और क्या होगा....।'' - किसी गृहस्थ ने कहा।''अरे हीब्रू पुनरुद्धारक! हमारे नगर में तेरी सेवा की कोई आवश्यकता नहीं। निकल जा यहाँ से ....'' – दूसरा गृहस्थ बोला। दूसरे कुछ लोगों ने भी उसमें अपना स्वर मिलाया।

बच्चे बेन्यहूद के चारों और नाचते हुए राग के साथ गीत गा रहे थे – ''दुष्ट धूर्त! निकल जा! मूर्ख पिता तू निकल जा!!'' अस्त्रों का फेंकना तो चल ही रहा था।

शीघ्र ही बेन्यहूद की दृष्टि समूह के बीच में स्थित बेन्झियोन के ऊपर पड़ी। आश्चर्य से उसकी आँखें फैल गईं। वह जल्दी से पुत्र के पास जाकर हाथ पकड़ कर उसे खींचते हुए तेज चाल से किसी प्रकार बच्चों की सेना के बीच से खुद को बचाते हुए घर की ओर दौड़ा। घर पहुँचकर जब तक उसने दरवाजे की कुंडी लगाई तब तक बेन्झियोन जान चुका था कि आज अंतिम युद्ध होगा। वह इसके लिए तैयार ही था। पत्थर की मूर्ति की तरह वह पिता के सामने खड़ा होकर बोला – ''मारो, खूब मारो। जब तक न थको, तब तक मारो। परंतु याद रखो कि मारने से या मेरा मुँह बंद कर देने मात्र से इस सच को नहीं छुपाया जा सकता कि आपके जैसा क्रूर, मूर्ख, पत्नी और पुत्र को कष्ट देने वाला कोई और नहीं हो सकता है। संसार में सभी आपसे घृणा करते हैं ....!!''

बेन्यहूद की आँखें सिकुड़ गईं। उसने क्षण भर तक इस प्रकार पुत्र का मुँह देखा जैसे पहली बार देख रहा हो। उसके बाद एक भी शब्द बिना कहे वहाँ से निकलकर अपने कमरे में जाकर दरवाजा बंद कर कटे हुए पेड़ की तरह बिस्तर पर गिर गया।

●●●●

सारी घटना जानकर डेबोरा बहुत दुःखी हो गई। पुत्र का ऐसा व्यवहार उसने कभी सोचा भी नहीं था। "बेटा! पिता के प्रति तूने ऐसा व्यवहार क्यों किया? क्या तू जानता है कि तेरे पिता तुझे कितना स्नेह करते हैं ....?" उसने बेन्झियोन को शान्त करते हुए पूछा।

"बिल्कुल झूठ! यह भी कोई प्रेम करने का तरीका है ....?"

"हाँ बेटा! तेरे पिता का प्रेम करने का तरीका अलग ही है। उनके विषय में तुम हमेशा गलत ही सोचते हो।"

"झूठ बोलने से क्या होगा माँ! अब मैं आठ साल का हूँ। कोई छोटा बच्चा नहीं हूँ। मुझमें भी बुद्धि है। मैं सब समझता हूँ ....।"

"पुत्र का बचपन जा रहा है। अभी भी उसे उसके पिता के जीवन का उद्देश्य विस्तार से समझाना चाहिए" – ऐसा निश्चय कर डेबोरा बोली – "सही है बेटा! अब तुम सब समझते हो। मैं भी आज तुम्हें सब कुछ बताती हूँ। अभी भोजन करो उसके बाद सुनना ....।"

●●●●

उसी रात को डेबोरा ने पुत्र को बेन्यहूद के अभी तक के जीवन के विषय में विस्तार से बताया। लुइकी नगर में लीब्पर्लमन परिवार में एलिसर का जन्म, उसके पिता की मृत्यु, मामा के यहाँ सहारा मिलना, पोलाट्स्क नगर में धर्मशाला में निवास करना, वहाँ हीब्रू भाषा में अनुवाद की हुई रॉबिन्सन क्रूसो पुस्तक पढ़ने के कारण घर से निष्कासन, वहाँ से ग्लुबोकिया नगर जाना, वहाँ योनस के परिवार का सहारा मिलना, योनस के कारण हीब्रू भाषा के विषय में अभियान का उदय, डॉक्टरी के शिक्षण के लिए पेरिस जाना, वहाँ बीमार होना, यहूदी संस्कृति के पुनरुत्थान के लिए हीब्रू भाषा को फिर से व्यवहार में लाने के लिए संकल्प ग्रहण, इसी बीच विवाह, इजराइल आना, हीब्रू भाषा की परम्परा पुनर्जागरण, पत्रिका का आरंभ, शब्दकोश के निर्माण का आरंभ, सभी का विरोध सहन करके भी उसके द्वारा किया जा रहा संघर्ष सब कुछ विस्तार से डेबोरा ने वर्णित किया। आश्चर्यचकित होकर जैसे कोई अद्भुत कथानक सुन रहा हो उस प्रकार बेन्झियोन ने सब कुछ सुना।

अंत में डेबोरा ने कहा – "बेटा! अब तुम्हें पिता का असाधारण युद्ध कुछ समझ में आया होगा। मैं भी जानती हूँ कि तुम्हारे पिता कभी-कभी दुराग्रह करते हैं और उनकी इच्छा के अनुसार ही दूसरे लोग भी कार्य करें, यह भी चाहते हैं। किंतु बेटा! जानते हो, उसमें भी उनका लेशमात्र भी स्वार्थ नहीं है। उनके

जीवन का एक ही लक्ष्य है – हीब्रू भाषा फिर से व्यवहार की भाषा बने, जिससे यहूदी संस्कृति का पुनरुत्थान हो। हमारा तो भाग्य है कि हम भी इस प्रकार के पवित्र कार्य में उनके सहयोगी हैं। आने वाले समय में जब संसार तुम्हारे पिता के द्वारा किए जाने वाले तप को जानेगा, इतिहासकार जब उनकी साहस गाथा लिखेंगे, तब उसमें सबसे पहले हीब्रू मातृभाषा बोलने वाले शिशु के रूप में तुम्हारा भी उल्लेख होगा। बेटा! ऐसे भाग्यशाली हो तुम। तुम आज जो कष्ट सहन कर रहे हो वही तुम्हें भविष्य में अमर करेगा।''

अपने पिता के रोमांचक वृत्तांत को सुनते हुए बेन्झियोन की आँखें आँसुओं से भर गई। अंत में भरत वाक्य की तरह डेबोरा बोली– ''याद रखो बेटा! तुम्हारे पिता केवल आत्मशक्ति से जीवित हैं। हम सबको उनकी आयु बढ़ाने का प्रयत्न करना चाहिए। उनकी मानसिक शांति की रक्षा करनी चाहिए। उनकी इस यज्ञशक्ति को रोकने वाले न बनो। उनके मार्ग में बाधक न बनो। तुम मेरे नाम से शपथ लो कि फिर कभी पिता से असहमत नहीं होगे। तुम न तो कभी पिता का विरोध करोगे और न ही निंदा। क्या तुम मेरी, अपनी प्रिय माँ की इस एक अपेक्षा को पूरा करोगे....?'' डेबोरा भाव–विह्वल हो गई। अपना सीधा हाथ आगे फैलाकर पुत्र का सीधा हाथ पकड़कर बोली–''बेटा! वचन दोगे क्या ....?''

दीनता से याचना करती हुई माता को देखते हुए बालक बेन्झियोन का मन भी पिघल गया। आठ वर्ष का वह बालक अठारह साल के युवक की तरह माँ को सांत्वना देते हुए बोला– ''वैसा ही होगा माँ! मैं वचन देता हूँ ....।''

उस रात बहुत देर से, लेकिन अत्यंत निश्चिंतता और सुख से माता और पुत्र सोये।

जीवन पुष्प का समर्पण

बेन्यहूद का परिवार पूर्व निश्चित दिन से बहुत पहले ही जाफ्फानगर से जेरुसलेम लौट आया। वहाँ से लौटने के बाद डेबोरा प्रतिदिन दुर्बल होती जा रही थी। इसी बीच वह फिर से गर्भवती हो गई। इस समय तो वह अत्यधिक कमजोर होती जा रही थी। वह बार-बार खाँसती रहती थी। खाँसी में खून की बूँदें भी गिरती थीं। बेन्यहूद के क्षय रोग का उसमें भी संक्रमण हो गया था। अभी तक वह चार बच्चों को जन्म दे चुकी थी। अनेक बार प्रसव होने के कारण उसका शरीर निर्बल हो चुका था। बेन्यहूद की आर्थिक स्थिति में कुछ प्रगति हो गई थी। पत्रिका के ग्राहकों की संख्या भी दिन प्रतिदन बढ़ रही थी। उसके विचार भी बहुत सारे लोगों द्वारा स्वीकारे जा रहे थे। हीब्रू भाषा बोलने वालों की संख्या भी धीरे-धीरे बढ़ रही थी। उसका शब्दकोश निर्माण का काम भी नियम से चल रहा था। किंतु सुखों के भोग का अनुकूल समय आने पर भी इस समय गृहिणी के बीमार होने के कारण उसके घर से सुख दूर ही खड़े थे।

इन दिनों डेबोरा को घर के अंदर चलने में भी कष्ट का अनुभव होता था। पैर घसीटती हुई सी चलती हुई किसी प्रकार से वह घर के कार्यों को पूरा करती थी। प्रसव के समय तो डेबोरा की ऐसी स्थिति थी कि वह नवजात पुत्री को गोद में उठाने में भी असमर्थ थी। अपनी पाँचवी संतान अर्थात् तीसरी पुत्री का नाम उन्होंने 'अटारा' रखा जिसका अर्थ 'मुकुट' होता है। अटारा अत्यंत दुर्बल थी। प्रसव के बाद कई महीनों तक डेबोरा बिस्तर पर ही रहती थी और उसके पास अटारा। जितना हो सकता था बेन्झियोन माँ की सहयता करता था। अन्य बच्चे तो पूरा दिन घर में कोलाहल करते थे। बेन्यहूद अपने काम में ही मग्न रहता था। इस कारण बच्चों की देखभाल करने वाला कोई नहीं था। समय पर स्नान, भोजन आदि के अभाव में वे बच्चे बीमार की तरह दिखाई देते थे। माता पिता के होने पर भी वे अनाथों की तरह गंदे कपड़े पहने हुए आपस में लड़ते रहते थे। सब कुछ देखते हुए भी डेबोरा कुछ करने में असमर्थ थी। एक बार उठती थी तो फिर से सोने तक उसकी खाँसी रुकती ही नहीं थी। इसलिए इन दिनों उसने बिस्तर से उठने की कोशिश करना भी छोड़ दिया था।

बच्चों की दुर्दशा बेन्यहूद से भी छिपी नहीं थी परंतु इस विषय में क्या करना चाहिए, यह उसे नहीं सूझ रहा था। ऐसी बुरी स्थिति में उसे माँ फेगा की याद आई। ''अब तो वह भी बूढ़ी होगी फिर भी यदि वह यहाँ आएगी तो कुछ तो सहारा मिलेगा'' ऐसा सोचकर बेन्यहूद ने उसी दिन अपनी माँ को विस्तार से पत्र लिखा। यहाँ का सारा विवरण देकर अंत में उसने लिखा – ''कृपया मेरी सहायता के लिए बिना देर किए आ जाओ। हम यहूदियों की इस पुण्यभूमि में रहने की इच्छा आपकी भी होगी।''

शीघ्र ही फेगा का पत्र आया कि वह भी आने के लिए उत्सुक है। माँ का पत्र पढ़कर बेन्यहूद ने चिंतामुक्ति की गहरी साँस ली। जल्दी ही रूस से माँ को लाने की व्यवस्था के विषय में उसने सोचा। परंतु एक नई समस्या खड़ी हो गई। इजराइल देश में अभी भी तुर्कियों का ही शासन था। तुर्क अधिकारीगण इन दिनों किसी भी यहूदी को फिलीस्तीन आने की अनुमति नहीं देते थे। यहूदी लोग आकर यहाँ निवास करने वाले अरबी लोगों को परेशान करेंगे ऐसा उन्हें डर था। बेन्यहूद ने माँ को लाने की अनुमतिपत्र के लिए आवेदन किया तो उन अधिकारियों ने वह निरस्त कर दिया। साठ से अधिक आयु की कोई वृद्ध महिला किस प्रकार शासन की हानि कर सकती है, ऐसा भी उन्होंने नहीं सोचा। बेन्यहूद निराश हो गया। उसके मित्रों ने उसे दूसरा रास्ता सुझाया कि शासन को पता न लगे इस प्रकार अनधिकृत तरीके से अर्थात् उल्टे मार्ग से उसे लाना होगा। न चाहते हुए भी बेन्यहूद ने उस तरीके को मान लिया।

उसके बाद उन लोगों के मार्गदर्शन के अनुसार किसी नाव से यात्रा करते हुए माँ फेगा जाफ्फानगर पहुँची। वहाँ नौकातट पर प्रतीक्षा कर रहे बेन्यहूद के मित्रों ने वहाँ के कर्मचारियों को रिश्वत देकर उस वृद्ध महिला को बोरी में बन्द कर आलुओं की बोरियों के बीच में छिपाकर किसी प्रकार नौका तट के अधिकारियों को धोखा देकर वहाँ से बाहर निकाला। नगर में किसी धर्मशाला में बेन्यहूद उस की प्रतीक्षा कर रहा था। कर्मचारियों ने आलुओं से भरी उस बोरी को कंधे पर उठाकर उस धर्मशाला में पहुँचाया। बेन्यहूद के कमरे में पहुँचकर जब उन्होंने थैले का मुँह खोला तब धीरे से उसमें से वृद्धा फेगा बाहर निकली। सामने खड़े पुत्र को देखकर वह भावुक हो गई। प्राय: बीस वर्षों के लंबे समय के बाद उसने पुत्र को देखा था। जल्दी से पास आए हुए पुत्र का आलिंगन करके उसके गाल पर चुंबन देकर उसने पूछा, ''अरे बेटा! कैसे हो तुम? सब ठीक तो है? कैसे इतने दुबले हो गए हो...?'' परंतु बेन्यहूद चुप ही खड़ा था। वह हीब्रू

भाषा में बोला, "माँ! इस पवित्र इंजराइल भूमि में आपका पुत्र केवल हीब्रू भाषा में ही बोलता है, अन्य किसी भाषा में नहीं। मुझे क्षमा करें। यदि मेरे साथ बातचीत करनी है तो आपको भी हीब्रू भाषा में अभ्यास करना होगा। और कोई उपाय नहीं है ...।"

वहाँ खड़े किसी व्यक्ति ने इस बात का अनुवाद करके माँ को बताया। माँ की आँखों से आँसू निकल पड़े। किंतु उसने भी बेन्यहूद को विचलित नहीं किया। वहाँ से निकलकर वे गाड़ी से जेरुमलेम आ गए। यात्रा के दौरान बेन्यूहद एक भी शब्द नहीं बोला।

●●●●

वृद्ध होने पर भी फेगा घर के कामों में कुशल थी। उसने जल्दी ही घर की व्यवस्था की जिम्मेदारी ले ली। पुत्रवधू डेबोरा को पूरा आराम देते हुए उसने घर के सारे कार्यों को अपने कंधों पर ले लिया। उबटन से उसने बच्चों को स्वच्छ किया। उनके लिए भोजन बनाया। बहुत दिनों के बाद बच्चों ने स्वादिष्ट भोजन किया। बच्चों के साथ बात करने में तो उसके लिए भाषा की समस्या थी। इसलिए बेन्यहूद ने अपनी माँ को हीब्रू भाषा सिखाने के लिए बेन्झियोन को नियुक्त कर दिया। साठ साल की उस वृद्धा को हीब्रू भाषा में वर्णमाला का अभ्यास करना था। कठिन होने पर भी उसने शुद्ध मन से प्रयत्न किया। बेन्यहूद ने न चाहते हुए भी उसे कुछ दिन के लिए अनुमति दी। इस बीच डेबोरा तो इतनी दुर्बल हो गई थी कि गृहकार्य से मुक्ति पाकर भी उसके स्वास्थ्य में कोई लाभ नहीं हो रहा था। कुछ दिनों से वह और भी अधिक अस्वस्थ हो गई थी। अंत में डॉक्टर के कहने पर उसे चिकित्सालय में भर्ती किया गया। उसके लिए आराम अत्यधिक आवश्यक था। अत: बच्चों को चिकित्सालय लाने के लिए भी वैद्य मना कर देते थे। साथ ही, उसका क्षय रोग कहीं बच्चों में संक्रमित न हो जाये, इसी डर से डाक्टर ने आदेश दिया कि डेबोरा बच्चों से दूर ही रहे। इसलिए माँ से मिलने के लिए चिकित्सालय जाकर भी बच्चों को माँ को दूर से देखकर ही संतोष करना पड़ता था। दूध पीती अटारा और उससे बड़ी श्लोमिट् तो कुछ भी समझने में असमर्थ थीं। येमिमा और अविचायिल इस समय माँ के कष्ट को थोड़ा-थोड़ा समझते थे। सबसे बड़ा बेन्झियोन ही सब कुछ समझने में समर्थ था। अन्य बच्चों के जाने के बाद अपने बिस्तर के पास में बैठे हुए बेन्झियोन से डेबोरा बार-बार पूछती थी-"बेटा। अपना वचन याद है ना?"

प्राय: एक महीने बाद डेबोरा की अस्पताल से छुट्टी हुई। उसके अस्पताल से लौटने से पहले ही बेन्यहूद ने घर बदल लिया था। नया घर पर्याप्त

बड़ा, सुंदर और बगीचे वाला था। डेबोरा के जीवन के अत्यंत शान्तिमय दिन थे ये। बच्चे भी दादी के लाड़-प्यार से बहुत प्रसन्न होकर पूरे दिन बगीचे में खेलते-कूदते हुए अपना समय बिताते थे। परन्तु बेन्झियोन अधिकांश समय माँ के पास रहता था। प्राय: उसका मन उससे कहता था कि उसकी माँ अब लंबे समय तक जीवित नहीं रहेगी।

कुछ दिन बीत गए। फिर से एक दिन रात को डेबोरा ने बच्चों को स्वयं भोजन कराया। भोजन के बाद सभी को अपने पास बिठाकर लंबी कथा सुनाई। बेन्यहूद का लिखा लोरी गीत गाते हुए उसने अटारा और येमिमा को सुलाया। सभी बच्चों के सोने के बाद ही वह सोने के लिए गई।

मध्यरात्रि में कुछ अस्वाभाविक शोर सुनकर बेन्झियोन जाग गया। पास के कमरे से माँ के खाँसने की आवाज सुनाई दे रही थी। वह आवाज रोज आने वाली आवाज की तरह नहीं थी अपितु अत्यंत गम्भीर थी। इसी बीच दादी की आवाज सुनाई दी-"बेटी! ध्यान से। बैठो ...। थोड़ा सा पानी पिओगी क्या?" उसके बाद पानी पीने की आवाज सुनाई दी। फिर से लंबी खाँसी की आवाज। उसके बाद, "अब मैं नहीं रहूँगी....। मेरी अंतिम बात सुनो...।"

"डेबोरा! ऐसा मत बोलो। अभी डॉक्टर को लाता हूँ। तुम ठीक हो जाओगी। सब ठीक हो जाएगा....।" यह पिता की आवाज थी।

"नहीं एलिसर.... मैं जानती हूँ। आप मेरी छोटी बहन पोला को ले आओ....। वह आपके ध्येयमार्ग में ... उत्तम सहयोगी बनेगी। मेरे बच्चों की प्रेममयी माता बनेगी....।"

"डेबोरा! तुम ये क्या बोल रही हो....। क्या मैं वैसा चंचल हूँ?"

"वैसी बात नहीं है एलिसर! .... मैं सही बोल रही हूँ ...। नहीं तो बच्चे अनाथ हो जायेंगे। मैं तो जा रही हूँ..." जल्दी से उठकर बेन्झियोन दौड़कर माँ के पास गया। उसको देखते ही डेबोरा बोली- "बेटा! अपनी प्रतिज्ञा मत भूलना। ... पिता का सहयोगी बनना...। कल्याण...हो...।"

बेन्यहूद की गोद में सिर रखकर खाँसती हुई वह संतोष के साथ लेट गई। थोड़ी ही देर में उसके प्राण अनन्त आकाश में विलीन हो गए।

धनी परिवार में जन्मी, पढ़ी-लिखी, अपने ही समान धनी या उद्योगी पति को पाने में समर्थ होते हुए भी डेबोरा उम्र में अपने से चार साल छोटे, क्षयरोग से पीड़ित और दुराग्रही बेन्यहूद से स्वेच्छा से विवाह करके, काँटों से भरे उसके ध्येय मार्ग में सहयोगी रहते हुए, हर कदम पर उसका अनुसरण करते हुए,

उसकी पाँच संतानों को जन्म देकर, अपने घर को सबसे पहला हीब्रू मातृभाषा बोलने वाला घर बनाकर, हीब्रू के पुनरुत्थान के अभियान में असाधारण योगदान देकर, अपनी भूमिका को यशस्वी तरीके से निभा कर रंगमंच से लौटती हुई नटी की भांति इस संसार से चली गई।

●●●●

"बेटा! धैर्य रखो। तुम्हारी माँ हम सबको छोड़कर चली गई। मत रोओ...."– पुत्र को दिलासा देते हुए बेन्यहूद ने कहा। यद्यपि बेन्झियोन समझ गया था कि उसकी माँ मर चुकी है फिर भी इस विषय में उसके मन में स्पष्टता नहीं थी। वह विवेकशून्य सा हो गया था। दूसरे बच्चे तो 'माँ चली गई' इस बात को किसी प्रकार भी नहीं समझ सकते थे। सामने सोई सफेद कपड़े से ढकी हुई माँ को पिता ने 'चली गई'– ऐसा जब बोला तो अविचायिल को तो विश्वास ही नहीं हुआ। "बेचारे ये बच्चे अनाथ हो गए"– गहरी साँस लेकर फेगा ने इस दु:ख को किसी तरह छिपाया। वह रात अत्यंत कष्ट से सब लोगों ने बिताई।

सुबह सबसे पहली हीब्रू माता ही शवयात्रा जब निकली तब वहाँ तीन ही लोग थे– बेन्यहूद, बेन्झियोन और उसके परिवार का आत्मीय मित्र निस्सिं बेहर। बच्चों की देखभाल के लिए फेगा भी घर पर ही रुक गई।

श्मशान पहुँचते ही बेन्यहूद को मालूम हुआ कि यहूदी धर्मगुरुओं ने श्मशान के अंदर डेबोरा के शरीर को दफन करने की अनुमति नहीं दी है। कारण था कि उसने अपने बच्चों को हीब्रू भाषा मातृभाषा के रूप में पढ़ा कर उस पवित्र भाषा को अपवित्र किया है। इसलिए वह अपवित्र हो गई है। अपवित्र महिला के लिए श्मशान में जगह नहीं थी।

उन धर्मगुरुओं द्वारा किए जाने वाले बहुत से गलत कार्यों को बेन्यहूद जानता था। यहूदी संस्कृति को प्रसारित करने के लिए विदेशों में रहने वाले यहूदियों द्वारा भेजे जाने वाले धन को ये लोग अपने व्यक्तिगत कामों के लिए उपयोग करते थे। उस बात को याद कर बेन्यहूद जोर से चिल्लाया–" यदि आप लोग डेबोरा को यहाँ दफनाने की अनुमति नहीं देते हो तो कल आपके सारे दुर्व्यवहारों को पत्रिका में प्रकाशित करूँगा।" इस बात से डरकर धर्मगुरुओं ने अंत में अनुमति दे दी।

डेबोरा को दफन कर के जाते हुए उन दोनों में से पत्नी के वियोग से बेन्यहूद का दु:ख ज्यादा है या माता के वियोग से बेन्झियोन का दु:ख ज्यादा है– यह तो श्मशान में शांति से सोई हुई केवल डेबोरा ही जानती थी।

विपत्ति के पीछे विपत्ति

डेबोरा के स्वर्गवास से बेन्यहूद का घर अनाथ ही हो गया था। वह उसके घर का सब कुछ थी। बच्चों की ही तरह बेन्यहूद भी उसके बिना अनाथ जैसा ही अनुभव कर रहा था। फिर भी जैसे उस पर भूत सवार हो गया हो, वह पूरे दिन पत्रिका के काम में या शब्दकोश के निर्माण में खुद को व्यस्त रखके दुःख को भुलाता था। परंतु बच्चों का भाग्य तो वैसा नहीं था। वे प्रतिदिन-प्रतिक्षण माँ को याद करके दुःखी होते थे। ''माँ कहाँ गई? कब आएगी?'' ऐसा दादी से दिन में वे सौ बार पूछते थे। ''वह ऊपर गई है। किसी दिन आएगी....'' ऐसा बोलती हुई फेगा शून्य दृष्टि से आकाश को देखती थी परंतु वह इस बात को अच्छी तरह जानती थी कि वह दिन कभी नहीं आएगा।

निस्सिं बेहर बेन्यहूद के समान ही आचरण और आदर्शों वाला उसका मित्र था। आन्दोलन की शुरुआत से ही वह बेन्यहूद के कार्यों में सहकारी था। हीब्रू माध्यम का विद्यालय भी उसने शुरू किया था। उसकी पत्नी उत्तम हीब्रू शिक्षिका थी। दो बच्चों वाला उनका सुखी परिवार था। किंतु इन्हीं दिनों निस्सिं बेहर की पत्नी भी अचानक मर गई। दुर्भाग्य ने इस विषय में भी बेहर को बेन्यहूद के समान ही दुःखी कर दिया।

संपत्ति के पीछे जैसे संपत्ति आती है उसी प्रकार विपत्ति के पीछे विपत्तियाँ भी चली आती हैं। बेन्यहूद के सामने तो समस्याओं की लंबी श्रृंखला थी। उन्हीं दिनों पूरे जेरुसलेम नगर में डिफ्थिरिया रोग फैल गया था। वह तेज़ी से फैलने वाला संक्रामक रोग था। तेज बुखार और गले में असहनीय जलन पैदा करते हुए वह रोग कम समय में ही कमजोर बच्चों को राहु के समान निगल रहा था। खेलने के लिए बाहर गए हुए बेन्झियोन के शरीर में भी उस रोग का संक्रमण हो गया था।

जब तक यह समझ पाते कि यह डिफ्थिरिया रोग है, तब तक वह दूसरे बच्चों में भी संक्रमित हो गया। बेन्यहूद जल्दी ही डॉक्टर को घर लाया। सबको

देखकर उसने कहा – "बेन्झियोन की परिस्थिति गम्भीर है, उसे अभी चिकित्सालय में भर्ती करना होगा। दूसरे बच्चों में एकमात्र येमिमा ही अभी तक इस रोग से अछूती है। अतः उसे कहीं और भेजना चाहिए जिससे उसमें इस रोग का संक्रमण न हो। अन्य तीनों बच्चों की इसी समय चिकित्सा शुरू करनी होगी।"

डॉक्टर के परामर्श का उसी प्रकार पालन किया गया। बेन्झियोन को चिकित्सालय में भर्ती किया गया। येमिमा को दूर किसी मित्र के यहाँ रखा गया। शेष बच्चों की भी दवाई शुरू हो गई। परंतु तीनों बच्चे इतने दुर्बल थे कि उनकी रोग प्रतिरोधक शक्ति ही नष्ट हो गई थी। दवाइयाँ उनके शरीर पर जितना होना चाहिए उतना असर ही नहीं कर रही थीं। तीन दिन तक असहनीय पीड़ा सहन करके एक रात पहले अविचायिल ने अपनी आखिरी साँस ली। थोड़ी देर बाद ही छोटी पुत्री अटारा भी मृत्यु को प्राप्त हो गई। उसके बाद बहुत अधिक समय नहीं बीत पाया था कि बेन्यहूद के देखते–देखते उसकी आँखों के सामने चोरों के समान दुष्ट यमराज ने अटारा की बड़ी बहन श्लोमिट् के प्राण हरण कर लिए। दो हजार सालों से जो नहीं सुनी गई वैसी अत्यंत मधुर भाषा में बोलने वाले बच्चे और उसी भाषा में किलकारने वाली वह छोटी सी बच्ची 'माँ' अंतिम शब्द को बोलकर चली गई थी।

डेबोरा के शव को जहाँ दफनाया गया था उस के पास ही उसके तीनों बच्चों को दफन करके बेन्यहूद जब घर आया तो उसने सुना कि चिकित्सालय में भर्ती बेन्झियोन की स्थिति भी बिगड़ गई है। पूरे जेरुसलेम नगर में ही डिप्थिरिया रोग जंगल की आग की तरह फैल गया था। दो हजार बच्चे उसने निगल लिए थे। एक भी ऐसा घर नहीं था जहाँ कोई बच्चा न मरा हो। फिर भी बेन्यहूद जैसा अभागा दूसरा कोई नहीं था जिसके तीन बच्चे एक साथ ही मौत के मुँह में चले गए हों। बेन्यहूद के कुछ विरोधी ऐसे भी थे जो इससे संतोष का अनुभव कर रहे थे। "धर्म के विरुद्ध आचरण करने वाले बेन्यहूद को भगवान ने उचित दण्ड दिया" – ऐसा वे एक दूसरे से कह रहे थे।

चिकित्सालय आकर बेन्यहूद बेन्झियोन के पलंग के पास बैठ गया। मौत से जूझते हुए बेन्झियोन को साँस लेने में भी कष्ट हो रहा था। पलंग के दूसरी ओर बैठे डॉक्टर को देखते हुए बेन्यहूद का मन भयभीत हो गया। जल्दी से उठकर वह डॉक्टर के पास जाकर अपने हाथों से उसका हाथ पकड़कर भाव

विह्वल होकर बोला – "डॉक्टर साहब....! यदि मेरा यह पुत्र भी मर जाएगा....तो मेरे सारे सपने धूल में मिल जायेंगे। कैसे भी, किसी भी उपाय से इसको बचाओ। आपसे याचना करता हूँ.....।"

"धैर्य रखो मित्र! मैंने सुना है कि परसों ही जर्मनी से कोई युवा डॉक्टर आया है जो डिप्थिरिया रोग का नई पद्धति से इलाज करता है, उसने कुछ बच्चों को ठीक किया है। परंतु बहुत सारे लोग उस नए डॉक्टर से अपने बच्चों पर नूतन चिकित्सा प्रयोग करवाने से डर रहे हैं। यदि आप अनुमति दें तो मैं उससे संपर्क करता हूँ। उसके द्वारा बेन्झियोन का इलाज करवाता हूँ.....।" – वह डॉक्टर बोला।

"अवश्य करो। मेरी पूरी सहमति है.....।" उसके बाद उस डॉक्टर ने जल्दी ही दूसरे डॉक्टर से संपर्क किया। वह डॉक्टर भी बेन्यहूद की प्रसिद्धि को जानता था। उसने जल्दी ही नई दवाई भेजी और उस दवाई को लेने का तरीका भी बताया। रात को बेन्झियोन के शरीर में थोड़ी सी हलचल हुई। कष्ट से दोनों आँखें खोलते हुए किसी तरह उसने कहा – "पिताजी! पानी....।"

"ओह! आपका पुत्र बच गया....।" डॉक्टर ने कहा। बेन्यहूद ने चैन की साँस ली। पुत्र की जान बचने से उसे भी जैसे नया जीवन मिला था।

●●●●

बेन्झियोन धीरे-धीरे स्वस्थ हो गया। परंतु लंबे समय तक उसके शरीर की कमजोरी बनी ही रही। इस समय योमिमा को भी मित्र के यहाँ से ले लाए थे। घर में पाँच बच्चों की जगह अब ये दो ही बचे थे। बेन्यहूद उन दोनों के विषय में कुछ अधिक ध्यान देने की कोशिश करने लगा था। फेगा भी अपने पौत्रों की कुशलता के सम्बन्ध में और अधिक चिंतित रहती थी। परंतु अभी भी वह हीब्रू भाषा ठीक से नहीं बोल सकती थी इसलिए वह रूसी भाषा का सहारा लेती थी। दोनों बच्चे भी धीरे-धीरे उसके साथ रूसी भाषा बोलने लगे। हीब्रू गृह के वातावरण में धीरे-धीरे शिथिलता दिखाई देने लगी।

●●●●

इजराइल देश में अभी भी तुर्कियों का ही शासन चल रहा था। शासकीय अधिकारी यह जान गए थे कि विश्व के अलग-अलग भागों से यहूदी लोग इजराइल आ रहे हैं। यदि इसी प्रकार निरंतर उनका आगमन चलता रहा तो वे ही लोग यहाँ शाक्तिशाली हो जाएँगे, यह डर उनको था। इसलिए वे अब बाहरी देशों से इजराइल देश में आने के लिए यहूदियों को अनुमति नहीं देते थे।

उन्होंने यह भी समझ लिया था कि असंगठित यहूदियों में संगठन भाव के निर्माण में हीब्रू भाषा एक प्रमुख साधन है। इसलिए हीब्रू भाषा का पुनरुत्थान भी तुर्कियों को उस स्थान से हटाने का कारण हो सकता है, यह मानते हुए उन्होंने हीब्रू भाषा के आन्दोलन को दबाना चाहा। जिन विद्यालयों में हीब्रू भाषा पढ़ाई जाती थी, उन विद्यालयों को बंद करने का आदेश निकाल दिया गया। विद्यालयों के व्यवस्थापकों ने इस आदेश के कारण अपने विद्यालय से स्वयं ही हीब्रू भाषा को निकाल दिया। सबको हीब्रू भाषा पढ़ाने के विषय में यहूदी धर्मगुरुओं का पहले से उन विद्यालयों पर आक्षेप था ही। इस कारण विद्यालयों के व्यवस्थापक आसानी से हीब्रू भाषा को विद्यालय से हटाने को सहमत हो गए। उन विद्यालयों में काम करने वाले हीब्रू भाषा के शिक्षकों को दूसरा विषय पढ़ाने के लिए उन लोगों ने मजबूर किया।

यह जानकर बेन्यहूद ने हीब्रूभाषा के उन शिक्षकों के साथ संपर्क किया। हीब्रू पढ़ाने में ही वे लोग किसी प्रकार लगे रहें इस कार्य के लिए बेन्यहूद ने उन्हें प्रेरित किया। इसके लिए उसने उन लोगों के लिए अनधिकृत रूप से हर महीने विशेष वेतन की भी व्यवस्था की। उससे प्रभावित होकर वे शिक्षक भी विद्यालयों में गुप्त तरीके से हीब्रू भाषा पढ़ाने के लिए तैयार हो गए। परंतु बच्चे उस विषय में भयभीत थे इसलिए ये शिक्षक उन बच्चों को रिश्वत के रूप में जब-तब कुछ सिक्के देकर उन्हें हीब्रू भाषा पढ़ाते थे। ''अमुक शिक्षक हीब्रू भाषा पढ़ाते है'' ऐसा छात्र विद्यालय के व्यवस्थापकों को न बता दें इसलिए भी बच्चों को उन्हें रिश्वत देनी पड़ती थी। ऐसा करके भी वे शिक्षक हीब्रू भाषा पढ़ाते थे।

बहुत से कार्य होते हुए भी बेन्यहूद 'द डीर' पत्रिका का संपादन नियमित रूप से करता था। वह जहाँ-जहाँ जाता था वहाँ पत्रिका के नए ग्राहक बनाता था। ग्राहकों की संख्या धीरे-धीरे बढ़ रही थी। विरोधी लोग भी खण्डन करने के लिए ही सही पर उसके विचारों को जानने के लिए ग्राहक बनकर पत्रिका पढ़ते थे। पत्रिका के पृष्ठों की संख्या भी उसने बढ़ा दी थी। नित्य व्यवहार में हीब्रू भाषा प्रयोग करने योग्य है यह प्रदर्शित करने के लिए उसने उसी प्रकार के स्तम्भों को पत्रिका में लिखना शुरू किया। पत्रिका के प्रत्येक अंक में दो या तीन आधुनिक हीब्रू शब्दों का निर्माण कर उनसे पाठकों का परिचय करवाता था। समय बीतने के साथ-साथ पत्रिका की लोकप्रियता बढ़ती जा रही थी।

जेरुसलेम नगर ही यद्यपि बेन्यहूद का केन्द्र था फिर भी जाफ्फा नगर में उसके अनुकूल यहूदियों की संख्या बढ़ती जा रही थी। इसलिए बेन्यहूद वहीं नूतन प्रयोग करने का प्रयत्न करता था। हीब्रू भाषा शिक्षण के विषय में भी वहाँ के यहूदी लोगों को उसने बार-बार प्रेरित किया। उसके कारण से इजराइल बेन्केंड नामक व्यक्ति ने किसी की सहायता के बिना ही एक ऐसा विद्यालय शुरु किया जहाँ हीब्रू भाषा ही व्यावहारिक भाषा थी। दूसरी भाषा का प्रयोग वहाँ निषिद्ध था। प्राय: दो हजार वर्षों के बाद ऐसा कोई विद्यालय शुरू हुआ था, जहाँ दूसरे विषय भी हीब्रू भाषा के माध्यम से ही पढ़ाये जाते थे। बेन्यहूद ने इसे अपने द्वारा प्राप्त एक बड़ी उपलब्धि माना।

●●●●

डेबोरा की छोटी बहन थी पोला। जब डेबोरा की मृत्यु हुई तब पोला की आयु उन्नीस साल थी। मास्को विश्वविद्यालय की शाखा में वह विज्ञान विषय लेकर उपाधि की पढ़ाई कर रही थी। एलिसर जब उनके घर पहली बार आया था तब वह बच्ची ही थी। उसने शिशु के समान सहज भावना से ही एलिसर को देखा था। उसके बाद घर के लोगों के मुँह से एलिसर का एक-एक साहसी कार्य सुनते हुए उसके मन में एलिसर के प्रति श्रद्धा का भाव था। विवाह के बाद डेबोरा भी जब-तब बेन्यहूद के सपनों के विषय में पत्र द्वारा सूचित करती थी। वह सब पढ़ते हुए उसके मन में बेन्यहूद का व्यक्तित्व निरंतर प्रभावी होता जा रहा था। कुछ महीनों पहले डेबोरा द्वारा लिखे पत्र के वाक्य पढ़कर पोला के मन की शांति गायब हो गई थी। डेबोरा ने लिखा था। ''....चाह कर भी मैं तुम्हारे जीजा के ध्येय मार्ग में अंत तक सहयोगी नहीं बन पाऊँगी, ऐसा लगता है। फिर भी मेरी अंतिम साँस तक उन्हें पूरा सहयोग दूँगी ही। उसके बाद मेरा खाली स्थान तुम्हें भरना होगा। यह मेरी अंतिम इच्छा है।....''

इसके थोड़े समय बाद ही डेबोरा परलोक सिधार गई। ''परंतु इस विषय में जीजाजी का क्या विचार होगा....?''

उसने बेन्यहूद को एक पत्र लिखा - ''मैं अपना नाम बदलना चाहती हूँ। शुद्ध हीब्रू भाषा का नाम मुझे चाहिए। इसलिए कृपया कोई सुंदर नाम बताइए।''

उसके उत्तर में बेन्यहूद ने जल्दी ही रूसी भाषा में अर्थ सहित बीस हीब्रू नामों की सूची भेजी। उनमें से 'हेम्डा' यह नाम पोला ने चुना, जिसका अर्थ है 'मेरे द्वारा प्रेम से पाली गई'।

●●●●

डेबोरा की मृत्यु के बाद तीन महीने बीत गए। फिर भी उनके घर में फैला हुआ अंधकार समाप्त नहीं हुआ था। बेन्यहूद पहले के समान ही अपने काम में मग्न रहता था परंतु उसका मन उसमें नहीं लगता था। घर में तो इस समय बच्चे दादी के साथ निस्संकोच रूप से रूसी भाषा ही बोलते थे। पिता से तो हीब्रू भाषा में बोलते थे परंतु घर में बेन्यहूद रहता ही कम था। इसलिए बड़े परिश्रम से बेन्यहूद के द्वारा बनाए गए हीब्रू घर के स्वरूप का नाश उसके सामने ही हो रहा था। ''इससे भी अधिक दु:ख की क्या बात हो सकती है....? कैसे यह समस्या दूर की जाये....?'' बहुत दिनों तक सोचकर अंत में बेन्यहूद ने पोला को पत्र लिखा जिसमें अप्रत्यक्ष रूप से उसने अपना अभिप्राय लिखा। पोला तो उसी की प्रतीक्षा कर रही थी। जल्दी ही उसने पत्र द्वारा अपनी सहमति भेज दी।

बेन्यहूद के घर की दीवारों पर जब पुताई शुरू हुई तब जेरुसलेम नगर के नागरिकों ने आश्चर्य से भौंहें टेढ़ी कीं। ''पत्नी के चले जाने के बाद चार महीने भी नहीं बीते, अब यह कौनसा उत्सव हो रहा है....?'' जब उन्होंने बेन्यहूद के पुनर्विवाह की बात सुनी तो उन सबको अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ। धीरे-धीरे यह बात सब जगह फैल गई। इस बात से बेन्यहूद का पारिवारिक डॉक्टर जिसने डेबोरा का इलाज किया था, वह अत्यंत आश्चर्यचकित और खिन्न हो गया। उसने बेन्यहूद के परम मित्र निस्सिं बेहर से एक दिन पूछा- ''मित्र! मैंने जो सुना क्या वह सत्य है कि आपके 34 वर्षीय मित्र अपने से 14 साल छोटी लड़की से पुन:विवाह करना चाहते हैं....?''

''यह सत्य है,'' निस्सिं बेहर ने सिर हिलाकर कहा।

''परंतु...., पुन:विवाह करने का उसे अधिकार ही नहीं है मित्र! आप जानते हो कि वह स्वयं क्षय रोगी है। उसके रोग का ही डेबोरा में संक्रमण हुआ था। इसीलिए वह मर गई। वह भी न जाने कितने दिन जीवित रहेगा। ऐसी स्थिति में दूसरी निर्दोष कम आयु की लड़की को मारने का उसे कोई अधिकार नहीं है....।''

निस्सिं बेहर भी इस बात से सहमत ही था। डॉक्टर ने ही फिर आगे कहा - ''आप उसके घनिष्ठ मित्र हैं। आपकी बात वह मानता है। आप ही कुछ ऐसा करो जिससे यह अन्याय न हो। उसे समझाओ....''

''कोशिश करता हूँ'' - निस्सिं बेहर ने आश्वासन दिया।

●●●●

उसी समय वह बेन्यहूद के घर गया। कार्य में मग्न होते हुए भी उसने बातचीत शुरू की – "मित्र! मैं कुछ अप्रिय कहना चाहता हूँ। जानता हूँ, इससे तुम्हें बहुत कष्ट होगा। फिर भी मुझे यह कहना चाहिए। इसलिए कहता हूँ...." ऐसी भूमिका बनाकर उसने डॉक्टर द्वारा कही गई पूरी बात बताई। अंत में उसने अपना वाक्य भी जोड़ा – "इसलिए तुमसे प्रार्थना है मित्र! खिलते हुए फूल के समान बीस साल की उस नादान पोला को व्यर्थ में मत मारो....।" निस्सिं बेहर के मुख से यह सुनकर बेन्यहूद गंभीर चिंता में मग्न हो गया। किंतु दरवाजे के पीछे खड़े बेन्झियोन ने यह सब कुछ स्पष्टता से सुन लिया था। "इसका मतलब माँ की जगह नई माँ लाने का विचार चल रहा है....। वह भी मेरी माँ की बहिन पोला ही। यदि यह विचार क्रियान्वित हो जाय तो....! परंतु यह बेहर इस कार्य में बीच में विघ्न क्यों पैदा कर रहा है....?"

●●●●

पूरी रात सोच कर सुबह बेन्यहूद ने पोला को सम्बोधित करते हुए एक पत्र लिखा। डॉक्टर के वचनों को उसी प्रकार लिखकर अंत में उसने लिखा, "मुझे भी यही उचित लगता है। मेरे लिए अपना जीवन नष्ट करने का तुम्हें अधिकार नहीं है। इसलिए सब जानते हुए भी पत्थर से सिर मत फोड़ो। मेरे बच्चों के विषय में चिंता मत करो। संसार में रहने वाले लाखों अनाथ बच्चों के समान वे दोनों भी किसी तरह बड़े हो जाएँगे। साथ ही उनकी दादी भी यहाँ है। इसलिए किसी तरह भी गुजारा कर लूंगा।"

पत्र लेखन समाप्त करके लिफाफे के ऊपर पोला का पता लिखकर निस्सिं बेहर को देकर बेन्यहूद ने कहा – "वह डॉक्टर भी इस पत्र को पढ़ ले, इसके बाद तुम खुद ही इसे डाकघर में डाल देना....।"

निस्सिं बेहर पत्र लेकर चला गया।

●●●●

पन्द्रह दिन बाद पोला की ओर से तार आया – "धैर्य रखो, पत्र भेज रही हूँ, प्रतीक्षा करो....।" तार में भी उसका नाम हेम्डा ही लिखा था, न कि पोला। बेन्यहूद ने मित्र को वह तार दिखाया। उसने कहा – "लगता है, उसने तुम्हारा आशय समझ कर स्वीकार कर लिया है। चलो! अंततः उसने विवेक दिखाया....।" बेन्यहूद ने कुछ नहीं कहा।

●●●●

फिर से आया वसंत

पंद्रह दिन बाद हेम्डा का पत्र आया। अनिच्छा से ही बेन्यहूद ने उस पत्र को खोला और पढ़ना शुरू किया।

"…. उस डॉक्टर को मैं हृदय से धन्यवाद देती हूँ, जिसने मेरे लिए इतना स्नेह प्रदर्शित किया। इस विषय में मैं उसके प्रति कृतज्ञ हूँ। फिर भी मेरी ओर से उससे निवेदन करना कि मैं आपके साथ ही जीवन बिताना चाहती हूँ, चाहे वह एक वर्ष का हो, एक महीने का हो या एक दिन का ही हो। यही मेरा अंतिम निर्णय है….।"

इसके बाद बेन्यहूद ने वह पत्र निस्सिं बेहर को दिखाकर कहा – "फिर भी मैं उस डॉक्टर के प्रति कृतज्ञ हूँ क्योंकि इससे हम लोगों की भावनाओं का बन्धन और भी मजबूत हो गया। भविष्य में भी कोई मुझ पर इल्जाम नहीं लगा सकेगा….।"

बच्चों और फेगा ने यद्यपि पत्र नहीं पढ़ा फिर भी बेन्यहूद के मुख पर बढ़ती हुई चमक को देखकर उन्होंने समझ लिया कि जल्दी ही नई गृहस्वामिनी आने वाली है। सब उस दिन की प्रतीक्षा करने लगे।

●●●●

फिर से कुछ दिन बीत गए। एक दिन बेन्यहूद ने पुत्र बेन्झियोन को पास बुलाकर कहा – "बेटा! मैं कल जाऊंगा, तुम्हारी नई माँ को लाने के लिए। सप्ताह भर में मेरा आना होगा। आने वाली तुम्हारी माँ के स्वागत का दायित्व तुम्हारा ही है।" बढ़ा हुआ अपना दायित्व समझ कर बेन्झियोन संतुष्ट हो गया।

●●●●

रूस देश से आया हुआ जहाज जब कांस्टांटिनोपल नगर पहुँचा तब बेन्यहूद ने दो-तीन मित्रों के साथ योनस के परिवार का हार्दिक स्वागत किया। योनस के साथ पत्नी, बेटा, बेटी पोला और दूसरे दो-तीन रिश्तेदार थे। जहाज से उतरते हुए उन लोगों को दूर से ही पहचान कर बेन्यहूद ने हाथ हिलाया। नए कपड़ों में पोला राजकुमारी की तरह लग रही थी। उसने भी अनुभव किया कि

चौंतीस वर्ष का होने के बाद भी बेन्यहूद पच्चीस वर्ष के युवा की तरह ही लग रहा था। वहाँ से नगर की धर्मशाला में पहले से ही आरक्षित कमरों में वे लोग पहुँचे।

भोजन और आराम के बाद जब दूसरे लोग नगर दर्शन के लिए चले गए तब एकांत में बेन्यहूद ने पोला को कहा – ''हेम्डा! मैं अभी भी विश्वास नहीं कर पा रहा हूँ कि तुम यहाँ उपस्थित हो....।''

हेम्डा का भी अनुभव वैसा ही था। वस्तुतः सब लोगों की सलाह और माँ के विरोध को नकारते हुए अपनी बहन के बीमार पति के साथ विवाह को स्वीकार करके वह यहाँ आई थी। इसलिए वह इस प्रकार उत्कण्ठित थी कि उसके शरीर का रोम-रोम जैसे काँप रहा था। बेन्यहूद इस समय यद्यपि रूसी भाषा में बोल रहा था फिर भी बीच-बीच में हीब्रू शब्दों को जोड़कर बोल रहा था। थोड़ी देर बाद उसने कहा – ''प्रिये! तुम्हें जल्दी से जल्दी हीब्रू भाषा का अभ्यास करना होगा। यद्यपि मैं उसके लिए समय सीमा नहीं बाँध रहा हूँ फिर भी तुम समझ सकती हो 'जल्दी से जल्दी' क्या अर्थ है।'' हेम्डा ने सिर कुछ इस तरह हिलाया जैसे उसने सब बात समझ ली हो।

नगर दर्शन के लिए गए हुए लोग जब तक लौटे, उसके पहले ही बेन्यहूद द्वारा तय किया हुआ कोई पुरोहित वहाँ उपस्थित था। तुर्की शासन वाले इजराइल देश में विवाह संबंधी विधियाँ अत्यंत कठिन थीं इस कारण यहीं औपचारिक रूप से विवाह की विधि पूर्ण करके ही जाने का उनका विचार था। वहाँ उपस्थित कुछ लोगों के सामने पोला और बेन्यहूद का विवाह संपन्न हुआ। मिठाई और मदिरा-पेय आदि के साथ विवाह भोज हुआ। उसी दिन नाव से वे सब लोग जाफ्फानगर की ओर चल दिया। जाने से पहले जेरुसलेम पहुँचने के संबंध में बेन्यहूद ने पुत्र को तार भी भेज दिया। जाफ्फानगर पहुँचकर वहाँ से घोड़ागाड़ी से लंबी यात्रा करके वे सब लोग जेरुसलेम पहुँचे।

घर के बाहर जब गाड़ी की आवाज सुनाई दी तब उत्साहित होकर घर से बाहर आकर बेन्झियोन ने छोटी बहन को बुलाया – ''येमिमा! देखो, सब आ गए।'' वह आश्चर्य से द्वार पर आ गई। तब तक गाड़ी से सब उतर गए।

बेन्यहूद ने क्रम से उनमें से एक-एक का परिचय कराया। यद्यपि उन दोनों को कुछ याद नहीं था, फिर भी उन्होंने सब का स्वागत किया। ''यह है तुम दोनों की मौसी....।'' – हेम्डा का परिचय कराते हुए बेन्यहूद ने कहा।

यद्यपि हेम्डा हीब्रू भाषा नहीं जानती थी, फिर भी 'मौसी' शब्द का अर्थ उसने समझ लिया। जल्दी से उसने पति के वाक्य को सुधारते हुए कहा – ''मैं मौसी नहीं, माँ हूँ। यद्यपि मैं उसकी जगह शतप्रतिशत नहीं भर सकती फिर भी कोशिश तो करूँगी....।''

''वैसा ही होगा। यह तुम दोनों की माँ है। 'माँ', यही संबोधन इनके लिए करना है.......'' – बेन्हयूद ने कहा।

''माँ.......।'' ऐसा संबोधन उन दोनों ने किया। हेम्डा ने उन्हें प्रेम से गले लगाया।

''यह तुम्हारा घर है। तुम ही इसकी मालकिन हो। यहाँ पर रहने वाले हम सब तुम्हारे अधीन हैं। जैसा चाहती हो वैसा करो'' – घर दिखाते हुए नाटकीय शैली में नई पत्नी से बेन्यहूद ने कहा।

●●●●

हेम्डा ने जल्दी ही घर चलाने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। भोजन बनाने का कार्य तो बेन्यहूद की माँ फेगा करती थी, इसलिए उसने बच्चों की देखभाल का कार्यभार संभाला। बेन्झियोन के अत्यंत पुराने ढंग से सिले हुए कपड़ों के स्थान पर नए कपड़े उसने खुद ही सिलकर दिए। येमिमा के बालों को व्यवस्थित रूप से काटकर उसके सिर की जुँओं को उसने साफ किया। रूस से लाई हुई गुड़िया उसने येमिमा को खेलने के लिए दी। बाजार से गेंद खरीद कर बच्चों को गेंद खेलने का अभ्यास कराया। अपना अधिकाधिक समय वह बच्चों के साथ ही बिताती थी।

हेम्डा के आने से बच्चों का अकेलापन दूर हो गया। इससे बेन्यहूद भी बहुत प्रसन्न था। परंतु उसने ध्यान दिया कि घर में हीब्रू भाषा का वातावरण प्रायः नष्ट हो ही रहा था। अभी भी हेम्डा रूसी भाषा ही बोलती थी। बेन्यहूद नियम से उसके साथ हीब्रू भाषा में ही बोलता था। इससे हेम्डा ऊब जाती। तब वह उसे सम्भाषण सिखाता था। एक दिन हेम्डा ने उससे कहा – ''प्रिय! हीब्रू भाषा बोलने वाले तुम्हारे मित्र-बन्धु हीब्रू भाषा न जानने वाली मुझे देखकर आश्चर्यचकित होते हैं। इसके लिए वे आपको दोषी मानते हैं। इसलिए जब तक मैं न कहूँ तब तक आप किसी भी मित्र या बंधु को कृपया घर पर निमंत्रित मत करना।'' न चाहते हुए भी बेन्यहूद ने यह बात स्वीकार कर ली।

दिन में अधिकाधिक समय घर पर रहने की इच्छा से बेन्यहूद ने अपनी पत्रिका का कार्यालय और मुद्रणालय घर में ही स्थानान्तरित कर लिया। उसकी

उपस्थिति से घर में हीब्रू भाषा के वातावरण की रक्षा हो सकेगी, ऐसा उसका सोचना था। मुद्रणालय में अक्षर संयोजन आदि का काम करने वाले कर्मचारियों को उसने आदेश दिया कि उन्हें केवल हीब्रू भाषा ही बोलनी है, कोई अन्य भाषा नहीं। उनमें से कम आयु के एक कर्मचारी को उसने प्रतिदिन बच्चों के साथ खेलने के लिए इस सूचना के साथ नियुक्त किया कि खेलने के समय हीब्रू भाषा ही बोलनी है।

इन सब प्रयत्नों से उसके घर में हीब्रू भाषा का वातावरण धीरे-धीरे पुनः बन रहा था।

तीन महीने बाद एक दिन हेम्डा ने बेन्यहूद के सामने बैठकर पाँच मिनट तक कुछ बोला। वह वक्तव्य पूर्णतः हीब्रू भाषा में था। यद्यपि उसमें कुछ दोष थे फिर भी वह सुनकर बेन्यहूद बहुत प्रसन्न हुआ। उसके बाद हेम्डा ने घोषणा की ...."अब से आप किसी को भी अपने घर बुला सकते हैं। अब मैं दूसरी भाषा बोलकर आपको संकोच का अवसर नहीं दूँगी, अपितु उनके साथ हीब्रू भाषा में ही बात करूँगी।" उसके बाद उसने इसी प्रकार आचरण भी किया।

एक सप्ताह बाद बेन्यहूद हेम्डा के साथ जाफ्फानगर गया। वहाँ अब तक बहुत से परिवार हीब्रू भाषा बोलने वाले बन चुके थे। वहाँ सब जगह बेन्यहूद अभिमानपूर्वक पत्नी को ले कर गया। उनके साथ केवल हीब्रू भाषा में ही बात करती हुई हेम्डा को देखकर किसी ने विश्वास नहीं किया कि तीन महीने पहले वह हीब्रू भाषा बिल्कुल नहीं जानती थी।

जाफ्फा के पास स्थित कुछ गाँवों में हीब्रू भाषा बोलने वाले यहूदी लोग आकर रहने लगे थे। उनमें से एक गाँव दिखाने के लिए बेन्यहूद वहाँ पत्नी को ले गया। उनके गाँव पहुँचने के समय रास्ते के पास कुछ बच्चे ऊँची आवाज में बात कर रहे थे। वह सुनकर बेन्यहूद तत्काल जड़ के समान खड़ा रह गया। बच्चों का मुँह देखते हुए भी उसकी दृष्टि कहीं और अव्यक्त आकाश में जैसे स्थिर हो गई थी। तब तक वे बच्चे भी इन दोनों अपरिचित व्यक्तियों को देखकर 'सुप्रभातम्' ऐसा कहते हुए अभिनंदन करके वहाँ से चले गए।

उनके जाने के बाद भी उसी स्थिति में खड़े पति को देखकर हेम्डा ने आश्चर्य से कहा -- "प्रिय! क्या हो गया? कुछ आश्चर्यजनक देखा क्या?"

"प्रिय! मैंने बहुत विस्मयकारी दृश्य देखा। तुमने इन बच्चों का वार्तालाप सुना क्या? वे आपस में हीब्रू भाषा में बोल रहे थे। हीब्रू भाषा बोलने

वाले बच्चे......। यह मेरा वर्षों पुराना सपना था। अपने घर में तो हीब्रू भाषा बोलने वाले बच्चे मैंने तैयार किए पर वैसे दूसरे बच्चे कब बनेंगे? इस बात के लिए मैं उत्सुक था। उन्हें आज मैंने देख लिया। नि:संदेह नई परम्परा ही निर्मित हो गई है। इससे ज्यादा आश्चर्य की बात और क्या हो सकती है........?''

गाँव में वैसे दूसरे बच्चों से भी मिलकर उनके साथ जी-भर कर बातचीत करके आनंदपूर्वक वहाँ से वे दोनों लौट आए।

●●●●

बेन्यहूद जहाँ-जहाँ जाता था वहाँ अपनी पत्रिका के ग्राहकों और पाठकों से अवश्य मिलता था। उनके विचारों को भी वह सावधानी से सुनता था। पाठक भी उससे बहुत प्रकार के प्रश्न पूछते थे। एक दिन पाठक सम्मेलन में किसी ने उससे कहा कि 'दि डीर्' पत्रिका के मुद्रण के लिए उपयोग किया जाने वाला कागज़ उत्तम नहीं है। उसे बदला जाना चाहिए।

अन्य किसी ने कहा – ''पत्रिका के प्राय: सभी लेख आपके द्वारा ही लिखे जाते हैं। यद्यपि आपके लेख उत्तम होते हैं फिर भी उन सभी में एक जैसी शैली होती है इसलिए पढ़ने वाले को नीरसता का अनुभव होता है। इसलिए अन्य स्थानीय लेखकों द्वारा भी लेख लिखवाए जाने चाहिए, जिससे हम लोगों का दूसरे प्रकार की शैलियों से भी परिचय हो सके........''

''पत्रिका में प्रत्येक महीने आपके द्वारा नए हीब्रू शब्दों से परिचित करवाया जाता है, वह तो ठीक ही है, लेकिन उन शब्दों की प्रामाणिकता क्या है? उन शब्दों का मूल क्या है? यह भी आपको सूचित करना चाहिए। इसके साथ ही आपके द्वारा आविष्कार किए जाने वाले शब्द संपूर्ण देश में मन से स्वीकृत और सभी लोगों द्वारा स्वीकार करने योग्य बनें इसलिए उस प्रकार के शब्दों के निर्माण में दूसरे विद्वानों की भी सहायता आप क्यों नहीं लेते?'', एक अन्य पाठक ने कहा।

यद्यपि पाठकों के इस प्रकार के विचारों से बेन्यहूद उस समय निरुत्तर हो जाता था, फिर भी उसका दायित्व कितना बड़ा है, यह जानकर वह संतोष और गौरव का अनुभव करता था। परंतु हेम्डा को लग रहा था कि ये सब मेरे पति को अपराधी की तरह प्रश्नों के बाणों से छलनी कर रहे हैं। किंतु इस विषय में कुछ भी सहायता करने में वह असमर्थ है, ऐसा मानकर वह चुप ही रहती थी।

इसी प्रकार एक दिन बेन्यहूद से मिलने के लिए आए हुए कुछ आत्माभिमानी लोगों ने उससे पूछा – ''आपका शब्दकोश निर्माण का काम कैसा चल रहा है? वह कब समाप्त होगा....?''

पास ही खड़ी हेम्डा की ओर संकेत कर उसने कहा – ''धीमी गति से चल रहा है। उसकी गति को बढ़ाना तो इसके सहारे है ....।''

''इसका मतलब...........?''– उन्होंने इसका अर्थ न समझते हुए पूछा।

''जैसे – जैसे यह (हेम्डा) मेरे अन्य कामों में अधिकाधिक सहयोग करेगी वैसे–वैसे मेरा शब्दकोश निर्माण का काम तेजी से चलेगा। अभी तो मेरा समय सब प्रकार के कार्यों में बँट जाता है। अत: एकाग्र बुद्धि से शब्दकोश निर्माण में समय नहीं लगा पाता।'' बेन्यहूद ने कहा।

उन मित्रों के जाने के बाद हेम्डा ने पति से पूछा – ''आपका मतलब मैं नहीं समझी। आपके किस कार्य में मुझे और अधिक सहयोग देना चाहिए जिससे आप शब्दकोश का निर्माण जल्दी कर सकें....?''

''तुम जानती हो कि मेरा सबसे ज्यादा समय पत्रिका के पृष्ठों को भरने में ही खर्च होता है....।''

''परंतु उस विषय में मैं क्या कर सकती हूँ? क्योंकि मैं तो हीब्रू भाषा नहीं जानती। अभी भी हीब्रू भाषा में मेरा ज्ञान सामान्य सम्भाषण तक ही है। विद्यालय में अध्ययन के समय भी मेरा विषय विज्ञान था न कि साहित्य ....।''

''परंतु तुम्हारा लेखन कौशल तो मैं जानता हूँ। पहले तुम्हारे द्वारा मुझे लिखे गए पत्र भी साहित्यिक सुगन्ध से युक्त थे। यदि थोड़ी भी कोशिश करो तो तुम उत्तम लेखिका बन सकती हो.........।''

''पत्र लिखना एक बात है, साहित्य निर्माण दूसरी। मेरे सिर पर इस प्रकार का भार मत डालो प्रिय....।''

''प्रिये! आधुनिक हीब्रू साहित्य अभी विकसित हो रहा है। स्त्री के मोहक स्पर्श की इसमें अत्यंत आवश्यकता है। पुरुषों द्वारा न समझी जाने वाली स्त्रियों की संवेदनाएँ क्या पत्रिका में उल्लिखित नहीं की जानी चाहिए......? साथ ही हम दोनों के प्रवास के समय मिले हुए पाठकों के वचनों से तुमने जान ही लिया होगा कि पाठक नए लेखों के लिए चातक की तरह प्रतीक्षा कर रहे हैं। इसलिए यह एक अच्छा अवसर है और समय की आवश्यकता भी यही है....।''

''बहस में आपसे कौन जीत सकता है....? ठीक है, मैं स्वीकार करती हूँ। परंतु मेरी भाषा में पूरी तरह से सुधार आप के ही हाथ में है....'' – हेम्डा ने स्वीकृति देते हुए कहा।

इस प्रकार प्रारंभ हुई 'जेरुसलेम से पत्र' नाम के शीर्षक से हेम्डा की वह लेखनमाला जो आगे बहुत जल्दी लोकप्रिय हो गई। उसके कारण बहुत सारे नए पाठकों ने पत्रिका खरीदनी शुरू कर दी। दूर-दूर निवास करने वाले, हीब्रू भाषा बोलने वाले लोगों, विशिष्ट रूप से महिलाओं को ध्यान में रखकर हेम्डा द्वारा पत्र रूप में वे लेख लिखे जाते थे जो न केवल घर के कार्यों के विषय में अपितु फैशन इत्यादि स्त्रियों से सम्बन्धित विषयों पर आधारित होते थे।

समय बीतने के साथ पत्रिका के लिए विज्ञापन संग्रह का दायित्व भी हेम्डा के ऊपर ही आ पड़ा। इसके लिए वह जेरुसलेम के प्रत्येक बाजार में गई। विज्ञापन के लिए व्यापारियों की स्वीकृति प्राप्त करने के लिए उसने बहुत प्रयत्न किए। शुरू में बहुत से लोगों ने उसका मजाक भी उड़ाया परंतु उसने कोशिश नहीं छोड़ी। सबसे पहले जिसने विज्ञापन दिया उसने अनुभव किया कि उस सप्ताह उसकी दुकान में पहले की अपेक्षा अधिक व्यापार हुआ। उसके उस अनुभव को दूसरे दुकानदारों को सुनाते हुए हेम्डा ने वहाँ से भी विज्ञापनों का संग्रहण किया। जिस प्रकार वह समर्थ लेखिका थी उसी प्रकार वह पत्रिका के लिए विज्ञापन संग्रह करने वाली आर्थिक व्यवस्थापिका भी बन गई थी। पत्नी की इस प्रगति को दखेकर बेनयहूद प्रसन्न था।

बाल्यावस्था का प्रताप

बेन्झियोन अब ग्यारह साल का हो गया था। नियमित रूप से वह विद्यालय जाता था। पिता की साहसी प्रवृत्ति उसमें भी दिखाई देती थी। येमिमा भी सभी बातों में बड़े भाई का ही अनुकरण करती थी। समान विचार वाले उन बच्चों का एक दल था। उसका नायक बेन्झियोन ही था। वे विद्यालय के समय के बाद बेन्झियोन के घर के उद्यान में ही प्रायः मिलते थे। उस बैठक में बहुत सारे विचारों का आगमन होता था। इस प्रकार की बैठक में एक दिन किसी बालक ने उसके द्वारा सुनी हुई नई बात सुनाई कि जाफ्फा के पास रहने वाले कुछ यहूदी भाइयों को अरबी लोगों ने मार दिया है। वस्तुतः वे अरबी लोग उन निर्दोष किसानों की और उनके समान दूसरे यहूदियों की रक्षा के लिए शासन द्वारा नियुक्त रक्षक ही थे परंतु किसी कारण से अपने रक्षितों को ही उन्होंने मार दिया था।

इस समाचार को सुनकर सभी बच्चे गम्भीर हो गए। यद्यपि मरे हुए लोगों के साथ उनका कोई रक्त का सम्बन्ध नहीं था, फिर भी, वे लोग भी हीब्रू भाषा बोलने वाले यहूदी भाई थे, इस कारण से उनके मन में बहुत दुःख था। "इस प्रकार की घटनाएँ प्रायः होती रहती हैं, यदि हम लोगों ने कोई विरोध नहीं किया तो आगे भी हमारे भाइयों को बार-बार मारा जाएगा....।" – बेन्झियोन ने कहा।

"परंतु हम बच्चे क्या कर सकते हैं? यह तो बड़े लोगों को सोचना चाहिए......" -- उनमें से किसी अन्य बच्चे ने कहा।

"मित्र! हम सब बच्चे ही क्यों न हों ..... परंतु हम कुछ भी करने में असमर्थ हैं ऐसा मत सोचो। यदि हम लोग भी संगठित हो जाएँ, शक्ति को इकट्ठा कर लें तो बड़े युद्ध का भी सामना कर सकते हैं ....।"

"'युद्ध का सामना ....। कहीं.... तुम सेना बनाने के विषय में तो नहीं सोच रहे ....?" – उसने पुनः आश्चर्य से पूछा।

"क्यों नहीं ....? अब हमें वही करना होगा। उस प्रकार की शक्ति से संपन्न यहूदी सेना हमें तैयार करनी चाहिए जो कि न केवल अरबी लोगों को

अपितु अन्य विरोधियों को भी पराजित करने में समर्थ हो सके ....'' – बेन्झियोन ने आत्मविश्वास से कहा।

शस्त्र लिए हुए, गणवेश धारण किए हुए, युद्ध का घोष करने वाले सैनिकों का कोई दल बच्चों के मन में ही बनने लगा।

''अरे, उस प्रकार की सेना का निर्माण तो अत्यंत खर्चीला है। हम कहाँ से धन लाएँगे ....?'' – दूसरे बालक का प्रश्न था।

''मेरे पास इकट्ठे किए हुए कुछ सिक्के हैं। उनको मैं देने के लिए तैयार हूँ ....'' – येमिमा बोली।

''सभी को देना चाहिए। परंतु उसके बाद भी उतने कम धन से कुछ भी नहीं किया जा सकता। हम सभी को धन का दूसरा भी स्रोत सोचना चाहिए।''

''वह कैसे ....? ''

उस प्रश्न का उत्तर किसी को भी नहीं सूझा। ''मुझे एक दिन का समय दो। तब तक मैं कुछ उपाय सोचूँगा। आप सब भी, और क्या किया जा सकता है ऐसा सोचकर आइये –'' ऐसा कहकर बेन्झियोन ने बैठक समाप्त की।

●●●●

दूसरे दिन जब वे लोग मिले तब बेन्झियोन के मुँह खोलने से पहले ही एक अन्य बच्चे ने कहा – ''मित्र ! क्या तुम जानते हो कि बेरन् रोथस्वैल्ड महाशय जेरुसलेम नगर आने वाले हैं .... ?''

''सच ....? तुम कैसे जानते हो?'' – बेन्झियोन का चेहरा आनंद से खिल गया।

''मेरे पिता जब अपने मित्र से कह रहे थे तब मैंने सुना। लगभग तीन महीनों के बाद उनका आगमन होगा ....।''

बेरन् रोथस्वैल्ड ....! फ्रांस देश के पेरिस नगर में रहने वाला एक यहूदी जो न केवल अत्यधिक धनवान था अपितु महान दानी भी था। इजराइल देश में चलने वाले बहुत से यहूदी संगठनों के कार्यों के लिए वह आर्थिक सहायता देता रहता था। परन्तु इजराइल देश में निवास करने वाले उसके विश्वासपात्र धर्मगुरु जिन लोगों की संस्तुति करते थे वह उन्हीं की आर्थिक सहायता करता था। यदि उसका मन हो तो वह बहुत बड़ी आर्थिक सहायता करने में भी समर्थ था।

''बहुत अच्छा, बहुत अच्छा! यदि वह इस विचार को स्वीकार कर ले तो यहूदी सेना को आर्थिक समस्या कभी नहीं होगी .....।''

''इसका मतलब हमारी सैन्य निर्माण की योजना तीन महीनों तक लम्बित हो जाएगी ....?''

''नहीं, नहीं ....। हम तो इसी समय काम शुरू करेंगे। पहले उसे एक निवेदन पत्र भेजेंगे। उसे देखकर वह कुछ धन भेजेगा। जब वह यहाँ आएगा तब हमारी सेना को प्रत्यक्ष देखकर प्रसन्न होगा। तब तो पर्याप्त मात्रा में धन भी देगा ही'' – बेन्झियोन की बातों में कोई संशय ही नहीं था।

''परंतु उसका पता कहाँ है ....?''

''चिंता मत करो। वह इतना प्रसिद्ध है कि पेरिस में सभी लोग उसे जानते ही हैं। साथ ही विद्यालय में हमारे प्राचार्य ने कहा था कि वह राष्ट्रपति के निवास के पास वाले भवन में रहता है....।'' उसके बाद बेन्झियोन ने लम्बे समय तक सबके साथ विचार–विमर्श करके सबका मत जानकर पत्र का एक प्रारूप तैयार किया। अंत में उसका परिष्कृत रूप एक उत्तम कागज पर लिखा :

श्रीमान् बेरन् एड्मण्ड् रोथस्वैल्ड महोदय,

राष्ट्रपति निवास के पास,

पेरिस नगर, फ्रांस

यह पता लिखकर इसके बाद फ्रेंच भाषा में उसने इस तरह लिखा –

इस अनदेखे सेवक के इस प्रकार के पत्र को देखकर आश्चर्यचकित मत होइए, मान्यवर!

आपके परमप्रिय इजराइल देश में इन दिनों कुछ निर्दोष यहूदी किसानों को बिना किसी कारण के मारा जा रहा है इसलिए दुष्ट अरबियों का दमन करने के लिए सेना की आवश्यकता है। इस पत्र के अंत में हस्ताक्षर करने वाले मेरे सौ से ज्यादा मित्रों की ओर से मैं आपसे सविनय निवेदन करता हूँ कि वैसी यहूदी सेना का नेतृत्व करने के लिए मैं पूरी तरह से तैयार हूँ। परंतु आप जानते ही हैं कि उस प्रकार की सेना का निर्माण करना अत्यधिक खर्चीला है। यद्यपि बहुत कम खर्च में ही हम वह कार्य करना चाहते हैं फिर भी थोड़ा खर्च तो होगा ही। आरम्भ में सेना में केवल सौ सैनिक होंगे। मैं सोचता हूँ कि इतने लोगों की व्यवस्था के लिए भी प्रत्येक महीने सौ पौण्ड धन की आवश्यकता होगी। उसमें भी सेना का निर्माण शुरू करने के लिए सैनिकों के समान गणवेश के निर्माण के लिए और शस्त्र खरीदने के लिए शीघ्र ही धन की बड़ी आवश्यकता है। इसलिए

मैं प्रार्थना करता हूँ हम लोगों में विश्वास करते हुए आप ये पत्र प्राप्त होते ही सौ नेपोलियन् जितना धन भेज दें।

अभी तक हमने सेना के अधिकारियों का निर्वाचन कर लिया है। सेना का झंडा भी निश्चित है, जिसकी प्रतिकृति इस पत्र के साथ भेजी जा रही है। सेना के संचलन गीत के रूप में उपयोग करने के लिए फ्रेंच सेना के संचलन गीत का मैंने हीब्रू भाषा में अनुवाद किया है, वह भी भेज रहा हूँ। कृपया अवलोकन करें। आप महान दानी हैं। आप इस महान कार्य में हमारी सहायता करेंगे ही, ऐसा हमें पूरा विश्वास है। इस कार्य के लिए भविष्य में पूरा देश आपका 'आधुनिक यहूदी सेना के निर्माता' के रूप में कृतज्ञतापूर्वक स्मरण करेगा।

शत-शत प्रणाम।

आपका आज्ञाकारी

बेन्यहूद का पुत्र बेन्झियोन

हीब्रू सेनापति।

वे सब डाकघर गए और वह पत्र भेज दिया। वहाँ से आरम्भ हुई क्षणों की गिनती। दिन बीते, सप्ताह बीत गए, महीने भी बीत गए। पेरिस से कोई उत्तर नहीं मिला। परंतु बेन्झियोन निराश नहीं हुआ। अपने द्वारा अनुवाद किया हुआ संचलन गीत गाते हुए उसने सैनिकों को संचलन का अभ्यास कराया। शस्त्रों की जगह डंडा लेकर सैनिकों ने व्यायाम किया। जेरुसलेम नगर के नागरिकों ने इस दृश्य को देखकर आश्चर्य का अनुभव किया।

इसी बीच हेम्डा गर्भवती हो गई। इस बात को जानकर बेन्यहूद बहुत खुश हुआ। उसने उसकी कुशलता के विषय में अत्यधिक ध्यान दिया। इन दिनों येमिमा और बेन्झियोन भी घर के कामों में माँ की सहायता करते थे। सुख से दिन बीत रहे थे।

●●●●

एक दिन बेन्यहूद के घर के दरवाजे पर किसी अपरिचित ने आवाज दी। दरवाजा खोलते ही उस अपरिचित ने "मैं हूँ बेरन् रोथ्स्वैल्ड का प्रतिनिधि" ऐसा परिचय देते हुए बेन्यहूद को तीखी नजरों से देखते हुए कहा – "आप ही हैं ना बेन्यहूद ....?"

"हाँ! मैं ही हूँ .... ।" – उसने कहा।

"मान्यवर बेरन् महोदय के शब्दों में ही उनका संदेश सुनिए – मुझसे धन प्राप्त करने के लिए आपके द्वारा किया गया नया षड्यंत्र सफल नहीं होगा।

साथ ही यह अनुचित कार्य आपको शोभा नहीं देता। इससे आपकी विश्वासपात्रता भी नष्ट हो गई है। फिर कभी आपकी बात पर विश्वास नहीं करूँगा ....।''

''महोदय! क्या कह रहे हैं आप? वैसा क्या अनुचित कार्य किया है मैंने ..?'' – कुछ भी न समझते हुए बेन्यहूद ने पूछा।

''वही, आपके द्वारा लिखा गया वह पत्र.... जिसके पढ़ने से बेरन् महोदय ने आपको स्पष्ट रूप से सूचित करने के लिए मुझे निर्देश दिया है कि आपने उनका विश्वास तोड़ दिया है। इसलिए उन्होंने निर्णय किया है कि आपकी पत्रिका के लिए वे जो सहायता करते हैं वह भी आज के बाद नहीं की जाएगी।''

''श्रीमान्! कृपया सुनिये तो। अवश्य ही उन्होंने कुछ गलत समझ लिया है मैं उसका समाधान करता हूँ। आप किस पत्र के विषय में बोल रहे हैं? क्या वह पत्र आपके पास यहाँ है....?'' – बीच में पड़ते हुए हेम्डा ने कहा। ''क्यों नहीं .... यहीं है'' – ऐसा बोलते हुए उसने अटैची खोलकर उसमें से एक पत्र निकाल कर देते हुए कहा – ''स्वयं ही पढ़ लो यह ....।''

बेन्यहूद ने सावधानी से पत्र पढ़ा। पत्र समाप्त करते-करते पुत्र के प्रति उसका क्रोध सातवें आसमान पर पहुँच गया।

वहाँ बैठे हुए बेन्झियोन से उसने कहा – ''मूर्ख! ऐसा अनुचित कार्य तूने किया ....?''

''हाँ, मैंने ही वह पत्र लिखा है। उसमें क्या गलत है ....? यहूदी सेना की तो आवश्यकता है ही। यदि बेरन् महोदय चाहते हैं तो सहायता करें । नहीं करेंगे तो भी, हम कैसे भी हो, सेना का निर्माण तो करेंगे ही ....'' – पुत्र ने कहा।

''बेटा! बड़े लोगों का व्यवहार तुम नहीं समझते। हमारी बातचीत सुनकर खुद ही कल्पना करके कुछ भी ऊटपटाँग सोचते हो। तुम बच्चे हो, यह भूल जाते हो, प्रौढ़ की तरह व्यवहार करते हो। तुम नहीं जानते कि तुमने हमें किस प्रकार के संकट में डाल दिया है ....।'' – हेम्डा ने कहा।

''ओह! बड़ों के मामलों में बच्चों का चोंच घुसाना ....।'' – उस प्रतिनिधि ने कहा – ''इसी कारण बेरन् महोदय की यहाँ आने की योजना भी निरस्त कर दी गई ....।''

न जाने बेन्यहूद पुत्र को किस प्रकार का दण्ड देने के लिए सोच रहा था, तब तक थकी, चिंतित और दर्द से कराह कर कुर्सी पर बैठती हुई हेम्डा ने

कहा – "प्रिय, मैं रुक नहीं सकती। लगता है कि मेरे प्रसव का समय आ गया है। किसी दाई (नर्स) को ले आओ।"

"मित्र! बाद में आपसे मिलता हूँ। अभी तो मुझे अनुमति दीजिए ...." ऐसा कहकर बेन्यहूद वहाँ से दौड़ा। बेन्झियोन भी घर से निकल गया। उसका सुंदर सपना नष्ट हो गया था। बौराये हुए कुत्ते की तरह वह रात तक नगर की गलियों में निरर्थक यहाँ से वहाँ घूमता रहा। रात को बहुत देर से घर लौटे हुए बेन्झियोन के कान में येमिमा ने कहा – "भैया! माँ ने बच्चे को जन्म दिया है। बहुत सुंदर है वह। माँ कह रही है कि उसका नाम 'डेबोरा' ही रखेंगे। ठीक है न ....?"

●●●●

सौभाग्य से बेरन् का प्रतिनिधि भी परिस्थिति को समझ गया था इसलिए उतना कुछ अप्रिय नहीं घटा जितनी सम्भावना थी। बेन्झियोन को भी पिता की केवल डाँट ही पड़ी। परंतु बेन्झियोन की साहसी प्रवृत्ति दिन पर दिन बढ़ती ही जा रही थी। थोड़े ही समय में दूसरा साहसी कार्य करने के लिए वह तैयार हो गया।

एक दिन बाजार में बेन्झियोन घूम रहा था। वहाँ उसका परिचित एक दुकानदार था। उसने बेन्झियोन को पास में बुलाकर एक यन्त्र दिखाते हुए कहा– "जानते हो यह क्या है? यह यन्त्र कल ही आया है....।" वह थी प्रतिलिपि करने की छोटी मशीन (फोटो कॉपी मशीन)। सुंदर अक्षरों में काली स्याही से लिखे किसी भी पत्र की अनेक प्रतियाँ उस मशीन से बहुत जल्दी बनाई जा सकती थीं। दुकानदार ने उस मशीन द्वारा छपी हुई अनेक प्रतियाँ भी दिखाईं।

वह देखते हुए बेन्झियोन के मन में कोई अभूतपूर्व कल्पना आ गई।

"हाँ। क्यों नहीं हो सकता?" उसने सोचा। बाजार से घर आते समय उसके मन में उस कल्पना ने स्पष्ट रूप धारण कर लिया था।

"हीब्रू भाषा में केवल बच्चों की कोई पत्रिका प्रकाशित करनी चाहिए, जिसका संपादक मैं बनूंगा। उस पत्रिका के सभी विषय बच्चों के लिए ही होंगे। लेखक भी बच्चे ही होंगे। 'डीर्' पत्रिका की तरह वह भी लोकप्रिय हो जाएगी..। परंतु खर्च के विषय में क्या करना चाहिए? सबसे पहले वैसी एक फोटो कॉपी मशीन खरीदनी चाहिए। उसके लिए ही ज्यादा धन की आवश्यकता होगी। उसके बाद पत्रिका के लिए लेख, कथा और कविताएँ लिखनी होंगी। पत्रिका में कौन-कौन से विभाग होने चाहिए ....?"

उसने उन विभागों की सूची भी बना ली –

1. पाठक मित्रों के लिए पत्र
2. हीब्रू बच्चों का कर्त्तव्य
3. प्राचीन यहूदी साम्राज्य की सीमाएँ
4. बच्चों के नाटक
5. बच्चों की कविताएँ
6. चुटकुले और हास्य रचनाएँ
7. अन्य विषय

ऐसा निश्चय करके उसने विषयों का संग्रह भी कर लिया। उसके बाद परिचितों में से एक - एक से उसने एकांत में धन की सहायता के लिए प्रार्थना की। उसका उद्देश्य यह था कि पत्रिका जब तक बिकने के लिए बाजार में न आ जाए तब तक कोई भी इस विषय को न जान सके। वह सबसे पहले निस्सिं बेहर के ही घर गया। वह उस समय दूसरे शहर जाने के लिए तैयार था। बेन्झियोन का विचार सुनकर उसने उस बच्चे को निराश करना उचित नहीं समझा और उसे पाँच सिक्के दे दिए। बेन्झियोन का उत्साह दुगुना हो गया। कुछ दिन तक उसने उसी प्रकार धन इकट्ठा किया। अंत में प्राप्त सारा धन उस दुकानदार को देकर उसने कहा – ''मुझे वैसी ही मशीन दिला दो।''

वहाँ से वह अपने विद्यालय में पढ़ने वाले उस मित्र के घर गया जो अपने सुंदर लेख के लिए विद्यालय में प्रसिद्ध था। उसने प्रार्थना की – ''पत्रिका के लिए सभी लेख तुमको अपने हाथ से लिखने होंगे। उसके लिए तुम्हें कुछ धन भी दिया जाएगा।'' यद्यपि पहले वह नहीं माना परन्तु धन देने के प्रस्ताव को सुनकर वह मान गया। जल्दी ही उसने सब लिख कर भी दे दिया।

एक सप्ताह के बाद बेन्झियोन की वह पत्रिका बाजार में दिखाई दी। सम्माननीय संपादक महोदय बेन्झियोन अपने मित्रों के साथ बाजार में यहाँ से वहाँ घूमते हुए पत्रिका की सत्तावन प्रतियाँ बेचने में सफल हो गये। उस दिन नगर में सभी जगह उसकी चर्चा थी।

बहुत उत्साह और कृतज्ञता के भाव से घर में घुसते हुए पुत्र को बेन्यहूद ने देखा। उसकी दृष्टि में क्या भाव था, उसे समझने की कोशिश बेन्झियोन ने की। पुत्र के द्वारा किए गए साहसी कार्य के विषय में यद्यपि बेन्यहूद के मन में महान् अभिमान था, फिर भी उसका तरीका ठीक नहीं था, यह बेन्यहूद अच्छी

तरह से जानता था। इसलिए उसने पुत्र से कहा – "बेटा, पत्रिका का संचालन बच्चों का काम नहीं है। तुम अभी बच्चे हो। क्या करना चाहिए, क्या नहीं इसका विवेक तुम्हें नहीं है। तुम्हारा 'प्राचीन यहूदी साम्राज्य की सीमाएँ' लेख बहुत विवादास्पद है। सावधान! तुम्हारे द्वारा ऐसा दुस्साहस फिर न हो। आगे भी जब तक मैं न कहूँ तब तक इस प्रकार के दुःस्साहसिक कार्यों में अपने को मत लगाना ...."

और इस प्रकार प्रथम अंक के प्रकाशन के साथ ही बेन्झियोन का पत्रिका प्रकाशन का काम समाप्त हो गया। उन्हीं दिनों नगर में दूसरे ही प्रकार का कोई झगड़ा फैल गया जिसमें कुछ लोगों को मार दिया गया। सब लोगों का ध्यान उस ओर चला गया और इसी कारण बेन्झियोन भी पत्रिका संचालन के रुकने से अधिक दुःखी नहीं हुआ। फिर भी पिता के मार्ग का अनुसरण करने वाले ग्यारह साल के इस पुत्र के द्वारा किए गए साहस का तो इतिहास के पन्नों में उल्लेख हो ही गया।

कारावास

डेबोरो के जन्म के बाद बेन्यहूद के घर फिर से शांति स्थापित हो गई। शिशु के रोने की आवाज से गूँजता हुआ उसके घर का वायुमंडल आनंदित हो गया। येमिमा और बेन्झियोन भी बहुत प्रसन्न थे। बेन्यहूद भी प्रसन्नता से अपने कार्य में मग्न था। परंतु थोड़े समय बाद ही एक अन्य संकटमय प्रसंग उपस्थित हो गया।

बेन्यहूद का श्वसुर योनस जब पुत्री को पहुँचाने के लिए इजराइल आया तब उसने बहुत दिनों तक वहीं निवास किया। वस्तुत: तो आरंभिक दिनों में बेन्यहूद के मन में हीब्रू भाषा के विषय में प्रेम या श्रद्धा योनस के कारण ही उत्पन्न हुई थी। योनस का हीब्रू भाषा का ज्ञान भी उत्तम था। जेरुसलेम नगर आने के बाद बेन्यहूद के साथ रहने, उसके साथ निरंतर बातचीत करने से उनका भाषा ज्ञान और भी अधिक विकसित हो गया। बेन्यहूद ने उसे भी अपने काम में जोड़ने की इच्छा से पत्रिका के संपादकीय विभाग में कार्य दिया। योनस ने उत्साह से उस दायित्व को निभाया। मुद्रण के लिए तैयार किए गए पृष्ठों के अक्षरों आदि की त्रुटियों में संशोधन जैसे कार्य उसने शीघ्र ही सीख लिए। पत्रिका के पन्ने भरने के लिए बीच-बीच में अत्यंत संक्षिप्त लेखों की आवश्यकता होती थी। उस प्रकार के लेख भी उसने लिखे। बेन्यहूद भी उससे बहुत संतुष्ट था।

एक बार हीब्रू आंदोलन सम्बंधी कार्य में भाग लेने के लिए बेन्यहूद को लगभग पन्द्रह दिनों तक दूसरी जगह प्रवास करना पड़ा। वह अपने साथ पत्नी हेम्डा और पुत्री डेबोरा को भी ले गया। उन दिनों पत्रिका के प्रकाशन का पूरा दायित्व उसने श्वसुर के कंधों पर डाल दिया। वस्तुत: उन दिनों सत्ता में स्थित तुर्की शासन ने पत्रिकाओं के लिए पूरी स्वतन्त्रता नहीं दी थी। शासन के विरोध में कुछ भी प्रकाशित करने की पत्रिकाओं को अनुमति नहीं थी। पत्रिकाओं में प्रकाशित एक-एक पंक्ति की शासकीय अधिकारी सूक्ष्म दृष्टि से जाँच करते थे। उसमें कुछ भी आपत्तिजनक हो तो संपादक के विरुद्ध मुकदमा करने के लिए उन्हें पूरा अधिकार था। इसलिए बेन्यहूद बहुत सावधानी से पत्रिका के

संपादकीय और अन्य लेखों का परिशीलन करके प्रकाशित करता था। प्रवास के लिए जाते समय उस विषय में श्वसुर को फिर से याद दिलाकर ही वह गया।

बेन्यहूद की अनुपस्थिति में योनस ने सावधानी से ही पत्रिका के संपादन का कार्य किया। उन दिनों 'हनुख्खा' नामक त्यौहार का समय था। उस पर्व में दीप-पूजा की परम्परा थी। वही मन में रखकर योनस ने बहुत प्रयत्न से एक उत्तम लेख लिखा। लेख के अंत में उसने पाठकों के लिए इस प्रकार लिखा – "हम सब तैयार हो जाएँ। अपनी शक्ति को संकलित करके आगे बढ़ें।" निश्चित दिन पत्रिका का प्रकाशन हुआ।

अभी भी बेन्यहूद के अनेक विरोधी थे ही। वे लोग किसी तरह से भी उसके बढ़ते हुए प्रभाव को नष्ट करने के लिए प्रयत्नशील थे। इसके लिए उचित अवसर की प्रतीक्षा भी कर रहे थे। बेन्यहूद की अनुपस्थिति में योनस के संपादन में प्रकाशित पत्रिका को लेकर उन विरोधियों ने प्रत्येक पृष्ठ की प्रत्येक पंक्ति के प्रत्येक अक्षर को ध्यान से पढ़ा। योनस के लेख के अंतिम दो वाक्य जब उन्होंने पढ़े तब उन्होंने सोचा कि यहाँ ऐसा अंश है जिसके आधार पर हम बेन्यहूद की तेजस्विता का नाश कर सकते हैं, उसके यश को समाप्त कर सकते हैं। इसलिए वे सब पत्रिका लेकर उन धर्मगुरुओं के पास गए जो बेन्यहूद की हीब्रू भाषा को व्यावहारिक भाषा के रूप में प्रचार कार्य को अधर्म मानते थे। उन सभी लोगों ने लम्बे समय तक उस पत्रिका की समालोचना की तथा रणनीति पर विचार किया। उसके बाद धर्मगुरुओं का एक दल शासकीय अधिकारियों से मिलने गया।

उस समय शासन करने वाले सुल्तान अब्दुल हमीद द्वितीय के अधीन स्थित तुर्की अधिकारी यहूदियों से द्वेष करते थे। "ये यहूदी कभी भी जाग्रत हो कर स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष कर सकते हैं।" ऐसा उनके मन में भय था। हीब्रू आन्दोलन से यहूदियों का संगठन बन रहा है, यह भी वे लोग देख ही रहे थे। अत: आन्दोलन के नेता बेन्यहूद का दमन करने के लिए वे भी अवसर की प्रतीक्षा में थे। धर्मगुरुओं ने उन्हीं अधिकारियों से मिलकर उन्हें पत्रिका का लेख दिखाया। उसमें प्रकाशित दो वाक्यों पर जोर देकर कहा – "हम तैयार हो जाएँ। अपनी शक्ति संकलित कर आगे बढ़ें। इसका क्या अर्थ है ....? हम सब किसलिए तैयार हो जाएँ ....? अवश्य ही युद्ध के लिए ....! अपनी शक्ति को इकट्ठा करने का मतलब सशस्त्र सेना का संगठन, यही तो इसका निहित अर्थ है। आगे बढ़ें कहाँ .....? सुल्तान के विरुद्ध युद्ध के लिए ....! निस्सन्देह यही इसका अर्थ नहीं है क्या ....? इसका मतलब संपादक बेन्यहूद अपनी पत्रिका के

माध्यम से सभी यहूदियों को सम्राट के विरुद्ध युद्ध के लिए प्रेरित कर रहा है।''– उसके दो वाक्यों की ऐसी व्याख्या करते हुए उन धर्मगुरुओं ने अधिकारियों के मन में दुर्भावना उत्पन्न कर दी। ''यदि इसी समय उसका दमन नहीं किया गया तो आगे बहुत कष्ट देगा'' यह भी उन्होंने स्मरण कराया। अधिकारियों ने भी इस बात को स्वीकार करते हुए जल्दी ही बेन्यहूद को गिरफ्तार करने का उपाय सोच लिया।

●●●●

प्रवास से लौटने के पहले ही बेन्यहूद ने श्वसुर द्वारा संपादित और प्रकाशित अपनी पत्रिका की एक प्रति प्राप्त की। जिज्ञासा से उस पत्रिका को उसने आरंभ से अंत तक पढ़ा। उसमें दोषारोपण के योग्य अंश कोई भी नहीं था, ऐसा बार–बार पढ़ने से निश्चय करके संतुष्ट होकर उसने गहरी साँस ली। लौटने पर इस कार्य के लिए उसने अपने श्वसुर योनस का अभिनंदन भी किया।

चार दिन बाद सुबह बेन्यहूद मुद्रणालय जाने की तैयारी में था। हेम्डा पुत्री को दुलार रही थी। उसी समय घर के बाहर कोई वाहन आकर रुका। उसमें से उतरे हुए पाँच--छः लोग सीधे घर में घुस आए। उनकी वर्दी से लग रहा था कि वे सब पुलिस अधिकारी थे। उनके प्रमुख ने बेन्यहूद के सामने खड़े होकर कहा– ''इसी क्षण आपको मेरे साथ चलना होगा ....।''

उसके वचन सुनकर बड़ी विपत्ति की आशंका करते हुए हेम्डा ने बाहर आकर कहा – ''उन्हें किसलिए ले जा रहे हो? उन्होंने क्या अपराध किया है?'' ''प्रिय! डरो मत। मैं इनके कार्यालय जाकर जल्दी ही वापस आता हूँ। मैंने कोई अपराध नहीं किया है। इसलिए वे मुझे कैसे पकड़ सकते हैं? तुम निश्चिंत रहो'' ऐसा कहकर कोट और टोपी पहन कर बेन्यहूद उनके साथ चला गया। हेम्डा निराश होकर बैठ गई।

यद्यपि ''मैं जल्दी ही वापस आता हूँ'' बेन्यहूद ने कहा ऐसा था फिर भी हेम्डा का मन ''आज कुछ अप्रिय ही सुनना पड़ेगा'' ऐसी आशंका कर रहा था। अधीरता से उसने क्षणों की गिनती शुरू की किंतु कई घंटे बीत गए फिर भी पति वापस नहीं आया। उसका धैर्य समाप्त हो गया। उसने अपने विपत्ति के मित्र निस्सिं बेहर को समाचार भेजा। परंतु निस्सिं बेहर घर पर नहीं था। पूछ–ताछ करने पर ज्ञात हुआ कि वह भी बेन्यहूद को पकड़े जाने का समाचार जानकर पुलिस थाने की ओर ही गया है। यह जानकर हेम्डा कुछ आश्वस्त हुई।

शाम तक भी कोई समाचार प्राप्त नहीं हुआ। शाम को घर के दरवाजे पर निस्सिं बेहर अकेला ही दिखाई दिया। उसने कहा – ''लंबे समय तक

अधिकारियों ने बेन्यहूद से पूछताछ की। लेख के उन्हीं दो वाक्यों ने बेन्यहूद को अपराधी बना दिया। यद्यपि वह लेख बेन्यहूद ने नहीं लिखा था परंतु वे लोग इसे स्वीकार नहीं करते। पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक वाक्य का उत्तरदायित्व संपादक का ही है। इसलिए वही दण्ड योग्य है, ऐसा उनका निर्णय है। लेकिन आप डरो मत। कल सुबह वह वापस आ जाएगा।''

बेन्यहूद जेल में बंद है, ऐसा समाचार सुनकर हेम्डा के तो पैरों तले से जैसे जमीन ही खिसक गई। उस रात वह एक मिनट भी नहीं सो पाई। मध्य रात्रि में आए हुए एक अपरिचित व्यक्ति ने उसे अपना परिचय देते हुए कहा – ''बहन! मैं बेन्यहूद पर श्रद्धा करने वालों में से एक हूँ। पेशे से मैं सब्जी बेचने वाला हूँ। जेल में भी मैं सब्जी देता हूँ। आज शाम को वहाँ जाने पर मैंने बेन्यहूद महोदय को बंद किये जाने का समाचार सुना। किसी तरह वहाँ के रक्षक की अनुमति प्राप्त कर मैंने यहूद महोदय को देखा। 'कोई संदेश है क्या?' ऐसा पूछा भी ....।''

हेम्डा ने कान खड़े करके सुना। उसने बात आगे बढ़ाई – ''तब एक क्षण सोचकर उन्होंने मुझसे कहा – ''मित्र! मेरी पत्नी को कहना कि शीघ्र सारे घर की सफाई करे। अचानक मेहमानों के आने की सम्भावना है, यही उसका संदेश है।''

हेम्डा ने पति के संदेश को बार–बार मन में दोहराया। ''कैसा सन्देश है यह? कौन अतिथि आने वाले हैं ....?'' थोड़े समय में ही वह पति के सन्देश को समझ गई। उसने उस व्यक्ति को धन्यवाद देते हुए कहा – ''भाई! कृपया मेरे पति से कह देना कि मैंने आपका सन्देश प्राप्त कर लिया है। मैं उसी का अनुसरण करूँगी।

''ठीक है, ऐसा कह दूँगा।'' यह कहकर वह चला गया।

उसके जाने के बाद हेम्डा ने जल्दी से उठकर घर में रखे हुए बेन्यहूद के लेख आदि सम्बन्धित सारे पत्र एक स्थान पर इकट्ठे किए। उन सभी पत्रों को एक पेटी में भरकर उस पेटी को पड़ोसी के घर ले जाकर उसने रख दिया। घर आकर सोचा – ''घर की सफाई तो कर दी। अतिथि कब आएँगें ....?''

दूसरे दिन सुबह ही दो–तीन अधिकारियों ने हेम्डा के घर के दरवाजे को खटखटाया। दरवाजा खोलते ही सीधे अंदर घुसकर उन्होंने सभी जगह खोजबीन चालू कर दी। यहाँ–वहाँ प्राप्त सारे कागज और दो–तीन फाइलें लेकर वहाँ से चले गए। हेम्डा मन ही मन हँस दी।

किसका अपराध, किसे सजा

दोपहर के बाद एक अन्य सन्देशवाहक आया। उसने बेन्यहूद का सन्देश सुनाया - "मैं ठीक हूँ। चिंता मत करना। मुझे जेल से मुक्त कराने के लिए सारे मित्र तेजी से प्रयास कर रहे हैं। दो-तीन दिन के अंदर ही मैं वापस आ जाऊँगा।"

परन्तु हेम्डा को तो तुर्की शासन पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं था। वे इतनी जल्दी बेन्यहूद को कैद से मुक्त नहीं करेंगे, यही उसका मन कह रहा था। इसलिए उसने निश्चय किया कि पति की मुक्ति के लिए उसे भी प्रयत्न करना चाहिए। पहले एक बार उन्हें देखकर आना चाहिए। अतः शाम को पति के किसी मित्र के साथ वह जेल गई।

जेल में पहुँचकर पूछताछ करने पर वहाँ के द्वारपाल ने स्पष्ट शब्दों में कहा-"सूर्यास्त के बाद किसी बंदी से मिलने की अनुमति नहीं दी जाती है....।"

"इस बेचारी के प्रति ही थोड़ी दया दिखाओ, मित्र!"-हेम्डा के साथ गए हुए उस बन्धु ने कहा।

"मैं कुछ भी नहीं कर सकता। मध्यरात्रि के समय जेल के मुख्य पर्यवेक्षक निरीक्षण के लिए आएँगे। उनसे पूछना" – उस द्वारपाल ने कहा।

अंततः हेम्डा द्वारा दिए हुए कुछ सिक्के उसका मन परिवर्तित करने में समर्थ हुए। बहुत कम समय के लिए पति को देखने की उसने अनुमति दी और अंदर भेजा।

कारागार के अंदर लोहे की सलाखों के पीछे सामान्य चोर-लुटेरे के समान जेल में बैठे अपने पति को देखकर हेम्डा के दुःख की सीमा नहीं रही। बेन्यहूद ने ही उसको शांत किया। दुःख को छिपाते हुए कहा, "घबराओ मत, सब ठीक हो जायेगा।" अभी उन दोनों ने बातचीत शुरू की ही थी कि जेल के रक्षक ने हेम्डा से कहा, "समय हो गया। अब जाना होगा।" वह बेचारी कोई और रास्ता न देखते हुए पति की अनुमति लेकर वहाँ से चली आई।

निस्सिं बेहर बेन्यहूद की जेल से मुक्ति के लिए हर प्रकार के उपायों को सोचता हुआ इसी कार्य के लिए दिन-रात लगा हुआ था। उसने इस विषय में

बेरन् रोथ्स्वैल्ड को विस्तार से पत्र लिखा। यदि वह तुर्की शासन को पत्र लिखे तो बेन्यहूद की सरलता से मुक्ति हो पाएगी, ऐसा उसका विचार था। एक दिन उसके इस प्रकार के प्रयत्नों से क्रुद्ध एक अधिकारी ने उससे पूछा-''क्या आप भी बेन्यहूद की तरह जेल जाना चाहते हो?''

निस्सिं बेहर ने कहा-''यदि बेन्यहूद को छोड़ दिया जाए तो उसके बदले मैं खुद ही जेल जाने के लिए भी तैयार हूँ। क्योंकि मैं जानता हूँ बेन्यहूद का महत्व।'' वह अधिकारी आश्चर्यचकित हो गया।

उसके बाद निस्सिं बेहर ने बेन्यहूद को बंदी बना लिए जाने का समाचार सब जगह फैला दिया। बेन्यहूद के प्रति श्रद्धा करने वाले लोगों से उसने निवेदन किया कि वे सब ''बेन्यहूद को कैद से मुक्त करना चाहिए।'' ऐसा अनुरोधपूर्ण संदेश तार के माध्यम से शासन को भेजें। उसका बहुत प्रभाव दिखाई दिया। थोड़े समय में ही देश के अलग-अलग भागों से हजार से अधिक तार-समाचार शासन को मिले। सभी जगह से एक ही अनुरोध-''निरपराध बेन्यहूद को बंधन मुक्त किया जाए'' बस यही।

बेन्यहूद को कैद से छुड़ाने के लिए आवश्यक कार्य करने के लिए और बीच-बीच में अधिकारियों को रिश्वत देने के लिए बड़ी धनराशि की आवश्यकता महसूस हुई। इसके लिए निस्सिं बेहर ने एक कोष की स्थापना की। ''साथी की आर्थिक सहायता करो।'' लोगों से ऐसी प्रार्थना की। इस समय भी लोगों की ओर से बहुत अच्छी प्रतिक्रिया मिली। धनवान, सामान्य और निर्धन सभी यहूदियों और आत्माभिमानियों ने अपने योगदान से उस कोष में वृद्धि की। निस्सिं बेहर दुगुने उत्साह के साथ मित्र को जेल से छुड़ाने के लिए प्रयत्नों को आगे बढ़ाने लगा।

जेल में बेन्यहूद को पहले दिन तो दूसरे पन्द्रह कैदियों के साथ एक छोटे कमरे में रखा गया था। वहाँ पर्याप्त मात्रा में प्रकाश नहीं था। हवा का भी अभाव था। दीवार के ऊपरी हिस्से में बने हुए केवल एक छेद से हवा आती थी। खिड़कियाँ तो थी ही नहीं। बेन्यहूद को तो साँस लेने में भी कठिनाई हो रही थी। इसलिए वह पूरा दिन उस छेद की ओर ही अपना मुँह किए रहता था जिससे कम से कम प्राण वायु का सेवन ही पर्याप्त मात्रा में हो सके। उस दिन बेन्यहूद को जो आहार दिया गया वह भी अत्यंत खराब था। फिर भी बेन्यहूद ने किसी तरह सहन किया। हेम्डा और निस्सिं बेहर दोनों यह जानकर बहुत दु:खी हुए।

दूसरे दिन दोनों जेल के डॉक्टर से मिले। रिश्वत देने के बाद उससे प्रार्थना की कि किसी तरह से भी 'बेन्यहूद के रहने की व्यवस्था कहीं और होनी चाहिए। ऐसा वह जेल के अधिकारियों को सूचित कर दे।' उस डॉक्टर ने बेन्यहूद की जाँच कर अधिकारियों से निवेदन किया कि बेन्यहूद क्षयरोगी है इसलिए दूसरों के साथ उसे रखना उचित नहीं है। इससे उसके प्राणों की भी हानि होगी। साथ ही उससे दूसरे कैदियों को भी रोग का संक्रमण हो सकता है।

डॉक्टर की यह सूचना सफल हो गई। दूसरे ही दिन जेल अधिकारियों ने उसे अकेले ही अलग कमरे में रख दिया। उसी दिन रात को पति से मिलने के लिए हेम्डा जेल गई और उसके लिए चाय बनाने के लिए एक स्टोव ले गई।

उसने लिखने की सामग्री भी ले जाकर उसे दी। इससे बेन्यहूद बहुत प्रसन्न हुआ। उसने पत्नी के मन में साहस भरते हुए कहा–"प्रिये! चिंता मत करना। दो–तीन दिन के अंदर ही मैं वापस आ जाऊँगा...।"

परन्तु हेम्डा को उस विषय में विश्वास नहीं था। उसने कहा–"यदि उससे भी अधिक समय तक रहना पड़ा तो....?"

"क्या चिंता है....? तब तो मैं यहीं अपना शब्दकोश निर्माण का काम आगे बढ़ाऊँगा क्योंकि यहाँ मुझे दूसरा काम भी नहीं है। इससे मेरा समय भी आराम से कट जाएगा...." – बेन्यहूद ने कहा। रात को जेल से लौटते समय हेम्डा ने एक अपूर्व दृश्य देखा। खेलने के लिए घर से आए हुए बेन्झियोन के चारों ओर दस से अधिक बच्चे नाच रहे थे। वे बेन्यहूद के विरोधियों के बच्चे हैं, ऐसा दूर से ही हेम्डा ने जान लिया था। वे बच्चे जोर–जोर से गीत गा रहे थे –

"तुम्हारे पिता मूर्ख....।
जेल में बन्दी....।
उसके लिए यही ठीक है....।
पाप की सजा!
वह वहीं रहे....।
कभी बाहर न आए....।"

एक मिनट में ही वे बच्चे बेन्झियोन को मारने के लिए तत्पर हो गए। हाथ से उसके सिर पर उन्होंने प्रहार किया। उसी समय आई हुई हेम्डा ने उन लोगों को इस प्रकार व्यवहार करते हुए देख गुस्से से डाँटा–"यह क्या कर रहे हो तुम मूर्खो....।

उसका रौद्र रूप देखकर भयभीत बच्चे वहाँ से भाग गए। माँ को देखकर आँसू बहाते हुए बेन्झियोन ने कहा–''माँ! फिर से मुझे परेशान करेंगे ये.....।''

हेम्डा ने उसे चुप कराया और कहा–''आज के बाद कुछ दिनों तक मेरी अनुपस्थिति में अकेले बाहर मत जाना। ये दुष्ट कुछ भी कर सकते हैं....''

''परन्तु माँ....।'' इस सबके बीच भी आँखों में चमक लाते हुए बेन्झियोन ने कहा–''पिताजी इस घटना को जानकर बहुत खुश होंगे....।''

''ऐसा क्यों बोलते हो बेटा....?'' – आश्चर्य से हेम्डा ने पूछा।

''उन्होंने मुझे लक्ष्य करके जो–जो भी कहा और जो गाना गाया उसमें एक–एक शब्द केवल हीब्रू भाषा का ही था....।''

''वह तो सच ही है। परंतु उन्होंने हीब्रू भाषा में ही सब कुछ कहा इसमें मैं किसी और ही कारण का अनुमान करती हूँ।''

''वह क्या....?''

''शायद उनका उद्देश्य यह होगा कि उनके द्वारा कहा गया एक–एक शब्द तुम अवश्य समझो। यदि दूसरी भाषा में कहा जाता तो शायद तुम नहीं समझते।''

''कुछ भी हो। उन सब लोगों ने हीब्रू भाषा में तो कहा। उतने से ही पिताजी संतुष्ट होंगे....'' एक बड़ी उम्र के व्यक्ति की तरह बेन्झियोन ने कहा।

●●●●

एक सप्ताह के बाद न्यायालय में बेन्यहूद की सुनवाई निश्चित हुई। उस दिन सुबह ही पुलिस कर्मचारी उसे बंदी की तरह न्यायालय ले गए। न्यायालय के सामने उसके समर्थकों का बड़ा दल उपस्थित था। उन सबने दूर से ही बेन्यहूद को देखकर–''बेन्यहूद की जय हो'' इस प्रकार उसका अभिनंदन किया। प्रायः उतनी ही संख्या में विरोधियों का दल भी उपस्थित था। वे उसे देखकर–''धर्मद्रोही को धिक्कार है''– ऐसा बोल रहे थे।

बेन्यहूद कैसी भी प्रतिक्रिया प्रकट किए बिना आगे चला गया। देखने से यह स्पष्ट होता था कि समर्थकों के दल में अधिकांश युवा लोग थे और विरोधियों के दल में साठ से अधिक साल के बूढ़े ही थे।

तीन न्यायाधीशों का एक दल बेन्यहूद से पूछताछ के लिए नियुक्त किया गया था। उनमें से एक यहूदी और दूसरे दोनों अरबी थे।

आरंभ में बेन्यहूद के पक्ष से वकील ने विषय रखा। उसने 'दि डीर्' पत्रिका के उस विवादित अंक को सामने रखकर योनस द्वारा लिखित संपादकीय

दिखाकर उसका अरबी भाषा में अनुवाद करके कहा-"हम तैयार हो जाएँ। अपनी सामर्थ्य इकट्ठा करके आगे बढ़ें!" इस वाक्य का कोई विशिष्ट अर्थ नहीं है। हम सब आगे बढ़ें यही इसका अर्थ है।"

"इस वाक्य से युद्ध की गंध तो किसी प्रकार से भी नहीं आती" यह भी उसने प्रतिपादित किया। परन्तु अरबी सरकार के पक्ष से वाद करने वाले वकील ने इस अर्थ का खण्डन करते हुए इस वाक्य का "युद्ध की तैयारी करना चाहिए, युद्ध के लिए आगे बढ़ना चाहिए, यही अर्थ है" ऐसा प्रतिपादित किया।

दोनों वकीलों की बहस सुनने वाले न्यायाधीशों के मन में कोई भी निर्णय नहीं हो पाया। दोनों अरबी न्यायाधीश दोनों पक्षों से रिश्वत ले चुके थे। इसलिए कुछ भी न बोलते हुए चुप ही रहे। यहूदी न्यायाधीश तो किंकर्तव्यविमूढ हो गया। उसके बाद तीनों ने लम्बे समय तक समालोचना करके अंत में निर्णय सुनाया-"बेन्यहूद ने अपराध किया है। इसलिए उसे एक वर्ष तक जेल की सजा भुगतनी होगी। इस पूरी समस्या की जड़ उसकी 'दी डीर्' पत्रिका इसी क्षण से ही बंद कर दी जानी चाहिए।"

न्यायालय ने यह भी घोषित किया कि बेन्यहूद यदि चाहे तो वह इस विषय में उच्च न्यायालय में मुकदमा कर सकता है। साथ ही तब तक यदि किसी सम्मानित नागरिक की जमानत हो तो वह आज ही अपने घर लौट सकता है। यदि उस प्रकार की जमानत पाने में वह असमर्थ रहता है तो फिर उसे कारावास ही भोगना होगा।

इस बात को सुनकर वहाँ उपस्थित लोगों में से बहुत से उसके लिए जमानत देने के लिए आगे आ गए। निस्सिं बेहर तो उसके लिए एक पैर पर ही खड़ा था। परंतु न्यायालय ने उनमें से किसी की जमानत स्वीकृत नहीं की क्योंकि उनमें से कोई भी विशाल स्थायी सम्पत्ति का स्वामी नहीं था। परंतु तभी श्लोमो अमेल नामक एक महाधनिक यहूदी जमानत देने के लिए आगे आया। समाज में उसका महत्त्वपूर्ण स्थान भी था। न्यायालय ने उसकी जमानत लेकर बेन्यहूद को कैद से मुक्त कर दिया।

बाहर आने पर उसे देखकर वहाँ उपस्थित उसके समर्थकों के समूह ने उच्च कण्ठ से स्वागत किया। विरोधियों के चेहरे निस्तेज हो गए थे। परम मित्र निस्सिं बेहर के साथ बेन्यहूद घर आ गया।

शब्दों के अलावा कुछ भी नहीं

वस्तुतः 'दि डीर्' पत्रिका बेन्यहूद के प्राणों के समान थी। उसके बिना बेन्यहूद का जीवन अत्यंत दूभर हो गया। हीब्रू भाषा से सम्बन्धित आन्दोलन का काम बढ़ाने के लिए विदेशों में यात्रा करनी चाहिए, ऐसा उसने चिंतन किया। परंतु न्यायालय के आदेशानुसार उसका नगर से बाहर जाना निषिद्ध था। न केवल इतना बल्कि नगर में भी सब जगह स्वतन्त्रता से घूमने के लिए उसे अनुमति नहीं थी। कहीं भी जाते समय कुछ लोग मेरा पीछा कर रहे हैं ऐसा बेन्यहूद अनुभव कर रहा था।

इस कष्ट से मुक्ति प्राप्त करने के लिए बेन्यहूद और उनके मित्रों ने उच्च न्यायालय में मुकदमा करने का निर्णय किया। उसके लिए उन्होंने प्रयत्न भी शुरू कर दिए। उच्च न्यायालय सीरिया देश में स्थित बेरूत नगर में था। इसलिए यह काम बहुत खर्चीला था। फिर भी निस्सिं बेहर उसके लिए तैयार हो गया। "मुकदमा चलाने के लिए आवश्यक खर्च वहन करने के लिए धन की सहायता करो"-ऐसा उसने यहूदी बन्धुओं से निवेदन किया। नैतिक दृष्टिकोण से भी बेन्यहूद का समर्थन करने के लिए उसने सभी से प्रार्थना की।

विरोधियों ने भी इसी उपाय का सहारा लिया। 'धर्मद्रोही को सजा देने के लिए' उन्होंने सभी से सहायता के लिए प्रार्थना की। बेन्यहूद के समर्थन और विरोध की दृष्टि से पत्रों और धन का मानो एक प्रवाह ही होने लगा। दोनों ही पक्ष जानते थे कि करोड़पति बेरन् रोथ्स्चैल्ड जिस पक्ष को समर्थन देंगे उसी पक्ष की विजय होगी। इसलिए फ्रांस देश में पेरिस नगर में रहने वाले उस धनिक को निरंतर उन लोगों ने पत्र लिखे। परंतु बहुत समय तक वहाँ से कोई प्रत्युत्तर ही नहीं आया। अंत में विरोधियों को वहाँ से एक तार संदेश मिला जिसमें इतना ही लिखा था-"आप सभी लोग अपने पूजा इत्यादि धार्मिक कार्यों में मन लगायें, इसके अतिरिक्त इस प्रकार के कार्यों में नहीं।"

ऐसी व्यंग्यात्मक बात सुनकर वे सब हतप्रभ हो गए।

इन दिनों बेन्यहूद ने अपना पूरा ध्यान शब्दकोश निर्माण पर केन्द्रित कर दिया। दिन के अठारह-उन्नीस घंटे निरंतर वह कोश कार्य में ही मग्न रहता था। कार्य के अनुकूल एक ऊँची टेबल बनवा कर उसके ऊपर पुस्तकें फैलाकर पास में बैठकर दिन-रात वह काम करता रहता था। अब तक ठंड का समय आ गया था। परन्तु आर्थिक परिस्थिति बहुत शोचनीय थी इसलिए बेन्यहूद आवश्यक गर्म कपड़े खरीदने में भी समर्थ नहीं था। घर की उष्णता की रक्षा करने के लिए आवश्यक ईंधन की व्यवस्था करने में भी वह सक्षम नहीं था। पुराने-फटे पाँच-छः कपड़े एक के ऊपर एक क्रम से पहन कर उसके परिवार के लोगों ने ठंड को सहन किया।

एक दिन प्रातः बेन्यहूद के घर आकर निस्सिं बेहर ने शुभ समाचार सुनाया। उसके हाथ में उसी समय आया हुआ एक पत्र था। वह करोड़पति रोथ्स्चैल्ड ने भेजा था। उसमें लिखा था "मुकदमा आगे बढ़ाओ। खर्च के विषय में चिंता मत करो।" उसके साथ दस हजार फ्रेंक मूल्य का चेक भी था।

वह धन प्राप्त करके दोनों मित्र नए उत्साह के साथ कार्य में प्रवृत्त हो गए। आरंभ में उच्च न्यायालय में मुकदमा लड़ने में समर्थ एक वकील को उन्होंने नियुक्त किया। उसके लिए काफी धन देना पड़ गया। उस वकील ने सीरिया देश में स्थित बेरूत नगर जाकर वहाँ न्यायालय में मुकदमे को आगे बढ़ाया। बेन्यहूद को भी वहाँ जाना पड़ा। मुकदमा आरंभ करने के आठ महीने बाद वहाँ सुनवाई शुरू हुई। इच्छा होने पर भी व्यवस्था न होने के कारण हेम्डा या निस्सिं बेहर बेरूत नगर नहीं जा सके। उन दोनों ने जेरुसलेम में ही रहकर बेन्यहूद के द्वारा भेजे जाने वाले समाचार की प्रतीक्षा की। लम्बे समय के बाद बेन्यहूद के द्वारा भेजा गया तार संदेश प्राप्त हुआ। उसमें एक ही शब्द था "निर्दोषी"।

उसके दो-तीन दिन बाद बेन्यहूद वापस आ गया। उच्च न्यायालय ने उसे निर्दोष घोषित कर दिया था। किंतु 'डीर् पत्रिका' को एक वर्ष तक के लिए स्थगित रखने का आदेश दिया था। अभी तक उसमें से आठ महीने तो बीत ही चुके थे। चार महीनों के बाद पत्रिका को फिर से शुरु कर सकते हैं, यह सोच कर बेन्यहूद बहुत संतुष्ट हुआ।

••••

हीब्रू शब्दकोश निर्माण का काम बेन्यहूद के जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य था। इन दिनों उसने उस कार्य के लिए अपनी संपूर्ण शक्ति लगा दी थी। वह प्रत्येक क्षण शब्दों का जप करता रहता था। पुराने साहित्य से

सम्बन्धित सौ से ज्यादा पुस्तकों का बार-बार अध्ययन करता रहता था। उन पुस्तकों में से शब्दों का संग्रह करता था। कौन सा पुराना शब्द आधुनिक प्रसंग में कहाँ प्रयोग कर सकते हैं, ऐसा सोचता रहता था। जब वैसा कोई भी शब्द नहीं मिलता तब वह नये शब्द का निर्माण करता था। इस प्रकार उद्धृत अथवा नए प्रकार से रचित प्रत्येक शब्द और उससे सम्बन्धित विवरण वह छोटे-छोटे कागज के टुकड़ों पर लिख कर रखता था। दिन बीतने के साथ-साथ इस प्रकार के कागज के टुकड़ों से उसकी मेज पूरी भर गई। उसके बाद अलमारियों में और खिड़कियों में भी ऐसे टुकड़े दिखाई देने लगे। कभी-कभी तो बहुत सारे कागज के टुकड़े जमीन पर भी गिर जाते थे। उसके कमरे की सफाई करने के लिए जो जाते थे उन्हें स्पष्ट सूचना दी जाती थी कि वहाँ से कोई छोटा सा भी कागज का टुकड़ा फेंकना नहीं है, चाहे वह कचरे में ही क्यों न पड़ा हो।

हेम्डा जानती थी कि किसी भी फटे लिफाफे के पीछे या किसी छपे हुए निमंत्रण पत्र के पीछे बेन्यहूद के द्वारा छोटे अक्षरों में वैसा कोई शब्द या वैसी कोई टिप्पणी लिखी हो सकती है जिसका उपयोग भविष्य में हजारों यहूदी अत्यंत प्रेम से करेंगे....! अथवा वैसा कोई शब्द हो सकता है जिसके लिए बेन्यहूद ने दूसरे शहरों में स्थित ग्रंथालयों में बैठकर खोजबीन की हो। इसलिए वह अत्यंत सतर्कता से वैसा एक-एक कागज का टुकड़ा भी सुरक्षित रखती थी।

हेम्डा कभी भी उस प्रसंग को नहीं भूल सकती जब बेन्यहूद का 'एक शब्द' लुप्त हो गया था। उस दिन उसके पास आकर बेन्यहूद ने कहा-"प्रिये! टिकट जितने आकार के छोटे पीले रंग के कागज पर लिखा मेरा 'वह शब्द' कहाँ गया....?"

अपने पसंदीदा खिलौने के न दीखने से दु:खी बच्चे के मुँह की तरह बेन्यहूद के मुख के भाव थे।

"नहीं। मैंने तो नहीं देखा"-उसने कहा।

"अच्छा, वैसा पीले रंग का कागज का टुकड़ा क्या तुमने देखा ही नहीं? मैं उसके लिए तीन घंटे से खोजबीन कर रहा हूँ।"

"नहीं। मैंने नहीं देखा। क्या था उस कागज के टुकड़े में?"

"एक शब्द। एक नया हीब्रू शब्द। अत्यंत विशिष्ट और महत्वपूर्ण था वह शब्द। यदि वह नहीं मिलेगा तो उसके लिए न जाने मुझे फिर से कितने महीनों तक ग्रंथों के बीच तपस्या करनी पड़ेगी। वह भी यहाँ अथवा विदेशों में स्थित पुस्तकालयों में। हजार वर्षों से नित्य व्यवहार से लुप्त शब्द था वह। अवश्य ही उसे फिर से दैनिक व्यवहार में लाना चाहिए।"

अंततः वह शब्द बेन्यहूद के पहने हुए कोट की किसी जेब में ही मिला।

उन दिनों बेन्यहूद का परिवार शब्दों के साथ ही जीवन--यापन कर रहा था। आर्थिक परिस्थिति अत्यंत शोचनीय थी इसलिए उनके अल्पाहार में कॉफी के साथ इन शब्दों के अलावा और कुछ नहीं होता था। रात के भोजन में भी मुट्ठी भर भोजन के साथ इन शब्दों के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता था।

उन्हीं दिनों एक प्राध्यापक बेन्यहूद के घर आया। वह उसके कार्यों से बहुत प्रभावित था। उसने उसकी बहुत प्रशंसा की। इस प्रकार के इतिहास बनाने वाले कार्य के लिए उसका अभिनंदन भी किया। जाते समय उसने बेन्यहूद से कहा-"आप जो--जो लिखते हो वह सब कुछ बड़े कागज में लिखो और पत्रों को व्यवस्थित रूप से फाइलों में रखो। मैं जानता हूँ कि आप जैसे व्यक्ति के लिए तो उस प्रकार का काम कष्टप्रद ही है फिर भी वैसा करने से आपका ही अधिक समय बचेगा....।"

बेन्यहूद ने उसकी बात को प्रसन्नता से स्वीकार किया। उसके बाद उसने शब्दकोश के काम के लिए थोड़े से वेतन पर दो सहायकों की भी नियुक्ति की। वे दोनों प्रतिदिन उसके द्वारा लिखे गए सभी कागजों की प्रतिलिपि बनाकर उन पत्रों को अकारादि क्रम से व्यवस्थित रखते थे। यद्यपि कुछ धन खर्च तो हो गया फिर भी उससे बेन्यहूद पहले की अपेक्षा दुगुना कार्य करने में समर्थ हो गया।

वर्णनातीत हानि

कुछ दिनों के बाद बेरन्-रोथ्स्चैल्ड का एक अन्य प्रतिनिधि बेन्यहूद के घर आया। बेन्यहूद के साथ लम्बे समय तक बातचीत करके वहाँ से पाशा महोदय के दर्शन के लिए गया। 'वृद्ध पाशा महोदय यदि सहमत हो जाते हैं तो कुछ भी करने में समर्थ हो सकते हैं।' यह जानते हुए बेन्यहूद ने उस गए हुए प्रतिनिधि के लौटने की प्रतीक्षा करते हुए अपना समय बिताया। लम्बे समय के बाद वह लौटा और समाचार सुनाया कि अन्य देशों से यहूदियों को रहने के लिए इजराइल में आने की अनुमति पाशा महोदय ने दे दी है। बेन्यहूद को याद आया कि पहले इस प्रकार की अनुमति नहीं थी इसलिए वह अपनी माँ को कितने कष्ट से आलू की बोरी में लाया था। आज के बाद वैसा कष्ट नहीं होगा, यह सोचकर वह बहुत प्रसन्न हो गया।

"इसके अलावा भी आनंद का एक और समाचार है...." प्रतिनिधि ने कहा।

"वह क्या?" - उत्सुकता से बेन्यहूद ने पूछा।

"डीर्-पत्रिका के पुनः प्रकाशन शुरू करने के विषय में भी अब उनको कोई आपत्ति नहीं है। आप जल्दी ही उसका आरंभ कर सकते हैं।"

"ऐसा? भगवान की कृपा है....।" बेन्यहूद अपनी प्रसन्नता को शब्दों में प्रकट नहीं कर पाया।

●●●●

पत्रिका-संपादन और प्रकाशन बेन्यहूद का प्रियतम कार्य था। इस समय उस कार्य को करने का फिर से अवसर प्राप्त हुआ था इसलिए वह दुगुने उत्साह से उस कार्य में मग्न हो गया। "अब पत्रिका का नया और आकर्षक रूप हो और उसमें नए स्तम्भ भी हों" ऐसा संकल्प करके उसने कार्य आरम्भ किया। हेम्डा का सहयोग तो था ही। पहले उसके द्वारा "जेरुसलेम से पत्र' इस प्रकार का स्तम्भ नियमित रूप से लिखा जा रहा था। अब तो 'वियेना से पत्र', 'पेरिस से पत्र' इत्यादि स्तम्भों को भी लिखना उसने शुरू कर दिया। उसका निवास तो जेरुसलेम में ही था किन्तु वियेना और पेरिस से भी वह पत्र लिखती थी। इसके

लिए उसने वियेना और पेरिस से प्रकाशित होने वाली अनेक पत्रिकाएँ मंगवाई। उसका प्रत्येक अक्षर पढ़कर उस-उस नगर की और वहाँ घटित होने वाली घटनाओं का पूर्ण परिचय प्राप्त करके वहाँ निवास करने वाले किसी व्यक्ति की तरह ही वह पत्र लिखती थी। दूसरे नाम से लिखे जाने के कारण बहुत सारे पाठक भ्रम में पड़ गए कि वियेना और पेरिस से ही कोई लेखिका इस प्रकार पत्र लिखती है। किसी प्रकार कुछ पाठक इस रहस्य को भी जान गए। फिर भी न जानने वालों की संख्या ही अधिक थी। कुछ भी हो, उन वर्षों में नियमित रूप से उस प्रकार के स्तम्भ लिखने से हेम्डा द्वारा हीब्रू भाषा में नए प्रकार का और अति उत्कृष्ट कुछ साहित्य सृजित हो गया। पाठकों ने भी अत्यंत उत्साह से डीर् पत्रिका के पुनः आगमन का स्वागत किया। पहले की तुलना में अधिक संख्या में ग्राहक भी पत्रिका को प्राप्त हो गए।

●●●●

समय बीतने के साथ बेन्यहूद और उसके सहयोगियों के प्रयत्नों का फल बहुत से स्थानों पर दिखाई देने लगा। इजराइल देश के कुछ नगरों में, विशेष रूप से जाफ्फा नगर में हीब्रू भाषियों की संख्या बढ़ रही थी। 1897 ईस्वी में तो प्राय: वहाँ के पचास प्रतिशत लोग हीब्रू भाषा में नित्य व्यवहार करते थे। अनेक विद्यालयों में भी इस समय अधिकारिक रूप से हीब्रू भाषा पढ़ाई जाती थी। इसके विपरीत बहुत से स्थानों पर हीब्रू भाषा का अध्यापन विदेशी भाषा के पाठन की तरह अन्य भाषा के माध्यम से किया जाता था। बेन्यहूद ने अनुरोध किया कि "मातृभाषा के रूप में अथवा प्रथम भाषा के रूप में हीब्रू भाषा के माध्यम से ही वह भाषा पढ़ाई जानी चाहिए।" इसके लिए उसने अभियान ही शुरू कर दिया। जो लोग उस तरह से अध्यापन करने में सफल हुए उनके विषय में प्रेरणादायक समाचार डीर् पत्रिका में बेन्यहूद ने प्रकाशित किये। उन समाचारों को पढ़कर प्रभावित हुए बहुत सारे शिक्षकों ने स्वयं भी उस प्रकार के प्रयोगों को शुरू कर दिया। धीरे-धीरे हीब्रू भाषा के माध्यम से हीब्रू को पढ़ाना सहज हो गया।

एक दिन मुद्रणालय से आकर घर में प्रविष्ट बेन्यहूद ने दरवाजे से ही पत्नी को बुलाया-"प्रिये, प्रिये....।"

उसके चेहरे पर अपूर्व चमक दिखाई दे रही थी। "क्या....?" ऐसा पूछती हुई बाहर आई हुई हेम्डा उसका मुख देखकर आश्चर्यचकित हो गई। अपने हाथ में ली हुई सुंदर कागज से ढँकी हुई एक पोटली हेम्डा को देते हुए उसने कहा-"खुद ही खोल कर देखो यह, क्या है....।"

आश्चर्य से खोलकर हेम्डा ने देखा। उसमें था बेन्यहूद के तब तक के परिश्रम का प्रतिफल, हीब्रू शब्दकोश का पहला भाग। बहुत समय तक संतानहीन कोई व्यक्ति अपनी प्रथम संतान को जितने आनंद और उत्साह से दिखाता है उसी प्रकार उस समय उस पुस्तक को बेन्यहूद दिखा रहा था। यद्यपि कम मूल्य के कागज के ऊपर अनाकर्षक रूप से वह कोश छपा हुआ था, किन्तु हेम्डा उसका महत्व जानती थी। बेन्यहूद ने ही कहा-''प्रिये! दो हजार वर्षों के बाद इस प्रकार का कोई कोश प्रकाशित किया गया है। आधुनिक जीवन में नित्य व्यवहार में हीब्रू भाषा का उपयोग करने के इच्छुक प्रत्येक व्यक्ति को इसकी सहायता लेनी होती है। इस प्रथम भाग के प्रकाशन से मैंने इतना तो जान लिया है कि इसके बाद मेरे द्वारा किए जाने वाले कार्य का मूल्य कितना अधिक होगा। रात-दिन मुझे कार्य करना होगा। फिर भी न जाने किस प्रकार यह कार्य समाप्त कर पाऊँगा....।''

''मैं कुछ उपाय बताऊँ क्या?'' - हेम्डा ने पूछा।

''क्यों नहीं, अवश्य बताओ....।''

''आप दूसरे सभी कामों को छोड़ दो। कोश निर्माण का कार्य ही करो।। अन्य कुछ नहीं....।''

''परन्तु पत्रिका का कार्य तो है ही मेरे लिए....।''

''उस जिम्मेदारी को मैं वहन करूँगी। आप कभी-कभी पत्रिका के लिए कोई लेख लिख देना। भाषा से सम्बन्धित स्तम्भ तो नियमित रूप से लिखो ही, बाकी सब कुछ मैं देख लूँगी।''

पत्नी की सामर्थ्य के विषय में अब तक पूरी तरह से बेन्यहूद जान चुका था। उसने प्रसन्नता से उस प्रस्ताव को स्वीकार किया। उसके बाद हेम्डा ही अधिकृत रूप से डीर् पत्रिका की संपादिका हो गई। उस रात को उसने ऊपर के कमरे से अपनी पेटी को उतारा। उसमें महाविद्यालय में उसके द्वारा पढ़ी गई रसायनशास्त्र से सम्बन्धित पुस्तकें थीं। यद्यपि वह उसका प्रिय विषय था फिर भी उसने उन पुस्तकों को बिना किसी मोह के आग में जला दिया और मन में कहा- ''आज के बाद मेरा एक ही विषय होगा - हीब्रू भाषा।''

●●●●

हेम्डा को पुत्र हुआ। पिता का ही अनुसरण करते हुए हेम्डा ने उसे 'एहूद' नाम से बुलाया। परंतु एहूद एक वर्ष भी जीवित नहीं रहा। न्यूमोनिया रोग से ग्रस्त होकर उसने प्राण त्याग दिए। बेन्यहूद अब तक मृत्यु के प्रसंग से अत्यंत परिचित हो चुका था परंतु हेम्डा के लिए यह नया अनुभव था। बेन्यहूद ने किसी

तरह उसको सांत्वना दी। उसका दु:ख भुलाने के लिए हेम्डा को वह विभिन्न स्थानों पर ले गया, जहाँ हीब्रू प्रचार का कार्य ठीक से चल रहा था। वहाँ बहुत सारे लोगों से मिलकर उनके साथ बातचीत करते हुए वह अपना दु:ख धीरे-धीरे भूल गई।

●●●●

हेम्डा के पिता योनस तब से यहीं निवास करते थे। पुत्री और दामाद को देखने के लिए रूस देश के ग्लुबोकिया नगर से यहाँ आने के बाद वह दामाद बेन्यहूद के काम से प्रभावित होकर उसकी सहायता करने के लिए इतने लंबे समय से यहाँ रुका हुआ था। इस समय वह सोच रहा था कि कुछ साल पेरिस नगर में रहे। उसने इसके लिए बेन्यहूद और हेम्डा से अनुमति माँगी। यद्यपि उन दोनों को यह पूरी तरह स्वीकार नहीं था फिर भी योनस अपने निर्णय पर अटल था। इसलिए उसने वहाँ से प्रस्थान कर ही दिया। जाफ्फा नगर जाकर वहाँ से नाव द्वारा उसे आगे की यात्रा करनी थी। परन्तु जब वह जाफ्फानगर पहुँचा तब तक वह नाव वहाँ से जा चुकी थी। दूसरी नाव पन्द्रह दिन के बाद ही थी। इसलिए योनस जाफ्फा में ही रुक गया। परंतु वहाँ वह किसी भयंकर रोग से पीड़ित हो गया। जाफ्फा नगर के पास स्थित 'रिषन् ले झियोन्' नामक नगर में योनस के पुराने बहुत सारे मित्र थे। इसलिए योनस इलाज के लिए वहाँ गया। तब तक उसका रोग इतना बढ़ गया था कि हर प्रकार की चिकित्सा विफल हो गई। वहीं उसने प्राण त्याग दिए।

यह वही ग्लुबोकिया नगर का सुप्रसिद्ध उद्योगपति योनस था जिसने अनाथ बालक एलिसर को अपने पुत्र की तरह पाला था। उसके मन में हीब्रू भाषा के प्रति प्रेम का जागरण उसी ने किया था। एलिसर के जीवन की दिशा बदलने में यही कारण था। और क्या कहा जाये, एक के बाद एक अपनी दो पुत्रियों को उसने उसके लिए समर्पित किया था। न केवल इतना बल्कि अंत में खुद भी दामाद के पास जाकर वहीं रहकर उसके आन्दोलन में विनीत कार्यकर्ता की तरह सहयोगी बना। इसलिए योनस की मृत्यु हो जाने से हेम्डा और बेन्यहूद को जो हानि हुई वह वर्णानातीत ही थी।

नहीं है यह सपना, यदि आप चाहें

इजराइल जांगविल् उस समय का सुप्रसिद्ध लेखक था। वह लंदन नगर में रहता था। उसके द्वारा लिखे गए प्रत्येक लेख अथवा पुस्तक अनेक देशों में लाखों लोग अत्यधिक श्रद्धा से पढ़ते थे। बेन्यहूद को ज्ञात हुआ कि जांगविल् किसी प्रतिनिधि मण्डल के साथ जेरुसलेम आने वाला है। तुरंत उसके मन में एक विचार उत्पन्न हुआ। यदि यह महानुभाव हीब्रू-आंदोलन से प्रभावित हो जाएँ तो....! वे इस विषय में शायद लेख लिख सकते हैं। शायद कोई पुस्तक भी लिख सकते हैं। किसी भी तरह उसे अपने साथ जोड़ना चाहिए।

बेन्यहूद ने पत्र द्वारा जांगविल् से निवेदन किया कि ''जेरुसलेम में रहने के अवसर पर समय निकाल कर एक बार मेरे घर आकर थोड़ा सा आतिथ्य स्वीकार करें।'' और आश्चर्य! जांगविल ने बेन्यहूद के उस निमंत्रण को स्वीकार कर लिया। कुछ दिनों के बाद वह जेरुसलेम आया भी। नगर के प्रमुख यहूदी नेताओं और वहाँ रहने वाले दूसरे ब्रिटिश लोगों ने उसके स्वागत में कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम के बाद जांगविल सीधा बेन्यहूद के घर आया। बेन्यहूद के परिवार ने स्नेह भाव से उस महान् लेखक का स्वागत किया। चार साल की डेबोरा ने उसे गुलाब के सुन्दर फूल दिए। वात्सल्य भाव से उसकी ठोड़ी छूकर जांगविल ने अंग्रेजी में पूछा-''बेटी! तुम्हारा नाम क्या है?''

डेबोरा ने कोई उत्तर नहीं दिया। जांगविल ने यिड्डिष भाषा में वही प्रश्न पूछा। इस पर भी डेबोरा ने कुछ नहीं बोला। ''महोदय! वह हीब्रू भाषा के अलावा कोई दूसरी भाषा नहीं जानती है। उसकी मातृभाषा ही हीब्रू है।'' – पति-पत्नी ने कहा।

''क्या यह सत्य है....? क्या ऐसा भी हो सकता है....!!'' आश्चर्यचकित होकर जांगविल ने कहा। कभी पहले उसने थोड़ी मात्रा में हीब्रू भाषा पढ़ी थी परंतु कभी उसने उस भाषा में सम्भाषण नहीं किया था। फिर भी एक-एक शब्द का स्मरण करते हुए उसने हीब्रू भाषा में कुछ वाक्य कहे। अंग्रेजी-उच्चारण शैली में वे हीब्रू वाक्य उच्चारित किए गए थे फिर भी कुछ शब्दों को समझकर डेबोरा ने प्रत्युत्तर दिया। जांगविल बहुत संतुष्ट हुआ।

उस दिन के बाद जांगविल अनेक बार उसके घर आया। बेन्यहूद के साथ उसकी प्रगाढ़ मित्रता हो गई। दोनों के बीच जब-तब विस्तार से विचारों का आदान-प्रदान हुआ। एक दिन बेन्यहूद ने उससे निवेदन किया कि जेरुसलेम नगर में रहने वाले लोगों को लक्ष्य करके उसको उद्बोधन करना चाहिए। जांगविल ने स्वीकार कर लिया। बेन्यहूद ने शीघ्रता से कार्यक्रम आयोजित किया। नगर के सुप्रसिद्ध 'न्यू ग्रांड' होटल में होने वाले उस कार्यक्रम में न केवल यहूदी नेता अपितु अनेक मुस्लिम नेता और क्रिश्चियन समाज के गणमान्य लोग उपस्थित थे। "पवित्र भूमि में यहूदी" विषय पर जांगविल ने उस दिन विस्तार से उद्बोधन किया। विभिन्न देशों में वहाँ के देशवासियों द्वारा यहूदी लोग किस प्रकार छले गए फिर भी उन्होंने कैसे अपनी संस्कृति की रक्षा की, ऐसा उसने वर्णन किया। उसके उस ऐतिहासिक भाषण ने सभी लोगों में महान् प्रभाव पैदा किया।

कुछ दिनों के बाद जब जांगविल जेरुसलेम से लौटने लगा तब उसकी आँखों के कोनों में आँसू की बूँदें दिखाई दीं। उसे विदा करके लौटे हुए बेन्यहूद ने पत्नी से कहा-"मुझे लगता है इस महानुभाव को हमने जीत लिया है।"

"मैं भी वैसा ही सोचती हूँ" हेम्डा ने कहा। डीर् पत्रिका के आगामी अंक में प्रधान विषय था, 'जांगविल का जेरुसलेम प्रवास'। उसके भाषण का सारांश भी उसमें प्रकाशित किया गया था। बहुत सारे लोग उस लेख को पढ़कर बहुत प्रभावित हुए।

थियोड्र हर्ल नामक एक हंगेरियन लेखक और नाटककार इस आन्दोलन के विषय में बहुत रुचि रखता था। बेन्यहूद के बहुत सारे विचारों के सत्रह वर्षों के प्रकाशन के बाद 1896 में उसने 'यहूदीराज्य' नाम से पुस्तक प्रकाशित की। पहले यद्यपि उसी लेखक ने "संसार के अन्य देशों में निवास करने वाले यहूदियों को अपनी मातृभूमि जाकर वहाँ रहना चाहिए" बेन्यहूद के इस प्रकार के विचारों को अव्यावहारिक मानकर मजाक उड़ाया था। परन्तु अब उसने बेन्यहूद के विचारों को स्वीकार करते हुए सभी यहूदियों को उसी प्रकार करना चाहिए, ऐसा अनुरोध किया। यहूदियों का ही पृथक् राज्य बनाने के सम्बन्ध में विदेशों में रहने वाले यहूदियों को प्रेरणा देने के लिए उसके द्वारा दिया गया एक ध्येय-वाक्य कालान्तर में विश्व-प्रसिद्ध हुआ। वह वाक्य था-"नहीं है यह सपना, यदि आप चाहें", उसी ध्येय-वाक्य को बोलते हुए असंख्य यहूदी अपने राज्य के निर्माण का सपना देखते हुए कार्यक्षेत्र में उतर गए और अंत में प्रतिष्ठित भी हो गए।

थियोड्र हर्ल और उसके समान चिंतक कुछ दूसरे लोगों ने मिलकर 1897 ईस्वी में स्विट्जरलैंड देश में बासेल् नगर में विश्व यहूदी सम्मेलन करने का निश्चय किया। वहाँ अवश्य जाना चाहिए, सभी विचार सत्रों में भाग लेना चाहिए, ऐसी बेन्यहूद की इच्छा थी। परंतु दो कारणों से उसने वहाँ नहीं जाना तय किया : एक तो उसकी दुर्बल आर्थिक स्थिति और दूसरा अभी-अभी कारागार से बाहर आने के बाद उसे देश से बाहर जाने की अनुमति तुर्की शासन ने नहीं दी थी। इसलिए दूर से ही सम्मेलन की प्रसिद्धि और सफलता के लिए उसने भगवान् से प्रार्थना की।

विश्व यहूदी सम्मेलन अत्यंत सफल हुआ। यहूदी समुदाय के बड़े-बड़े नेताओं ने सम्मेलन के मंच से सभी यहूदी भाइयों का आह्वान किया "हम सभी यहूदियों का एक ही गन्तव्य है : इजराइल। यहूदी धर्म फिर से परिपूर्ण रूप से उसी मातृभूमि में विकसित हो।" उसी अवसर पर विश्व यहूदी संघ की भी स्थापना की गई। विश्व के किसी भी कोने में निवास करने वाला यहूदी बहुत कम सदस्यता शुल्क देकर उस संघ की सदस्यता प्राप्त कर सकता था। थियोडर् हर्ल को ही संघ के अध्यक्ष के रूप में चुन लिया गया। ऐसा निर्णय भी हुआ कि लंदन नगर में स्थित किसी बैंक में यहूदी राष्ट्रीय निधि की शुरुआत करनी चाहिए।

जिस राष्ट्र का अभी औपचारिक रूप से उदय ही नहीं हुआ था उस यहूदी राष्ट्र के लिए हीब्रू भाषा में लिखे हुए एक राष्ट्रगीत को स्वीकार कर लिया गया।

जेरुसलेम नगर में रहकर भी विश्व सम्मेलन के सारे समाचार जानकर बेन्यहूद बहुत प्रसन्न हुआ। उसके संतोष का एक और कारण भी था "कार्यकारी समिति के सदस्य के रूप में डीर् पत्रिका के सम्पादक को निर्विरोध चुना गया है" ऐसा हर्ल् महोदय ने ही पत्र द्वारा उसे सूचित किया था। परंतु बेन्यहूद इस कारण तो बहुत विस्मित और निराश हुआ कि सम्मेलन में भविष्यकालीन यहूदी राष्ट्र का राष्ट्रगीत, राष्ट्रध्वज इत्यादि अनेक विषयों पर चिंतन और निर्णय किया गया था परंतु वहाँ की राष्ट्रभाषा के विषय में कोई उल्लेख ही नहीं किया गया था। पहले की घटनाओं के समान ही बेन्यहूद ने पत्नी के सामने अपने असंतोष को प्रकट किया। उसने भी उसी प्रकार उसे सांत्वना दी।

उन्हीं दिनों बेन्यहूद ने विश्व के विभिन्न भागों में निवास करने वाले यहूदियों को आह्वान करते हुए दूसरा ऐतिहासिक लेख लिखा। जब पहला निवेदन किया था तब उसने विशेष रूप से संप्रदायवादी यहूदियों को ही ध्यान में रखकर उनके समान लोगों को इजराइल देश में वापस आने के लिए लिखा था। अब तो

उसकी दृष्टि और भी अधिक व्यापक हो गई थी। इसलिए उसने लिखा – ''विदेशों में रहने वाले सभी यहूदी परिवार अपनी मातृभूमि को लौटो। विदेशों में रहने वाले यहूदी भी यहूदी हैं। उनके द्वारा विवाहित महिलाएँ यद्यपि उस देश की और वहाँ के मतों को मानने वाली होंगी, फिर भी वे महिलाएँ यहूदी ही हैं। न केवल इतना, उनसे उत्पन्न बच्चे, और अधिक क्या कहा जाये, आने वाली परम्परा यहूदी परम्परा ही है ऐसा हमारा निर्णय है। इसलिए उस प्रकार के भी सभी लोग अपनी मातृभूमि इजराइल में वापस लौटें।''

पुनः प्राप्त हुआ नया उत्साह

बासेल् सम्मेलन के ऐसे भी कुछ परिणाम हुए जिन्होंने बेन्यहूद के वैयक्तिक जीवन में भी परिवर्तन किया। इंग्लैंड देश में यहूदियों के कल्याण और विकास के लिए कार्यरत एक संस्था ने उस सम्मेलन के बाद बेन्यहूद द्वारा किए जा रहे आन्दोलन के काम को जानकर उसके काम में सहायता करने की इच्छा से पांच हजार फ्रेंक की धनराशि भेजी। ''इस धन को स्वेच्छा से खर्च करने का आपको पूरा अधिकार है'', ऐसा भी उस संस्था द्वारा सूचित किया गया था।

उस धन का अच्छा उपयोग करना चाहिए, ऐसा बेन्यहूद ने निश्चित किया। इन दिनों उसके ऊपर बहुत ऋण था। कभी-कभी तो एक ऋण को चुकाने के लिए उसने दूसरा ऋण भी लिया था। यह उधारी हमेशा उसमें संकोच पैदा करती थी। इसलिए उसने अधिकांश धन का विनियोग ऋण चुकाने में ही किया। इसके बाद अपने मुद्रणालय के नवीनीकरण के लिए और वहाँ लोहे के नए अक्षरों को खरीदने के लिए कुछ धन का उपयोग किया। आने वाले दिनों में पत्रिका और भी आकर्षक रूप में प्रकाशित की जानी चाहिए, ऐसी उसकी योजना थी। अंत में बचे हुए धन से बेन्यहूद ने एक सुंदर घर खरीदा। उस घर को पत्नी को देते हुए उसने कहा – ''प्रिये! आज तक अतीव सामान्य घर में तुमने दिन बिताए हैं। परंतु यह है हमारे सपनों का घर। आज के बाद हम भी दूसरे मनुष्यों की तरह ही जीवन-यापन करेंगे। इस घर में न केवल बगीचा है, अपितु स्नानगृह भी है।''

(उन दिनों उस देश में घरों में पृथक रूप से स्नानघर नहीं होते थे। केवल बड़ी धर्मशालाओं में स्नानघर होते थे)

''बेन्यहूद के घर में स्नानघर है'' यह एक बड़ी विशेष बात थी। इसलिए नगर के दर्शनीय स्थलों को देखने के लिए आए हुए पर्यटक कभी-कभी बेन्यहूद का स्नानघर भी देखने के लिए आते थे। ''जेरुसलेम नगर के परिवारों में सबसे पहला स्नानगृह है यह'' ऐसा हेम्डा अभिमान से बोलती थी।

●●●●

कुछ महीने उन्होंने सुख से बिताए। एक दिन हेम्डा बीमार हो गई। डॉक्टर से मिलने के बाद ज्ञात हुआ कि उसे मलेरिया हो गया है। दिन बीतने के साथ दुर्बल होती जा रही हेम्डा को देखकर डॉक्टर ने बेन्यहूद से कहा – "यदि यह कुछ महीने यूरोपीय देशों में रहेगी तभी इसके स्वस्थ होने की संभावना है।" बेन्यहूद ने पहले से निश्चित किए हुए सभी कार्यक्रमों को छोड़कर जल्दी से पेरिस जाने के लिए आरक्षण कराया और अगले सप्ताह में ही उसके साथ पेरिस नगर चला गया।

पेरिस में उन दोनों ने दो महीने बिताए। वहाँ बेन्यहूद ने पुस्तकालयों में अध्ययन किया और बहुत सारे प्रसिद्ध चिंतकों से मिलकर उनके साथ हीब्रू आन्दोलन के विषय में विचार-विमर्श किया। बेरन् रोथस्चैल्ड से भी एक दिन वह मिला जिसने पहले आंदोलन के लिए धन की बहुत सहायता की थी। जब वे दोनों मिले तब उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए बेन्यहूद ने कहा – "आपने मेरा बहुत उपकार किया है।" परंतु बेरन् रोथस्चैल्ड ने कहा – "ऐसा....? मैं आपसे कभी नहीं मिला फिर कैसे मैंने आपका उपकार किया है....?"

"श्रीमान! आपने मेरे कार्य के लिए बहुत बड़ी धनराशि प्रदान की है" ऐसा बोलते हुए बेन्यहूद ने याद दिलाया। फिर भी रोथस्चैल्ड ने अपने द्वारा किए हुए उपकार को महान् नहीं माना।

"ठीक है, अपना कार्य आगे बढ़ाओ। परंतु फिर से समस्या में मत पड़ना।" ऐसा कहकर उसने बेन्यहूद से विदा ली। अत्यंत धनवान उस व्यक्ति के इस प्रकार के स्वभाव से बेन्यहूद बहुत प्रभावित हुआ।

पेरिस के बाद वे दोनों लंदन गए। वहाँ इस्राइल्-जांगविल उन दोनों से विशेष रूप से मिला। वह पहले जेरुसलेम आकर बेन्यहूद के परिवार का अतिथि-सत्कार प्राप्त कर चुका था। जांगविल से मिलना सफल हुआ। उसने बेन्यहूद के काम में सहायता करना स्वीकार किया। लंदन में भी बेन्यहूद ने अपना अध्ययन जारी रखा। विशेष रूप से 'ब्रिटिश म्यूजियम' में उसने अत्यधिक अध्ययन किया। उस नगर में भी वे दोनों दो महीने तक रहे। तब तक बेन्यहूद ने बहुत से विद्वानों और चिंतकों का परिचय और आत्मीयता प्राप्त कर ली थी।

लंदन से वे दोनों फिर पेरिस आ गए। वहाँ वे दोनों एक महीने तक रहे। अब तक हेम्डा के स्वास्थ्य में बहुत प्रगति हो गई थी। संसार के अत्यंत आकर्षक नगर पेरिस ने धीरे-धीरे हेम्डा को भी इस प्रकार आकर्षित किया कि वहाँ से लौटने की उसकी इच्छा ही नहीं हुई। अंततः कर्तव्य का स्मरण करते हुए

वह पति के साथ चल दी। पांच महीनों बाद जब वे दोनों जेरुसलेम नगर लौटे तब तक हेम्डा पहले की तरह स्वस्थ हो गई थी। उस प्रवास के कारण पति-पत्नी का कार्य करने का उत्साह भी बढ़ गया था।

हेम्डा ने बेन्यहूद के निर्देश के अनुसार अपने संपादन में नई पत्रिका शुरू करने के लिए शासन से अनुमति हेतु आवेदन किया। शासकीय अधिकारी आवेदन-पत्र को देखकर ही आश्चर्यचकित हो गए और बोले - ''महिला के संपादन में पत्रिका का प्रकाशन....? यह तो पहले कभी नहीं सुना।''

''नहीं, वैसा नहीं है। इस समय भी कान्स्टांटिनोपल से प्रकाशित होने वाली एक पत्रिका का संपादन एक महिला ही करती है'' इस विषय में जब हेम्डा ने प्रमाण दिखाया तब उन्होंने पुनः पूछा - ''ठीक है। आपकी क्या उम्र है?''

''छब्बीस वर्ष....'' - हेम्डा ने कहा।

''तब तो यह बिल्कुल असम्भव है। तीस साल से कम उम्र के किसी भी व्यक्ति को पत्रिका - प्रकाशन की अनुमति बिल्कुल नहीं दी जाती है'' ऐसा उन्होंने कहा। परंतु हेम्डा के अत्यधिक अनुरोध को देखकर उनमें से एक ने कहा - ''यदि आपकी आयु तीस वर्ष है ऐसा प्रमाण दिखा दो तो कुछ कर सकते हैं....।''

कोई रास्ता तो पता चला ऐसा, सोचती हुई हेम्डा वहाँ से चली आई। उसके बाद विभिन्न स्त्रोतों से प्रयत्न करके किसी भी तरह से उस प्रकार का आयु का प्रमाण-पत्र उसने प्राप्त किया जिसमें यह दिखाया गया था कि वह इस समय तीस वर्ष की है। इसके लिए उसे बहुत रिश्वत भी देनी पड़ी। इसके बाद ही उसका आवेदन-पत्र परिशीलन के लिए स्वीकृत हुआ।

इन्हीं दिनों बेन्यहूद का स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया। उसी स्थिति में वह कान्स्टांटिनोपल शहर गया। वहाँ उसका स्वास्थ्य और भी बिगड़ गया। खाँसी के साथ वह खून की उल्टी करता था। इलाज के लिए लम्बे समय तक उसे वहीं रुकना पड़ा, किंतु फिर भी उसने वरिष्ठ तुर्की अधिकारियों के साथ बात-चीत करते हुए इजराइल देश को स्वतंत्रता देने के विषय में उनकी स्वीकृति प्राप्त करने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रयत्न किए। परंतु उसमें उसे सफलता नहीं मिली। बेन्यहूद की अनुपस्थिति में ही हेम्डा ने अपने चौथे बच्चे को जन्म दिया। उस पुत्री का नाम 'अदा' रखा गया।

अत्यधिक प्रयत्न करके बेन्यहूद थियोड्र हर्ल से मिला। उन दोनों ने लम्बे समय तक विचारों का आदान-प्रदान किया। हर्ल भी इजराइल देश की

स्वतन्त्रता के विषय में उसी प्रकार प्रयत्नशील था जैसे बेन्यहूद परंतु हीब्रू भाषा को राष्ट्र-भाषा बनाने में उसकी पूरी सहमति नहीं थी। ''सभी यहूदी इजराइल देश जाएँ, वहीं निवास करें। तीस या चालीस सालों बाद आगामी पीढ़ी में निर्णय किया जाये कि वहाँ व्यवहार की भाषा या राष्ट्रभाषा क्या होगी। इस विषय में अभी आग्रह करना उचित नहीं है'' ऐसा उसका मत था। परंतु बेन्यहूद का तो हीब्रू भाषा के विषय में अत्यधिक आग्रह था। उस भाषा को नित्य व्यवहार में पुनः लाने से ही सारे लक्ष्यों की सिद्धि होगी, ऐसा उसका अटल विश्वास था। लम्बे विचार-विमर्श के बाद उन लोगों की ओर से निराश होकर बेन्यहूद जेरुसलेम नगर लौट आया।

शब्दों का सृष्टा

निराश होकर लौटे हुए पति का स्वागत करते हुए हेम्डा ने उसे आनन्दप्रद समाचार सुनाया–''प्रिय! इस समय तो आपके द्वारा अभिनंदन करने के योग्य हूँ मैं ....।''

''वह किसलिए?''–उसने पूछा।

''आपका दूसरा सपना जल्दी ही साकार हो जाएगा। तुर्की सरकार से मुझे पत्रिका संपादन के लिए अनुमति मिल गई है।''

'' ऐसा ....? इस पर तो विश्वास ही नहीं हो रहा। कैसे भी हो। बधाई स्वीकार करो संपादिका महोदया ....।'' उसने हार्दिक अभिनंदन किया और उसके बाद कहा–''तो हमें शीघ्र ही पत्रिका आरंभ करनी चाहिए। यह पत्रिका तो डीर्–पत्रिका की तुलना में अधिक आकर्षक होनी चाहिए। प्रत्येक यहूदी महिला इस पत्रिका को खरीद कर पढ़े।''

इस प्रकार हेम्डा के संपादकत्व में 'हश्काफा' नाम की पत्रिका शुरू हो गई। इस पत्रिका में न केवल हीब्रू भाषा अपितु फ्रेंच, जर्मन और अरबी भाषा के स्तंभ भी थे। जिस दिन बाजार में पत्रिका दिखाई दी। उस दिन नगर में चारों ओर यही चर्चा थी। लोगों ने उत्साह से पत्रिका को खरीदकर पढ़ा। पढ़ने के साथ ही पत्रिका के विषयों के आधार पर अपने अनुभवों को प्रकट भी किया।

●●●●

बेन्यहूद ने एक दिन अपने पुत्र बेन्झियोन से कहा–''बेटा! मैं सोचता हूँ कि यदि तुम कुछ समय के लिए पेरिस शहर में रहकर पढ़ोगे तो अच्छा होगा..।''

''नहीं पिताजी! मेरा विचार है कि मैं जेरुसलेम नगर में चर्मकार या लुहार के रूप में जीवनयापन करुँ! मैं तो इस विषय में बिल्कुल इच्छुक नहीं हूँ।''

परंतु बेन्यहूद ने उसे मनाने के लिए प्रयत्न किया–''बेटा! तुम हो संसार के सबसे पहले हीब्रू भाषा बोलने वाले शिशु। तुम्हें उसी प्रकार बड़ा करते हुए मैंने एक प्रयोग शुरू किया है। वह प्रयोग मुझे अंत तक ले जाना है। इसलिए तुम्हारा सहयोग आवश्यक है। तुम पेरिस नगर जाकर वहाँ अध्ययन पूर्ण करके

आओ। आगे हीब्रू भाषा के आन्दोलन में तुम्हें बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। पेरिस में रहने से तुम्हारी दृष्टि विस्तृत होगी, जिससे कालांतर में मातृभूमि की सेवा में बहुत बड़ा योगदान करने में तुम समर्थ हो सकोगे।''

अंत में बेन्झियोन ने पिता की आज्ञा को मान लिया। बेन्यहूद ने उसे पेरिस नगर भेज दिया।

बेन्झियोन की अनुपस्थिति में बेन्यहूद पुत्री डेबोरा से बहुत स्नेह करता था और समय मिलने पर उसके साथ खेलता था। 'अदा' जब दो साल की थी तब हेम्डा ने तीसरी पुत्री को जन्म दिया। डेबोरा की पुत्री का स्मरण करते हुए बेन्यहूद ने उसका भी नाम 'श्लोमिट्' ही रखा। उसके छ: माह के बाद बेन्यहूद के घर में न्यूमोनिया का प्रकोप हुआ। उससे पीड़ित सात वर्षीय डेबोरा किसी प्रकार भी मुक्ति पाने में समर्थ नहीं हो सकी। माता-पिता की नियमपूर्वक देखभाल के बावजूद भी एक रात उसने अपने प्राणों को त्याग दिया। अपने बगीचे के कोने में उसके शरीर को दफना कर लौटे हुए पति-पत्नी लंबे समय तक किंकर्तव्यविमूढ़ रहें।

●●●●

1901 ईस्वी में बेन्यहूद ने एक दिन दैनन्दिनी (कैलेण्डर) को देखते हुए पत्नी से कहा- ''प्रिये! जानती हो? जेरुसलेम नगर में आए हुए मुझको बीस वर्ष हो गए।''

इन बीस वर्षों में उसने महान् उपलब्धि प्राप्त की थी। डॉक्टर के द्वारा बीमार घोषित किए जाने के बाद भी उसने दस बच्चों का पितृत्व प्राप्त किया था। यद्यपि उनमें से पाँच बच्चे मर चुके थे फिर भी पाँच जीवित थे। हीब्रू भाषा बोलने वालों की संख्या भी बढ़ गई थी। हीब्रू पत्रिका भी जो उसने शुरू की थी अभी तक उसका अस्तिव था। बेन्यहूद ने सोचा कि जब तक जीवित हूँ तब तक शब्दकोश निर्माण का कार्य पूरा करना चाहिए। उस दिन से उसकी दिनचर्या और भी अधिक कठिन हो गई। वह दिन का अधिकांश समय अध्ययन कक्ष में ही रहता था। नए शब्दों के निर्माण के लिए अन्य भाषाओं की भी सहायता लेनी चाहिए यह वह जान गया था। इसलिए उसने अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, रूसी और हीब्रू भाषा के साथ अरबी, क्रोएटिक, असीरियन् और इथियोपियन् भाषाओं का भी अध्ययन किया। उन भाषाओं से व्यावहारिक शब्दों का चयन करके उनमें हीब्रू प्रत्यय लगा कर उन्हें हीब्रू शब्द बनाकर शब्दकोश में जोड़ दिया। अत्याधुनिक समय में भी हीब्रू भाषा कभी शब्दों के अभाव का अनुभव न करे यही उसकी इच्छा थी। इसलिए वह वास्तविक रूप में 'शब्दों का सृष्टा' ही हो

गया था। हजार से ज्यादा नए हीब्रू शब्दों की रचना उसने की। जैसे-जैसे नए शब्दों की रचना होती थी वैसे वैसे बेन्यहूद उन्हें पत्रिका में प्रकाशित करता जाता था। साथ ही बच्चों को प्रेरित करता था कि वे बाजार में और रास्तों में लोगों के साथ बातचीत के समय उन नए शब्दों को प्रयोग में लाएँ। इससे शीघ्र ही उस विषय में लोगों की प्रतिक्रिया ज्ञात हो जाती थी। निर्माण किए हुए नए शब्द का प्रचार इस प्रकार होता था। फिर भी बेन्यहूद कभी ऐसा नहीं सोचता था कि शीघ्रता में बिना सोचे ही कोई शब्द बना दिया जाए। अच्छी तरह से विचार करके ही वह शब्दों का निर्माण करता था।

एक दिन कुछ इस प्रकार घटित हुआ कि बेन्यहूद का एक मित्र किसी अत्यंत धनिक यहूदी उद्योगपति ने मिला। बेन्यहूद द्वारा शुरू किए गए शब्दकोश निर्माण के काम का विवरण देते हुए उसके लिए आर्थिक सहायता करो, ऐसा उस मित्र ने धनिक से कहा। धनिक ने शब्दकोश के कार्य में विशेष रुचि दिखाते हुए कहा- "तो अपने मित्र से कहो कि मुझे 'क्रीड़ा' के लिए उचित हीब्रू शब्द की शीघ्र आवश्यकता है। वह यदि मुझे उस शब्द को बता दे तो मैं निश्चित रूप से उसे कुछ धनराशि दूँगा।" उस मित्र ने बेन्यहूद को यह बताया। इस समय प्रयत्न करके भी बेन्यहूद को उसके लिए उचित हीब्रू शब्द नहीं मिला। शीघ्रता में किसी भी शब्द का निर्माण करके उससे धनराशि प्राप्त करने में वह असमर्थ ही रहा। परंतु यह तो उसका लक्ष्य ही नहीं था। "मेरे द्वारा रचित शब्द ऐसा उत्तम हो कि भविष्य में कोई भी उस विषय में दोषारोपण न करे" ऐसी उसकी दृढ़ इच्छा थी। इसलिए वह धन के लालच से भी वशीभूत नहीं हुआ। इससे यद्यपि वह धन प्राप्त करने से वंचित हो गया फिर भी उसने किसी खेद का अनुभव नहीं किया। बाद में एक दिन क्रीड़ा अर्थ के लिए नया और उचित 'मिलाब' शब्द का निर्माण करके उसने उसे शब्दकोश में जोड़ा। इस प्रकरण को याद करते हुए वह कहता था कि यही मेरे कोश में अत्यधिक 'मूल्यवान्' शब्द है।

कालान्तर में बेन्यहूद ने जेरुसलेम में रहने वाले कुछ विद्वानों की एक समिति बनाई। निर्माण किए हुए शब्दों का परिशीलन करके वह समिति निर्णय करती थी कि वे शब्द योग्य हैं या अयोग्य। प्रति सप्ताह उस समिति की बैठक होती थी और उस सप्ताह में निर्मित किए हुए शब्दों का परिशीलन किया जाता था। उस समिति द्वारा स्वीकृत किए गए शब्द ही व्यवहार में लाये जाते थे। परंतु एक दिन इस समिति के विषय में भी आक्षेप सुने गए। "क्या समिति में जेरुसलेम नगर में रहने वाले विद्वान ही होने चाहिए? क्या वे ही बृहस्पति हैं....?" देश के अन्य भागों

में निवास करने वाले विद्वानों का उसमें प्रतिनिधित्व क्यों न हो ....?'' बेन्यहूद ने सभी को संतुष्ट करने का प्रयत्न भी किया।

●●●●

दिन बीतने के साथ बेन्यहूद के घर का वह अध्ययन प्रकोष्ठ निर्माण किए जाने वाले नए शब्दों से भर गया। वह प्रत्येक शब्द अलग कागज में लिखकर रखता था। उस प्रकार के पत्रों से कुछ लकड़ी की पेटियाँ भर गई थीं। एक दिन बेन्यहूद के किसी बढ़ई मित्र ने यह देखकर कहा– ''मित्र! कोई छोटी सी आग की चिंगारी, इतने वर्षों की तपस्या के फलस्वरूप प्राप्त तुम्हारे इस भण्डार को जला सकती है।'' उसके बाद उसने स्वयं ही कुछ लोहे की पेटियाँ खरीद कर उसे दीं। उन पेटियों में वे पत्र व्यवस्थित रूप में रखे गए।

शब्दाकोश के प्रकाशन के लिए धन की अत्यधिक आवश्यकता थी। इस कार्य हेतु ऋण–प्राप्ति के लिए बेन्यहूद ने प्रयत्न शुरू किए। एंग्लो–पैलेस्टीन् बैंक के अधिकारी उसकी प्रार्थना स्वीकार करके उससे बात–चीत के लिए आये। परंतु वहाँ फैले कागज के टुकड़ों को देखकर वे बोले कि उसके लिए ऋण देना असंभव है। बार–बार प्रार्थना करने पर उन्होंने अत्यंत कम ऋण देने की सहमति दी।

एक दिन सुबह हेम्डा ने देखा कि घर के दरवाजे पर बेन्झियोन खड़ा है। ''क्या हुआ बेटा? तुम तो अध्ययन के लिए पेरिस नगर गए थे, तुम यहाँ कैसे आ गए?''–उसने पूछा।

पूछताछ से मालूम हुआ कि बेन्झियोन दूसरे छात्रों के साथ मिलकर विद्यालय में होने वाली हड़ताल में भाग लेने के कारण विद्यालय से निष्कासित होकर आ गया है।

''बेटा! तुमने अच्छा नहीं किया। इसके बाद क्या करोगे?'' हेम्डा ने कहा। परंतु बेन्झियोन के मन में लेश मात्र भी पश्चात्ताप नहीं था। वह उसके बाद सीधे जाफ्फा नगर गया। बच्चों को घर पर पढ़ाते हुए भी जीवित रहा जा सकता है, ऐसा उस तरुण के मन में विचार आया। उन दिनों विशेष चिकित्सा के लिए बर्लिन नगर गए हुए बेन्यहूद ने वहाँ से लौटकर पुत्र के समाचार जाने। इसके बाद किसी प्रकार बेन्झियोन को बुलाकर उसे और येमिमा को अध्ययन के लिए बर्लिन नगर भेजा। परंतु वहाँ भी बेन्झियोन ने अध्ययन की तुलना में दूसरे विषयों में ही अधिक रुचि दिखाई। पत्रकारिता के प्रति बहुत आकर्षित होकर वह वहीं किसी पत्रिका में पत्रकार हो गया।

वहीं से उसने पिता की पत्रिका के लिए अपना सर्वप्रथम हीब्रू भाषा का लेख भी भेजा।

सफल प्रयत्न-एक

''प्रिये! इस कोश का कार्य के करने या न करने से क्या? यदि इसका प्रकाशन नहीं होगा तो इसका क्या लाभ? यहाँ मुझे ऐसा कोई व्यक्ति नहीं दिखाई देता जो मेरे शब्दकोश को प्रकाशित करने के लिए तैयार हो ....।'' एक दिन निराश होकर बेन्यहूद ने हेम्डा से कहा। उसने हमेशा की तरह पति को शान्त करने का प्रयत्न किया किंतु बेन्यहूद संतुष्ट नहीं हुआ। ''नहीं, मैं लेखन से संन्यास ले लेता हूँ!'' ऐसा उसने कहा।

''प्रिये! ऐसा मत बोलो। मुझे तीन महीने का समय दो। तब तक मैं आपके शब्दकोश के लिए किसी प्रकाशक को ढूँढ ही लूँगी।'' यद्यपि हेम्डा का प्रसवकाल निकट था फिर भी उसने आत्मविश्वास से ऐसा कहा।

इसके बाद 'झाझा' नाम की उसकी पुत्री के जन्म के बाद दो माह के आराम के पश्चात् हेम्डा ने प्रकाशक ढूँढ़ने के लिए लम्बी प्रवास योजना बनाई। इजराइल देश में वैसा प्रकाशक नहीं मिलेगा ऐसा सोचते हुए उसने यूरोपीय देशों में ही जाने का निश्चय किया। घर के कार्यों से अनभिज्ञ होते हुए भी पति को उस कार्य में लगाकर, बच्चों के पालन के लिए भी उसे ही उत्तरदायी बनाकर, पत्रिका का संपादन भी उसके ऊपर डालकर किसी शुभ दिन शब्दकोश के हस्त-लिखित कागजों से भरे हुए बैग को लेकर नाव से उसने प्रस्थान किया। शरीर से दुबली-पतली और निर्बल वह तैंतीस वर्षीय युवती। उस कोमलांगी की आँखों में अखण्ड आत्मविश्वास था।

हेम्डा सबसे पहले बुडापेस्ट नगर गई। वह जानती थी कि उस समय वही प्राचीन विद्वानों का केंद्र था। वहाँ के विद्वानों की स्वीकृति यदि मिल जाए तो कोई भी प्रकाशक बिना किसी आपत्ति के शब्दकोश का प्रकाशन कर देगा। उनमें से एक प्रो.विल्हेम, जिनसे बेन्यहूद का पत्र के माध्यम से परिचय था, से मिलकर हेम्डा ने कहा-'महोदय। कृपया मेरे पति के प्राणभूत इस शब्दकोश का परिशीलन करके इसके संबंध में अभिमत बताइए।''

प्रो. विल्हेम ने कहा-"मैं बहुत व्यस्त हूँ। इसका तत्काल परिशीलन करने के लिए मेरे पास अभी समय नहीं है। एक सप्ताह के बाद आप आना। तब मैं कुछ करुँगा।" पुनः प्रार्थना करने पर भी उसने वही कहा। कोई और उपाय न देखकर हेम्डा को एक सप्ताह तक प्रतीक्षा करनी पड़ी।

परंतु एक सप्ताह के बाद जब वह प्राध्यापक मिले तब हेम्डा ने अनुभव किया कि उसकी यह प्रतीक्षा निष्फल नहीं हुई। न केवल प्रो. विल्हेम ने अपितु उनके समान दो अन्य विद्वानों ने भी तब तक शब्दकोश के विषय में अपना विचार लिख दिया था। तीनों ने एक स्वर में घोषित किया था कि "बेन्यहूद के द्वारा किया जाने वाला यह कार्य अभूतपूर्व और ऐतिहासिक है। इसके लिए सभी हीब्रू भाषा बोलने वाले उसके ऋणी होंगे।"

परम संतुष्ट होकर हेम्डा प्राध्यापकों को धन्यवाद देकर शीघ्रता से वहाँ से विदा लेकर रेल से बर्लिन पहुँची। वहाँ बहुत सी बड़ी-बड़ी प्रकाशन संस्थाओं में जाकर वहाँ के लोगों से उसने प्रार्थना की। अंत में एक प्रकाशक शब्दकोश प्रकाशित करने के लिए तो तैयार हो गया परंतु कुछ शर्तों के साथ। उसमें पहली शर्त थी कि अक्षरसंयोजन का काम किसी दूसरी जगह से करवा कर देना होगा। वह हेम्डा ने मान ली। दूसरी शर्त थी कि छपाई के लिए आवश्यक धन हेम्डा को ही इकट्ठा करके देना होगा। यह कितना कष्टप्रद था, इस बात को जानते हुए भी हेम्डा ने अपनी सहमति दे दी। अंतिम शर्त थी कि शब्दकोश के सभी भागों के निर्माण के पूर्व यदि बेन्यहूद मर जाए तो उस कार्य को भी हेम्डा को ही संपादित करके देना होगा। वह भी उसने स्वीकार कर लिया। पूरी बातचीत के बाद उस सहमति-पत्र पर हस्ताक्षर करते हुए उसके हाथ उद्वेग के कारण काँप रहे थे।

उसके बाद दो महीने तक वह बर्लिन और पेरिस में स्थित यहूदी संगठनों से संपर्क करती रही। प्रत्येक संगठन का प्रमुख कौन है यह जानकर उनसे व्यक्तिगत रूप से मिलकर आवश्यक धनराशि का आश्वासन उसने प्राप्त किया। पति को तार द्वारा जब इस विषय को उसने बताया तब बेन्यहूद विश्वास ही नहीं कर पाया। "क्या यह सपना है?" ऐसा उसने स्वयं से पूछा।

हेम्डा जब जेरुसलेम लौटी उसी सप्ताह बेन्यहूद के परिवार द्वारा एक उत्सव आयोजित किया गया। बेन्यहूद के पचासवें जन्मदिन के उपलक्ष्य में आयोजित उस उत्सव में कोश के प्रकाशन का अभी-अभी प्राप्त समाचार ही सभी की बातचीत का विषय था। मुद्रित होने वाले शब्दकोश के प्रथम भाग की एक कृत्रिम प्रतिकृति हेम्डा ने तैयार की थी। बड़े आकार की परंतु खाली पन्नों

वाली उस पुस्तक के आवरण पृष्ठ पर सुनहरे रंग के अक्षरों में छपा था–''प्राचीन हीब्रू भाषा और आधुनिक हीब्रू भाषा का समग्र शब्दकोश'' उसके नीचे लिखा था–'एलिसर बेन्यहूद।'

उसको देखकर बेन्यहूद भावुक हो गया। यद्यपि पहले भी एक भाग उसने प्रकाशित किया था परंतु यह अपूर्व और अनुनम था। इस प्रकार का सौन्दर्य उसका नहीं था। ''यदि इसी रूप में सारे भाग प्रकाशित हो जाएँ....तो....।''

इसके बाद एकाग्रचित होकर उसने शब्दकोश के कार्य को ही आगे बढ़ाया। अक्षरों का संयोजन, उसमें मुद्रण के दोषों का परिष्कार इत्यादि कार्यों में भी उसने सहायता की। कोश में प्रत्येक हीब्रू शब्द के सामने अंग्रेजी, फ्रेंच और जर्मन भाषाओं के समानार्थक शब्द लिखे थे। उससे संबंधित अन्य शब्दों को भी वहाँ संग्रहीत किया गया था। उनके प्रयोग का तरीका भी दिखाया गया था। निश्चित रूप से वह एक अद्वितीय कोश था।

उसके लगभग एक वर्ष के बाद शब्दकोश का अगला भाग प्रकाशित हुआ। तब तक बर्लिन से लौटे हुए बेन्झियोन ने वहाँ प्राप्त अनुभव के आधार पर 'पूर्ण रूप से पत्रकार बनकर ही जाऊँगा' ऐसा निश्चय करके हीब्रू भाषा में 'हाउर' नामक दैनिक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ कर दिया। उसकी छोटी बहन येमिमा भी इस समय वयस्क हो चुकी थी। उसने स्वयं ही अपने पति का चुनाव कर लिया था। जर्मन देश के अभिनेता उस युवक को बेन्यहूद ने स्पष्ट शब्दों में कहा–''यदि तुम हीब्रू भाषा में बोलते हो, यदि पत्नी और परिवार के पालन में तुम समर्थ हो और यदि तुम इजराइल देश में ही रहोगे तो तुम्हारे और येमिमा के विवाह में मेरा कोई विरोध नहीं है।'' उसने सभी बातों को स्वीकार कर लिया और येमिमा ने उससे विवाह कर लिया। बेन्झियोन ने भी स्पेन देश में जन्मी एक युवती से विवाह कर लिया।

शब्दकोश के प्रथम भाग के प्रकाशन के बाद बेन्यहूद ने निर्णय किया कि बहुत प्रयत्न किया गया तो भी एक साल में एक ही भाग का संपादन और प्रकाशन किया जा सकता है। इस बीच धन की समस्या तो थी ही। हेम्डा एक दिन उसे बर्लिन ले गई। वहाँ पर जिन लोगों ने प्रथम भाग के प्रकाशन के लिए आर्थिक सहायता दी थी उनसे पति का परिचय कराया। वे लोग बहुत प्रसन्न हुए। इसके बाद हेम्डा फिर से उसे लेखन कार्य में लगा कर स्वयं धन के संग्रह में मग्न हो गई। पति के ग्रंथ के प्रकाशन में किसी भी पत्नी ने इतना श्रम नहीं किया होगा

जितना हेम्डा ने किया। कहीं से किसी प्रकार भी धन का संग्रह करते हुए उसने प्रकाशन का कार्य सम्पन्न किया।

इसी बीच देश के राजकीय परिवेश में भी कुछ परिवर्तन आए। तुर्की देश में प्रवृत आन्दोलन के कारण वहाँ का सम्राट् द्वितीय अब्दुल हमीद पदच्युत हो गया। उसके स्थान पर आये नये शासक ने यहूदियों के ऊपर हमीद के द्वारा लगाये गए बन्धनों को हटा दिया। सभी यहूदियों को इजराइल देश जाने की अनुमति मिल गई थी। पत्रिका के प्रकाशन में भी वे स्वतन्त्र हो गए थे। विद्यालयों में हीब्रू भाषा को पढ़ाने के विषय में भी कोई आपत्ति नहीं थी। बेन्यहूद की प्रेरणा से अनेक विद्यालयों में हीब्रू माध्यम से सभी विषयों का अध्यापन शुरू हो गया।

जर्मनी देश के यहूदियों की आर्थिक सहायता से "हाइफा" नामक स्थान पर एक अभियांत्रिकी (इंजीनियरिंग) विद्यालय शुरु हुआ। वहाँ शिक्षण का माध्यम जर्मन भाषा हो ऐसा उनका अनुरोध था, और हीब्रू ही शिक्षण का माध्यम बने ऐसा बेन्यहूद का अनुरोध था। विद्यालय के व्यवस्था प्रमुख कोहेन ने उसकी बात भी नहीं सुनी। बातचीत के लिए गए हुए बेन्यहूद को उसने अंदर भी नहीं आने दिया। फिर भी रास्ते में ही उसे रोककर बेन्यहूद ने कहा- "मित्र! इसके लिए बर्लिन जाकर आपको धनदाताओं से निवेदन करना चाहिए। उनका मन बदल कर हीब्रू भाषा पढ़ाने के विषय में उनकी स्वीकृति प्राप्त करना चाहिए।" परंतु कोहेन ने स्पष्ट शब्दों में उसका खंडन कर दिया। तब रौद्र रूप धारण करते हुए बेन्यहूद चिल्लाया-"बर्लिन नगर ने मेरा संदेश आपको सुनाया है कि यदि इस विद्यालय में हीब्रू माध्यम नहीं होगा तो वहाँ खून की नदियाँ बहेंगी। बाद में जो होगा उसके लिए मैं उत्तरदायी नहीं हूँ।"

फिर भी कोहेन बर्लिन नहीं गया। उसके बाद बेन्यहूद ने विद्यालय के शिक्षकों और छात्रों का संगठन बनाया। उन सब ने मिलकर आन्दोलन शुरू किया। कक्षाओं का बहिष्कार किया। विद्यालय बंद किया। उन्होंने जर्मन भाषा में छपी हुई पाठ्यपुस्तकें जलादीं। कई महीनों तक यह भाषा विवाद चलता रहा और अंत में बेन्यहूद के विचार की ही जीत हुई।

●●●●

1914 ईस्वी में विश्व महायुद्ध शुरू हो गया। युद्ध का प्रभाव इजराइल देश में भी दिखाई दिया। उसका अन्य देशों से संपर्क टूट गया। वस्तुओं के मूल्य में भारी वृद्धि हो गई। अब तक शब्दकोश के पाँच ही भाग प्रकाशित हुए थे। उसके बाद आगे का काम करना भी सम्भव नहीं था। बेन्यहूद के गिरते हुए

स्वास्थ्य को देखते हुए हेम्डा ने सोचा कि– यहाँ काम करना बिल्कुल असम्भव है। यदि हम अमेरिका चले जाएँ तो वहाँ रहकर बेन्यहूद बिना किसी विघ्न के कोश का काम आगे बढ़ा सकता है। किंतु इस विचार को बेन्यहूद ने अस्वीकृत कर दिया। हेम्डा ने विभिन्न प्रकार के तर्कों से निवेदन करके किसी प्रकार उसकी सहमति प्राप्त की। उसके बाद जल्दी से शुरू हुई जाने की तैयारियाँ। लम्बे समय तक के लिए घर की सुरक्षा की व्यवस्था करके तीन बच्चों के साथ वे दोनों वहाँ से चल पड़े। उन दिनों परिवहन की व्यवस्था नियमित नहीं थी। कभी–कभी ही कुछ नावें चलती थीं। जाफ्फा से एक नाव का प्रस्थान निश्चित था। उस नाव से यात्रा करना है, ऐसा सोचकर वे जाफ्फा नगर गए। वहाँ जब वे नौका पत्तन पर पहुँचकर नाव में चढ़ने को हुए तभी वहाँ के अधिकारी ने उसी समय प्राप्त आज्ञापत्र दिखाया कि ''देश छोड़ने के लिए बेन्यहूद को अनुमति नहीं दी जाती है। उसे जेरुसलेम वापस भेजना है।''

कोई और उपाय न देखकर बेन्यहूद सपरिवार लौट गया। उसके बाद हेम्डा ने परिचित वरिष्ठ अधिकारियों के प्रभाव का उपयोग करके अनुमति प्राप्त करने की कोशिश की। अंत में वह इस कार्य में सफल भी हुई। परंतु अफसोस! उन दिनों में वहाँ से जाने के लिए कोई नाव ही नहीं थी।

उसके पन्द्रह दिनों के बाद जाफ्फा से कोई नाव जाएगी, ऐसा समाचार सुनने को मिला। इसलिए फिर से सभी तैयारियाँ करके उन्होंने वहां से प्रस्थान किया। नाव में चढ़ने से पहले जाफ्फा में उनका पारपत्र (पासपोर्ट) निरीक्षण करने वाले किसी वरिष्ठ तुर्की सैन्याधिकारी ने बेन्यहूद के पारपत्र (पासपोर्ट) के ऊपर अपनी भाषा में लाल अक्षरों में लिख दिया–''यह अनिष्टकारी पत्रकार है। देश छोड़ने के लिए इसे किसी प्रकार भी अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।'' इस अवसर पर भी जाने से वे लोग वंचित रह गए।

सफल प्रयत्न-दो

जाफ्फा से लौटे हुए उनको दो महीने बीत गए। कार्य के अनुकूल वातावरण नहीं था इसलिए कोश के कार्य में प्रगति ही नहीं हुई। अंत में तुर्की सेना के 'जमाल पाशा' नाम मुख्य अधिकारी के विशेष प्रभाव का प्रयोग करके हेम्डा अमेरिका जाने के लिए अनुमति प्राप्त करने में सफल हुई। परंतु उस समय भी कोई नाव नहीं थी। फिर भी वे जाफ्फा आ गए। वहाँ से अलेक्सांड्रिया जाने के लिए ग्रीक देश की एक माल ले जाने वाली नाव थी। नाव के प्रमुख ने उन्हें वहाँ तक ले जाने की स्वीकृति दी। आराम से वे अलेक्सांड्रिया पहुँच गए। वहाँ से कुछ दिनों के बाद दूसरी ग्रीक नाव से यात्रा करके वे अमेरिका पहुँच गए। बेन्यहूद के किसी रिश्तेदार ने अपने घर में उनके रहने आदि की व्यवस्था की।

बेन्यहूद के अमेरिका आने का समाचार वहाँ के यहूदियों के बीच फैल गया। इस प्रकार के बड़े आंदोलन के प्रवर्त्तक और शब्दकोश के निर्माता का स्वागत करने के लिए उन लोगों ने एक समारोह आयोजित किया। बेन्यहूद नहीं चाहता था फिर भी उन्होंने कार्यक्रम आयोजित किया और बहुत प्रचार भी किया। कार्यक्रम के दिन पूरा सभागार ऐसे आत्माभिमानियों से भरा हुआ था। हेम्डा के साथ बेन्यहूद जब वहाँ पहुँचा तब तो वहाँ इतनी भीड़ थी कि उसका अर्थात् मुख्य अतिथि का प्रवेश भी बड़ी कठिनाई से हुआ। वहाँ हीब्रू भाषा में ही दिए गए उसके भाषण ने सभी यहूदियों का मन जीत लिया। इसके बाद दूसरे यहूदी संगठनों में भी वैसे ही कार्यक्रम हुए जिससे शब्दकोश निर्माण योजना का भी पर्याप्त प्रचार हुआ। उसके बाद न्यूयार्क नगर में रहते हुए वहीं बेन्यहूद ने कोश के कार्य को आगे बढ़ाया।

●●●●

1917 ईस्वी में अमेरिका भी मित्र देशों के पक्ष से युद्ध-भूमि में उतर गया। इससे विश्व महायुद्ध का रूप ही बदल गया। अमेरिका में रहने वाले बहुत सारे यहूदियों ने भी सेना में प्रवेश लेकर युद्ध में भाग लिया। उसी वर्ष के नवम्बर महीने में ब्रिटेन देश ने स्पष्ट घोषणा की ''विश्व के विविध भागों में बिखरे हुए

यहूदी लोग अपनी मातृभूमि इजराइल जाएँ। फिलीस्तीन् ही उनकी मातृभमि है। उनके वहां जाने में हमारा भी सहयोग है।'' इस बात को सुनकर बेन्यहूद इतना प्रसन्न हुआ कि वह नाचने ही लगा क्योंकि वह जानता था कि ब्रिटिश शासन का जो भाव होगा वही उसके पक्षधर सभी देशों का भी होगा। इसलिए बेन्यहूद के द्वारा जिसके लिए आज तक प्रयत्न किया था, उस विचार को मानते हुए उन सभी देशों ने उसका पालन भी किया। इस बात को जानकर अन्य सभी नागरिकों ने मिलकर उस दिन उत्सव मनाया।

उस वर्ष के ही दिसम्बर महीने में जनरल् एड्मण्ड अलेम्बी नाम के सैन्य अधिकारी के नेतृत्व में आई ब्रिटिश सेना ने जेरुसलेम नगर में प्रवेश किया। उस सेना ने चार सौ से अधिक वर्षों से उस पवित्र नगर के शासन की रक्षा करने वाले तुर्की लोगों को वहाँ से सरलता से बाहर निकाल दिया। बन्दर की बंधी मुट्ठी के समान तुर्की अधिकारियों के चंगुल से उस पवित्र नगर ने स्वतन्त्रता प्राप्त की। उसी महीने में उस नगर के पास में स्थित स्कोप्स पर्वत पर एक महाविद्यालय के लिए शिलान्यास भी किया गया और यही महाविद्यालय आगे जाकर विश्वविद्यालय के रूप में विकसित हुआ तथा संपूर्ण मध्यप्राच्य ज्ञान के केंद्र के रूप में सुप्रसिद्ध हुआ। बेन्यहूद की दृष्टि में ये दोनों ही अत्यंत अविस्मरणीय घटनाचक्र थे।

●●●●

संसार की प्राचीन भाषा के रूप में प्रसिद्ध ग्रीक अथवा रोमन भाषा में अतिविशिष्ट पुराण साहित्य है। परंतु हीब्रू भाषा में बहुलता से उस प्रकार का साहित्य उपलब्ध नहीं है- ऐसा एक दिन बेन्यहूद ने अनुभव किया। इसलिए कोश कार्य में निमग्न उसने उस कार्य के साथ ही बीच-बीच में उस प्रकार का साहित्य भी लिखने का प्रयास किया। इस विषय को हेम्डा भी किसी प्रकार न जान सके इस प्रकार चतुराई से छिपाये रखा था। 1917 ईस्वी में जब उसने अपने द्वितीय विवाह का रजत महोत्सव (सिल्वर-जुबली) मनाया तब आए हुए अतिथियों के सामने अपने द्वारा रचित नए पुराण ग्रंथ की हस्तलिखित प्रतिकृति को प्रदर्शित करते हुए उसने कहा-''मेरी प्रिय पत्नी को इस शुभ-अवसर पर मेरे द्वारा दिया जाने वाला उपहार है यह।'' पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर उसने यह वाक्य लिखा भी था। उसने कहा-''इस पुस्तक माला में इसके अतिरिक्त अन्य भी सात पुस्तकें लिखी जाएँगी जिसमें बाइबिल के बाद के समय के 140 कथानक सम्मिलित होंगे और उस ग्रंथमाला का नाम होगा-''हीब्रू भाषा के पूर्वज।''

बाद में विचारकों ने यह स्वीकार किया कि बेन्यहूद द्वारा रचित लिखित शब्दकोश का जितना महत्त्व है उतना ही महत्त्व इस ग्रंथमाला का भी है क्योंकि इस ग्रंथमाला ने हीब्रू भाषा सम्बन्धी सभी कमियों को पूरा कर दिया था।

●●●●

यद्यपि अमेरिका में बेन्यहूद का लेखन कार्य निर्विघ्नता से चल रहा था। किंतु उसका मन वहां नहीं लगता था। कब स्वदेश जाऊँगा यही चिंता उसे लगी रहती थी। परंतु वह अच्छी तरह से जानता था कि जब तक विश्व महायुद्ध समाप्त नहीं होता तब तक उसका इजराइल देश जाना भी संभव नहीं है इसलिए उसने युद्ध समाप्ति के समाचार की प्रतीक्षा में किसी तरह दिन बिताये।

अगले वर्ष विश्व युद्ध समाप्त हुआ। यह समाचार सुनते ही उसने पत्नी से कहा-''प्रिये! इसके बाद देर नहीं करना चाहिए। अपने देश जाने की तैयारी करनी चाहिए।''

उसने भी मान लिया। परंतु सभी मित्रों ने सूचित किया कि ''कुछ दिनों तक प्रतीक्षा करो। तब तक जेरुसलेम नगर का वातावरण भी कुछ अनुकूल हो जाएगा। वहाँ जाने के लिए यातायात व्यवस्था भी बेहतर हो जाएगी।'' किंतु बेन्यहूद ने कुछ ही दिनों के बाद अपने प्रस्थान का निश्चय कर लिया। बेन्यहूद के जाने का निर्णय अमेरिका में रहने वाले यहूदियों के बीच में बड़ी चर्चा का विषय बन गया। उन सबने मिलकर एक यहूदी संस्था के संरक्षण में बेन्यहूद का विदाई समारोह आयोजित किया। कार्यक्रम के अंत में उनके द्वारा दस हजार डॉलर मूल्य का चेक भी उसे दिया गया जिससे वह आगे निर्बाध रूप से अपना लेखन कार्य आगे बढ़ा सके।

उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए बेन्यहूद ने अपने भाषण में कहा-''कुछ वर्ष पहले मेरी पत्नी ने मुझसे कहा था कि जब-जब संभव हो तब-तब थोड़ा-थोड़ा धन संग्रह करते रहो, जिससे भविष्य में कभी हम स्वयं का कोई घर बनाने में समर्थ हो सकेंगे। परंतु तब हमेशा मैंने कहा कि प्राप्त हुआ सारा धन कोश के कार्य के लिए ही उपयोग किया जाना चाहिए क्योंकि वह कार्य हमारे बंधुओं के राष्ट्र निर्माण के काम में सहयोगी होगा। राष्ट्र-निर्माण जब हो जाएगा तब मेरे देश के भाई ही मेरे लिए घर भी बनाकर देंगे? ऐसा मेरा कथन इस समय सत्य हो गया।''

बेन्यहूद का परिवार जब लंबी यात्रा समाप्त करके जेरुसलेम पहुँचा तब ब्रिटिश शासन द्वारा नियुक्त राज्यपाल सर रोनाल्ड स्टार ने हीब्रू भाषा में दो वाक्य

कहते हुए स्वयं ही बेन्यहूद का स्वागत किया। इस बात से हर्षित बेन्यहूद ने पत्नी से कहा-''प्रिये! यह था मेरा सपना! मुझे विश्वास नहीं होता कि यह सपना साकार हो गया है। तुर्की लोग यहाँ से चले गए हैं। उस स्थान पर हमारे ब्रिटिश लोग हैं। उनका प्रमुख हमारा स्वागत कर रहा है। वह भी हीब्रू भाषा में।''

परंतु एक विशेष बात पर उसने ध्यान दिया कि जेरुसलेम नगर के कोई भी निवासी उनके स्वागत के लिए नहीं आये थे। न केवल इतना अपितु उसने यह भी अनुभव किया कि उसके बाद उनमें से किसी ने उसके परिवार से मिलना भी नहीं चाहा? क्या कारण होगा इसका?

वे जब अपने पुराने घर पहुँचे तब वहाँ के दृश्य ने उन्हें विस्मित कर दिया। यद्यपि जाते समय वे घर की रक्षा के लिए कुछ व्यवस्था करके वहाँ से गए थे, परंतु इस समय तो वहाँ सब कुछ अव्यवस्थित था। घर की बहुत सारी वस्तुएँ गायब थीं। घर के बरामदे में कुछ अपरिचित लोग भी रह रहे थे। सौभाग्य से दो तालों में बंद बेन्यहूद के अध्ययन का कमरा पूरी तरह सुरक्षित था। अव्यवस्थित घर को पहले की तरह व्यवस्थित करने में उन सबको बहुत समय लगा।

अपने आगमन के विषय में लोगों की उदासीनता या मौन का कारण क्या है, यह एक दिन में ही बेन्यहूद जान गया। उनकी दृष्टि में जेरुसलेम को छोड़ अमेरिका जाकर उसने अपराध किया था। ''जिसने स्वतन्त्रता और मातृभूमि के विषय में आजीवन ऊँचे स्वर से भाषण किया था वही व्यक्ति देश के कष्ट के समय में देश से विमुख होकर प्राणों के भय से ही सुरक्षित अमेरिका देश जाकर वहाँ सुख से रहा। देश के कष्ट दूर होते ही तुरन्त फिर लौट आया। कैसा है यह देशप्रेम!''– यह था लोगों का चिंतन। इसलिए वे उसके प्रति उदासीन थे।

'' वे आपके जीवन के कार्य बिल्कुल भी नहीं समझे। इसलिए ऐसा सोचते हैं। किंतु आपको दु:ख नहीं करना चाहिए''-पति को सांत्वना देते हुए हेम्डा ने कहा।

परंतु बेन्यहूद संतुष्ट नहीं हुआ। ''प्रिय! उनका चिंतन उचित ही है। मेरे द्वारा यह दोष तो किया गया है। आपत्तिकाल में पलायन करके मैंने अनुचित आचरण किया है। किसी भी प्रकार से मेरे द्वारा इसका प्रायश्चित्त किया जाना चाहिए। ठीक है, अपने द्वारा किए जाने वाले कार्यों को और भी अधिक निष्ठा और श्रद्धा से करते हुए मैं उसके द्वारा मानसिक शांति प्राप्ति करूंगा'' उसने ऐसा कहा।

अपूर्ण निवेदन

सर हर्बर्ट सैमुएल नामक यहूदी ही ब्रिटिश राज्य के प्रतिनिधि (हाई कमिश्नर) के रूप में नियुक्त हुआ। यह सैमुएल जब बच्चा था तब लंदन में उसने किसी रिश्तेदार के घर बेन्यहूद का परिचय प्राप्त किया था। वही यहाँ राजप्रतिनिधि के रूप में आया है यह जानकर बेन्यहूद बहुत संतुष्ट हुआ। जेरुसलेम नगर में आने के बाद पहले 'सब्बत्' पर्व के अवसर पर सैमुएल ने सामान्य व्यक्ति की तरह प्रार्थना मंदिर जाकर वहाँ 'तोरा' धर्मग्रंथ पढ़कर प्रार्थना की। उस दिन बेन्यहूद भी उसी प्रार्थना मंदिर में गया था। इन दिनों उसके व्यवहार में धार्मिक कर्मकाण्डों का अनुसरण अधिक दिखाई देता था। वह नियमित रूप से परम्परागत वेश में ही मंदिर जाता था। आज मंदिर में गया हुआ बेन्यहूद वहाँ राजप्रतिनिधि को तोरा ग्रंथ में लिखी हीब्रू भाषा में निबद्ध पंक्तियों को पढ़ते हुए देखकर बहुत संतुष्ट हुआ। तत्काल बेन्यहूद के मन में उस प्रसंग का स्मरण हो आया जब उसे धर्मद्रोही समझते हुए उसी के यहूदी भाइयों ने उसके विरोध प्रदर्शनस्वरूप प्रार्थना मंदिर में काली मोमबत्तियाँ जलाई थीं। परंतु आज वही व्यक्ति उन्हीं यहूदी भाइयों के साथ राजप्रतिनिधि के सामने हीब्रू भाषा में ही प्रार्थना कर रहा था। अहो, कैसा परिवर्तन!

शीघ्र ही सैमुएल ने आदेश प्रसारित किया कि इंग्लिश, अरबी, हीब्रू–ये तीनों भाषाएँ देश की आधिकारिक व्यवहार-भाषाएँ हैं। उसने न केवल आदेश दिया अपितु कम समय में ही उसने स्वयं भी हीब्रू भाषा में सम्भाषण का अभ्यास किया। "मैं तो अंग्रेजी बोलती हूँ" ऐसा कहती हुई उसकी पत्नी ने कम समय में ही हीब्रू में सम्भाषण की कुशलता प्राप्त कर ली। सहजता से उनके बच्चों ने भी हीब्रू भाषा का अभ्यास किया। 'महाजनो येन गतः स पन्थाः' अर्थात् 'महान् लोग जिस रास्ते पर जाएँ वही उचित मार्ग है' यह वचन भी यहाँ सार्थक हो गया था। सभी लोग उनका अनुसरण करते हुए हीब्रूभाषा का अभ्यास करने लगे। इसके बाद देश में सभी जगह हीब्रू सीखने में अभिरुचि चरमोत्कर्ष पर पहुँच गई। इससे तत्काल सभी स्थानों पर हीब्रू भाषा के शिक्षकों की आवश्यकता अनुभव की गई।

औपचारिक और अनौपचारिक रूप से समाज के लिए हीब्रू सम्भाषण सिखाने वाले बहुत से लोग तैयार हो गए। बहुत सारे लोगों के नित्य व्यवहार में जब हीब्रू भाषा आई तब नए हीब्रू शब्दों की कमी अनुभव हुई। लोग सहज रूप से नए शब्दों के लिए शब्दों के स्रष्टा बेन्यहूद के पास पहुँचे। 'पत्रालय' (डाकघर) के लिए कौन से शब्द का प्रयोग करना चाहिए?'', ''कील''-इसको हीब्रू भाषा में कैसे बोलना चाहिए?'', ''खिलौना'' बेटा इनका समानार्थक शब्द क्या है?''-इस प्रकार से उन्हाँने उसे परेशान करना शुरू कर दिया। बढ़े हुए इस उत्तरदायित्व का स्मरण करते हुए बेन्यहूद कोश के कार्य में पूर्णतया व्यस्त हो गया। उनकी अपेक्षाएँ पूरी करने के लिए दिन-रात काम करते हुए उसने शब्दों का निर्माण किया।

●●●●

यद्यपि इस समय इजराइल देश में अरबियों के स्थान पर ब्रिटिश लोगों का शासन था, ब्रिटिश राज का प्रतिनिधि भी कोई यहूदी ही था, फिर भी इजराइल के यहूदियों ने अब तक भी पूरी तरह से स्वतंत्रता प्राप्त नहीं की थी। इसलिए उन्होंने धीरे-धीरे ब्रिटिश शासन के प्रति अपना असंतोष प्रकट करना शुरू कर दिया। तुर्कियों को हटाने में जिन्होंने सहायता की थी उन्होंने ही इस समय ब्रिटिश शासन के विरुद्ध आन्दोलन शुरू कर दिया। उस प्रकार के आन्दोलन करने वालों में बेन्यहूद का पुत्र बेन्झियोन भी प्रमुख था। समय बीतने के साथ-साथ आन्दोलन तेज होता गया। इजराइल के यहूदियों के साथ मिलकर अरबी लोगों ने भी ब्रिटिश शासन के विरुद्ध कार्य किए। उनके दमन के लिए ब्रिटिश शासन ने सेना का उपयोग किया। ब्रिटिश सेना में शामिल यहूदियों को पशुओं की तरह मारा। नवोदित यहूदी राष्ट्र में यहूदियों का ही खून पानी की तरह बहा। रूस देश में जन्मे जाबोटिन्सक नाम के यहूदी ने उस प्रकार के बहुत सारे असंतुष्टों का नेतृत्व करते हुए शासन के विरुद्ध आन्दोलन को तेज कर दिया। ''सशस्त्र युद्ध के लिए भी हमें तैयारी करनी चाहिए''- ऐसी भी उसने यहूदी भाइयों को प्रेरणा दी। परिणामस्वरूप ब्रिटिश शासन ने उसे अनुयायियों के साथ बंदी बना लिया। उसका सिर मुंडा कर उसे पन्द्रह वर्ष के सश्रम कारावास का दण्ड दिया गया। इससे इजराइल देश के सभी यहूदी बहुत रुष्ट हो गए। जाबोटिन्सक का कारावास भी ईजिप्ट देश हो, में ऐसा शासन ने निर्णय किया। इसके लिए उसे नाव द्वारा भेज भी दिया गया। इन सभी प्रकरणों से बेन्यहूद भी ब्रिटिश शासन से असंतुष्ट हो गया। जाबोटिन्सक को दूसरे देश में भेजने के

विरुद्ध जनमत का संग्रह करने के लिए वह तैयार हो गया। जाबोटिन्सक की पत्नी और हेम्डा का आपस में परिचय करवाकर उन दोनों को समझाया कि जनमत संग्रह के लिए उन दोनों को लंदन जाकर प्रयत्न करना चाहिए। परंतु तब तक लोगों की इच्छा के विरुद्ध आचरण न चाहने वाला शासन जाबोटिन्सक को पुनः इजराइल देश ही ले आया। उसके कुछ महीनों के बाद ही उसे जेल से मुक्त भी कर दिया गया।

उसके बाद ब्रिटिश राज के प्रतिनिधि ने आदेश दिया कि आज के बाद कोई भी यहूदी बाहरी देश से इजराइल न आए। यह तो बेन्यहूद द्वारा जीवन में प्रतिपादित मुख्य लक्ष्य के ही विरुद्ध विचार था। उसने प्रतिपादित किया था कि बाहरी देशों में रहने वाले सभी यहूदी मातृभूमि आएँ वहीं निवास करें। तुर्कियों के शासन के समय तो इस बात के लिए अवसर ही नहीं था लेकिन अब ब्रिटिश शासन के समय भी पुनः यह आज्ञा? बेन्यहूद ने इस बात का प्रबल विरोध किया। परन्तु कोई परिणाम नहीं निकला। तब बेन्यहूद ने मित्रों और सहयोगियों के साथ मिलकर सोचा कि शासन का विरोध करके अवैध रूप से ही सही परन्तु यह तो करना ही होगा। तब तक उसके और उसके मित्रों का निवेदन सुनकर छः हजार से भी अधिक यहूदी रहने के लिए इजराइल देश आने को तैयार थे। अब तो इस प्रकार की राजाज्ञा थी। इसलिए वे लोग भी विचलित हो गए। यहाँ आने के इच्छुक उन लोगों के द्वारा, पहले जहाँ वे निवास करते थे उस देश में शुरू किए गए उद्योग इत्यादि को भी उन्होंने छोड़ दिया था। इस समय उनकी स्थिति न इधर की थी न उधर की। उन्हें आर्थिक सहायता की भी आवश्यकता थी। अब क्या करना चाहिए? बेन्यहूद के मन में एक उपाय सूझा। बाहरी देशों में रहने वाले यहूदी इन दिनों इजराइल देश में विद्यालय चलाने के लिए बहुत धन प्रदान करते थे। प्रत्येक महीने उनके द्वारा बहुत अधिक मात्रा में धन उन विद्यालयों के लिए भेजा जाता था और वे विद्यालय भी बेन्यहूद की प्रेरणा से ही शुरू हुए थे, जहाँ हीब्रू भाषा ही शिक्षण का माध्यम थी। "यदि कुछ महीनों तक वे विद्यालय बन्द कर दिए जाएँ तो उस धन से इन लोगों की व्यवस्था की जा सकती है।"

परंतु बेन्यहूद ने जब यह बात लोगों से कही तब लोगों की ओर से बहुत विरोध हुआ। 'यह महान् द्रोही है। हीब्रू भाषा से यह द्रोह करता है। खुद के ही द्वारा प्रतिपादित विचारों को त्याग कर आज यह उसके विरुद्ध आचरण करता है" ऐसा कहकर उन्होंने उसकी निंदा की। जिन लोगों के लिए उसने अपने मन में सर्वाधिक स्थान दिया था, उन्हीं हीब्रू भाषा के शिक्षकों ने कठोर शब्दों में उसकी

निंदा की। उसका मुँह देखने तक की इच्छा न करने वाले वे लोग किसी रास्ते में बेन्यहूद को जाता हुआ देखकर उस मार्ग को ही छोड़ देते थे और दूसरे रास्ते से चले जाते थे। इस समय भी बेन्यहूद को वैसा ही अनुभव हुआ जब पहले उसे लक्ष्यित करके सामाजिक बहिष्कार की घोषणा की गई थी! "अफसोस! मेरे जीवन का उद्देश्य ही ये लोग नहीं समझते हैं....।" ऐसी निराशा से उस कार्य को छोड़ते हुए वह पुनः कोश के काम में निमग्न हो गया।

●●●●

परंतु परिस्थितियों ने उसे निर्लिप्त रूप से रहने की अनुमति नहीं दी। कुछ प्रमुख यहूदी नायकों ने सोचा कि शासन की अनुमति के बिना भी, आदेश का उल्लंघन करके भी यदि बाहरी देशों में रहने वाले कई हजार यहूदी अपनी मातृ-भूमि में रहने के लिए आ जाएँ तो ही इजराइल देश स्वतंत्र हो सकता है। इसके लिए उन सभी लोगों को इस प्रकार प्रेरित करना होगा कि वे सभी विरोधों का सामना करते हुए भी अपनी मातृ-भूमि में आएँ। उस प्रकार का एक प्रेरणादायक निवेदन उनके समक्ष करना चाहिए और वह निवेदन कौन लिख सकता है....?

सभी के स्मरण में एक ही नाम आया : बेन्यहूद। पहले भी उसने उस प्रकार के दो ऐतिहासिक निवेदन किए थे। वह पढ़कर कई हजार की संख्या में यहूदी मातृ-भूमि लौटे थे। इसलिए वे सब बेन्यहूद के घर ही आ गए और उससे निवेदन लिखने के लिए प्रार्थना की। परंतु बेन्यहूद इस समय उस प्रकार के लेखन की स्थिति में नहीं था। यही उसने उनसे कहा परंतु वे लोग नहीं माने। "हम अच्छी तरह जानते हैं कि आपकी कलम में ही वैसी शक्ति है। इतने वर्षों के बाद भी आपके पुराने दोनों निवेदन हमारे कानों में गूँजते हैं। इस समय भी आपकी ही यह लिखना चाहिए। अपनी पूरी प्रतिभा और तपस्या को उपयोग करके उस प्रकार का निवेदन लिखो कि उसे पढ़कर विदेश के कोने-कोने में रहने वाले यहूदी भाई सब कुछ छोड़कर मातृभूमि आ जाएँ" यह कहकर उन्होंने यह उत्तरदायित्व बेन्यहूद के सिर पर डाल ही दिया। अंत में बेन्यहूद ने उनके प्रमुख को लक्ष्य करके कहा-"मुझे लगता है कि इस समय मैं वैसा निवेदन करने में समर्थ नहीं हूँ फिर भी आप हमारे नायक हैं। आपकी अपेक्षा मेरे लिए तो आज्ञा ही है। आपकी आज्ञा को शिरोधार्य करता हूँ।" वे सब संतुष्ट होकर वहाँ से चले गए।

रात में देर तक बेन्यहूद अपने अध्ययन के कमरे में जाग रहा था। हेम्डा बाहर बैठकर प्रतीक्षा कर रही थी। रात में दो बजे कलम नीचे रखकर बाहर

आकर पत्नी का मुख देखकर निराशा से बोला-''प्रिये! लगता है कि मैं अब वह नहीं लिख सकता हूँ। अब तो बहुत थक गया हूँ। न वाक्य सूझ रहे हैं न ही शब्द। लगता है अभी आराम ही एकमात्र उपाय है।''

हेम्डा जान गई थी कि अभी तक उसने केवल पांच ही पँक्तियाँ लिखी थीं। ''ठीक है प्रिय! कल लिखना'' ऐसा कहते हुए उसने उसका बिस्तर ठीक किया। दूसरे दिन जब वह जागी तब बेन्यहूद फिर से अध्ययन के कमरे में जा चुका था। उसने फिर से पाँच पंक्तियां लिखी थीं। उसके बाद दो घंटे बीत गए फिर भी वह कुछ भी लिखने में असमर्थ रहा। पत्नी ने आराम के लिए बार-बार निवेदन किया फिर भी उसने न सुनते हुए लिखने के लिए प्रयत्न किया। परंतु असफल रहा।

उस दिन एक पर्व था। घर पर रिश्तेदार और परिचित भी आये हुए थे। दिन और रात में घर में लोगों का शोर-शराबा था। रात को उसी कार्यक्रम के बीच में ही ''क्षमा करें, मुझे कुछ अनिवार्य कार्य है''-ऐसा कहकर मित्र बन्धुओं से क्षमा मांगकर बेन्यहूद अध्ययन के कमरे में चला गया। ग्यारह बजे हेम्डा ने उसे चाय दी। मध्य रात्रि तक सभी लोग लौट गए। हेम्डा ने धीरे से पति के कमरे में प्रवेश करके देखा। इस समय भी बेन्यहूद कलम पकड़कर लिखने की टेबल के सामने उसी प्रकार बैठा हुआ था। उसके मुख पर बहुत अशान्ति थी ....। कुछ व्याकुलता थी....।

''प्रिय! आज पर्याप्त कार्य हो गया है। कल लिखना। बहुत थके हुए हैं आप प्रेम से शिशु की तरह बोलती हुई हेम्डा ने उसके हाथ से कलम लेकर पास में रख दी। उसके मुख से निकला-''प्रिये! तीसरा निवेदन मैं लिख ही नहीं पा रहा हूँ....।''

हेम्डा कुछ भी न बोलते हुए हाथ का सहारा देकर उसे बिस्तर के पास ले गई। थके हुए बालक की तरह उसे सुलाकर उसके ऊपर चादर ओढ़ाई। उसने आँखें बन्द कर ली। हेम्डा ने अध्ययन के कमरे में जाकर देखा। इस समय भी दस पंक्तियाँ ही उसने लिखी थीं।

प्राय: एक घंटे के बाद बेन्यहूद ने क्षीण स्वर में पत्नी को बुलाया। तेजी से हेम्डा उस ओर दौड़ी।

''प्रिये! कुछ परेशानी का अनुभव कर रहा हूँ। श्वास लेने में कष्ट हो रहा है।'' उसकी आवाज बहुत ही दुर्बल थी। हेम्डा ने जल्दी से बच्चों को उठाया। बेन्झियोन पास में ही रहता था। वह भी आ गया। डॉक्टर बुलाये गए।

एक के बाद दूसरा, ऐसे पांच डॉक्टर आ गए। आपातकाल में उपयोग किए जाने वाले ऑक्सीजन सिलेंडर को भी अस्पताल से लाया गया। कृत्रिम तरीके से श्वासोच्छ्वास के लिए भी प्रयास किया गया।

बेन्यहूद से पूछा गया "तुम्हारी क्या इच्छा है?"

"कुछ नहीं"-ऐसा अस्पष्टता से बोलते हुए उसने सिर हिलाया। कुछ क्षणों के बाद हेम्डा ने पूछा-"प्रिय! अब कुछ ठीक लग रहा है क्या?"

"हाँ प्रिये!"- अंतिम वाक्य बोलते हुए उसके नेत्र बन्द हो गए। डॉक्टरों में से एक ने चादर से उसका मुँह ढक दिया।

●●●●

तीस हजार लोग बेन्यहूद की शव-यात्रा में शामिल हुए और कब्रिस्तान गए। विद्यालय के बच्चों ने भी शोक-सूचक काले झंडों को लेकर शव-यात्रा में भाग लिया। बेन्यहूद पर गर्व करने वाले सुदूर स्थानों पर रहने वाले लोग भी उसकी शव-यात्रा में सम्मिलित हुए।

आलिस् पर्वत के ऊपर उस स्थान पर जहाँ बैठकर बेन्यहूद अपनी भाषा और देश के पुनर्निर्माण का सपना देखता था, अपने प्रियतम जेरुसलेम नगर को विहंगम दृष्टि से देखता था, वहीं सभी के सामने उसका शरीर दफनाया गया। यहूदियों की परम्परा के अनुसार हेम्डा अथवा परिवार के अन्य सदस्यों को वहाँ जाने की अनुमति नहीं थी। शासन ने तीन दिनों का राष्ट्रीय शोक घोषित किया।

●●●●

1922 ईस्वी में अपनी मृत्यु से पहले बेन्यहूद ने बाल्यकाल से लेकर एक अद्भुत सपना देखा था-दो हजार वर्षों से व्यवहार से दूर जा चुकी हीब्रू भाषा को लोक-व्यवहार में फिर से लाने का सपना। यह सपना पूर्ण रूप से साकार हो गया था। यद्यपि उस समय भी देश स्वतन्त्र नहीं हुआ था फिर भी हीब्रू भाषा पर्याप्त रूप से दैनिक व्यवहार में आ चुकी थी। शिक्षण, व्यापार, खेल और हर प्रकार के सामाजिक व्यवहार के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा के रूप में वह विकसित हो गई थी।

"यह जल्दी ही मरने वाला है" ऐसा डॉक्टरों के द्वारा स्पष्ट कहे जाने के बाद भी उसी बेन्यहूद ने उसके बाद जीवन में इस प्रकार की असाधारण उपलब्धि प्राप्त की। इस शब्दकोश के कार्य की समाप्ति न होने के बाद भी उसने संतोष से ही अंतिम सांस ली होगी। ऐसा भाग्य कितने लोगों को प्राप्त हो सका है....!

प्रकाशक
विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान
संस्कृति भवन, सलारपुर रोड, कुरुक्षेत्र-136118 (हरि.)
दूरभाष : 01744-291903 फैक्स : 290515
Website : www.samskritisansthan.org
E-mail : sgp@samskritisansthan.org

ISBN 978-81-929823-9-7
9 788192 982397
₹ 70.00